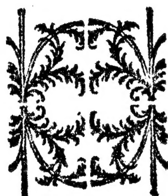
स्वाधीनताके संग्राम





लेखक—

श्रीरामाशीष सिंह

स्वाधीनताके संग्राम

[संसार भरकी क्रान्तियोंका संक्षिप्त इतिहास]

लेखक—

श्रीरामाशीष सिंह

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

२०३, हरिसन रोड,

कलकत्ता।

ब्रांच { ज्ञानवापी, काशी। दरीबा कला, दिल्ली।

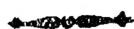
प्रथम बार। १९३३ [मूल्य १।)

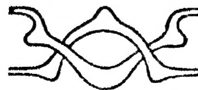
प्रकाशक—
श्रीबैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,
२०३, हरिसन रोड,
कलकत्ता।



मुद्रक—
काशीनाथ तिवारी
"वणिक् प्रेस"
१, सरकार लेन, कलकत्ता।

विषय-सूची





स्वाधीनताके संग्राम



स्वीजरलैण्ड



बहुत दिन पहले स्विस जाति अथवा स्वीजरलैण्ड जैसा कोई देश नहीं था। आलपस पहाड़के पास बहुतसे छोटे छोटे राज्य थे। उनमेंसे कोई फ्रान्सके अधीन था तो कोई आस्ट्रियाके। कोई रोम-साम्राज्यकी पराधीनताके जुएमें जुड़ा हुआ था तो कोई किसी शक्तिशाली व्यक्ति विशेषके अत्याचारकी चक्कीमें पिस रहा था। प्रत्येक राज्यकी स्वतन्त्र भाषा थी।

पर ये छोटे-छोटे राज्य बहुत दिनों तक पराधीन नहीं रहे। विदेशी शासनके अत्याचारोंसे ऊबकर सबोंने स्वाधीन होनेके लिये विद्रोहकी घोषणा की और इस तरह प्रत्येक राज्य अपने प्रयत्नसे स्वाधीन हो गया। इन्हीं छोटे-छोटे स्वाधीन राज्योंके एकत्र मिल जानेसे वर्तमान स्वीजरलैण्डकी सृष्टि हुई और यहींके स्वाधीनता प्रिय व्यक्तियोंसे मिलकर वर्तमान स्विस जाति गठित हुई है। स्वीजरलैण्डका इतिहास इन्हीं छोटे-छोटे राज्योंकी स्वाधीनताका इतिहास है। इस स्थलपर इन्हीं छोटे राज्योंके इतिहासका संक्षिप्त परिचय एक-एक करके दिया जायगा।

स्विस विद्रोहके नेता किसान आदि साधारण श्रेणीके ही आदमी थे। साधारण आदमी भी अपने बलसे अपने देशको स्वाधीन कर सकते हैं, स्विस जातिकी स्वाधीनताका इतिहास इसका सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है।

आरनोल्ड, स्टोफाचार और वाल्टर फास्ट।

सबसे पहले यूरी, सित और आल्टर वाल्डेन नामक प्रदेशोंमें विद्रोह आरम्भ हुआ। उस समय ये तीनों प्रदेश आस्ट्रियाके अधीन थे। वहाँके गवर्नर गेसलर और लैण्डनबर्गके अत्याचारसे प्रजा वर्ग पीसा जा रहा था। अन्तमें जब अत्याचार असह्य हो गया तब वहांके कुछ नवयुवकोंने विद्रोहका झण्डा खड़ा कर दिया।

वाल्डेन प्रदेशमें आरनोल्ड नामक एक तेजस्वी युवक था। एक दिन वह अपने खेतमें हल चला रहा था, इसी समय लैण्डनबर्गके आदमियोंने आकर कहा कि ऐसे सुन्दर बैलोंकी जोड़ीसे तुम हल नहीं चला सकोगे। तुम्हें इन बैलोंको हमें दे देना होगा।

आरनोल्डने कहा—मैं अपने बैलोंको तुम्हें क्यों दूंगा?

लैण्डनबर्गके आदमियोंने क्रुद्ध होकर कहा—तुम क्या चीज हो, तुम्हारा बाप देगा। यह कहकर वह बैलोंको हलसे छुड़ाने चले।

लैण्डनबर्गके अत्याचारसे बहुत दिनोंसे आरनोल्डका हृदय

जल रहा था। इस घटनासे उसके हृदयकी अग्नि और भी जोरसे धधक उठी। उसके हाथमें एक डण्डा था। उसने इतने जोरसे एक आदमीपर डंडा चलाया कि उसके एक हाथकी दो उँगलियां कट कर गिर गयीं। यह देख लैण्डनबर्गके और आदमियोंने आकर आरनोल्डको पकड़नेकी चेष्टा की, किन्तु आरनोल्ड सबको धक्का दे वहांसे तीरकी तरह भाग गया। तब उन्होंने जाकर आरनोल्डके बापको गिरफ्तार किया और बड़ी क्रूरतासे उसकी दोनों आंखें निकाल लीं। उसके बाद उसकी सारी सम्पत्ति भी छीन ली गयी। बूढ़ा बाप पथका भिखारी हो गया और वीर पुत्र स्वाधीनता संग्रामकी तैयारी करने निकला।

यूरी और सित प्रदेशमें गेसलरका शासन था। उसका अत्याचार लैण्डनबर्गसे भी बढ़कर था। सित प्रदेशमें स्टोफाचार नामक एक कृषक युवकने एक सुन्दर मकान बनवाया था। गेसलरके लिये यह असह्य था। एक किसान और वह ऐसा सुन्दर मकान बनवाये! उसने निश्चय कर लिया कि स्टोफाचारके हाथमें अधिक दिन तक उसका मकान नहीं रहने पायगा। इसके लिये गेसलर उसपर तरह-तरहके अत्याचार करने लगा। अत्याचारके मारे स्टोफाचार ऊब गया। अन्तमें वह यूरी प्रदेशके वाल्टर फास्ट नामक अपने एक साहसी मित्रसे इस विषयमें परामर्श करने गया।

परामर्श करनेके बाद तीन प्रदेशमें तीन वीर युवक संघबद्ध हो आस्ट्रियनोंके विरुद्ध खड़े हुए।

विलियम टेल

उन तीनोंके साथ एक और वीर युवक आकर सम्मिलित हो गया। उसका नाम था, विलियम टेल। वह स्टाफाचारका दामाद् था। उस देशमें विलियम टेलके समान प्रसिद्ध व्यक्ति और कोई नहीं था। जैसा वह साहसी था, वैसा ही वह बलवान भी था। केवल यही नहीं, वह अपने समयका सबसे बड़ा तीरन्दाज और नाविक था। वह बहुत दूरसे भी तीरसे लक्ष्यबेध कर सकता था। छोटीसी डेंगीमें बैठकर वह तूफानमें भी बड़ी बड़ी नदियोंको पार कर सकता था।

टेलको अपने दलमें पाकर सबका साहस बढ़ गया। तलवार उठाकर सबोंने शपथ खायी कि देशकी स्वाधीनताके लिये हमलोग अपना जीवन अर्पण कर देंगे। जबतक हमारे शरीरमें एक बूंद भी रक्त रहेगा तबतक हम स्वाधीनता संग्रामको चलाते रहेंगे। कभी भी देशके साथ विश्वासघात नहीं करेंगे।

× × × ×

उसके कई एक दिन बादकी बात है।

टेल अपने लड़केको साथ लेकर अपने ससुरके घर जा रहा था। हाथमें उसका तीर धनुष था। कुछ दूर जाकर उसने देखा कि एक बांसके लट्ठे पर एक टोपी रखी हुई है। उसीके पास एक आस्ट्रियन सैनिक खड़ा है। टेल अपने लड़केको साथ ले उसी लट्ठेके पाससे गुजर रहा था कि सैनिकने उसको आगेसे

रोककर कहा—यह सम्राटके प्रतिनिधि गेसलरकी टोपी रखी हुई है, इसे सलाम करके आगे बढ़ो।

सुनकर टेलका रक्त खौल: गया। उसने कहा—एक टोपी-को मैं क्यों सिर नवाऊं? मेरा सिर ऐसा वैसा नहीं है जो जहां-तहां नीचा होता फिरेगा।

वहीं पर गेसलर भी अन्य सैनिकोंके साथ खड़ा था। उसने कहा—हां-हां, तुम अपनेको बड़ा तीरन्दाज लगते हो न! तुम अपनी तीरन्दाजीको कुछ करामत दिखाओ, तब तुम्हारी जान बचने पायेगी। तुम अपने लड़केके सिरपर एक सेब रखो। उसके बाद दूर खड़े होकर तुम अपने तीरसे उस सेबके दो टुकड़े कर दो। क्यों; यह मंजूर है न?

टेलने कहा—नहीं, अपने लड़केकी जान खतरेमें डाल कर मैं अपना जीवन बचाना नहीं चाहता।

गेसलरने कहा—तो मरनेके लिये तैयार हो जाओ।

टेलने कहा—मरनेके लिये तो टेल हर समय तैयार रहता है।

गेसलरने कहा—पर टेल, पहले मैं तुम्हारे लड़केको मारूंगा, उसके बाद तुम्हारी बारी आयेगी।

टेल उस नरपिशाचकी नृशंसतासे सिहर उठा। उसने कहा—तब मैं तीर छोड़नेको ही राजी हूं।

बस, टेलका लड़का एक पेड़से बांध दिया गया। उसके माथेपर सेब रखा गया। टेलने दो तीखे तीर निकाल लिये

उसके बाद उसने एक तीरको सेबको लक्ष्य करके छोड़ा । क्षण भरमें ही सेब दो टुकड़े होकर जमीनपर गिर पड़ा। लड़केके शरीरमें जरा भी चोट न लगी।

यह देख कर गेसलरने कहा—अच्छा, माना तुम बड़े अच्छे तीरन्दाज हो। पर यह तो बतलाओ, तुमने दो तीर क्यों निकाले थे ?

टेलने कहा—यदि पहले तीरसे मेरा निशाना चूक जाता और वह लड़केके शरीरमें लगता तो दूसरे तीरका निशाना तुम्हें बनाता।

टेलकी गर्वपूर्ण बातसे क्रोधित हो गेसलर आग बबूला हो गया। वह टेलको कैद करके अपने जहाजपर ले चला। उस देशमें टेलको कैद करके रखना निरापद नहीं था, क्योंकि उसके सगे सम्बन्धी उसे छुड़ा लेते। इसीलिये उसने टेलको एक दूसरे द्वीपमें कैद करनेका निश्चय किया। जहाजका लंगर उठा लिया गया। जहाज जब कुछ दूर आगे बढ़ गया तब एकाएक भयानक तूफान उठा। जहाज हिलने लगा। आस्ट्रियन किसी भी तरहसे जहाजको संभाल नहीं सके। विलियम टेल प्रसिद्ध नाविक था। अन्तमें जहाजको बचानेके लिये वह छोड़ दिया गया। टेलने सोचा, इस बार यदि छूट जाऊंगा, तो देशको स्वाधीन करके छोड़ूंगा। यही सोच कर, वह जहाजको तूफानमें ही छोड़कर समुद्रके वक्षस्थलपर तैरता हुआ निकल भागा और एक पहाड़ी टीलेपर पहुंचकर वहां एक भाड़ीमें छिप गया।

इधर गवर्नर गेसलर बड़े कष्टसे जहाजको भी उसी पहाड़ी

टीलेके पास ले आया। टेलने दूरसे ही सुना, गेसलर कह रहा था, ठहरो, उस डाकूको झाड़ीसे बाहर निकालूंगा।

गेसलरकी बात अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि, टेलका छोड़ा हुआ तीर उसकी छातीमें आ लगा और सदाके लिये वह इस दुनियासे चल बसा।

गेसलर मर गया; अब बाकी रहा लैंडनवर्ग। उसको परास्त किया आरनोल्डने। नववर्षका प्रथम दिन था। लेण्डनवर्ग गिर्जाघरमें जानेके लिये तैयार हो रहे थे। बाहर निकलकर उन्होंने देखा कि दरवाजेपर बहुतसे आदमी हाथमें मक्खन, अंडा, पनीर, रोटी, मांस आदि लेकर खड़े हैं। पहरेवालेने कहा—हुजूर, ये लोग आपको नव वर्षके उपलक्षमें उपहार देने आये हैं।

लण्डनबर्गने प्रसन्न होकर कहा—बहुत अच्छा, इन्हें भीतर ले जाओ। यह कहकर वे गिर्जाघर चले गये और सब लोग उपहार लेकर किलेके अन्दर गये।

वास्तवमें वे लोग उपहार देने नहीं आये थे। वे थे आरनोल्डके आदमी। उनका उद्देश्य था किसी प्रकार किलेमें घुस जाना। किलेमें घुसतेही उन्होंने मार-काट आरम्भ कर दी। थोड़ी ही देरमें उन्होंने किलेको अपने हाथमें कर लिया। लैण्डन वर्गको बाध्य हो जान लेकर भागना पड़ा।

इसके बाद युद्ध अवश्यम्भावी था। कुछ दिनोंके बाद लैण्डनबर्ग बीस हजार सैनिक लेकर लड़ने आये। इधर टेल

और आरनोल्ड आदि वीर पुरुषोंने भी युद्धकी पूरी तैयारी कर रखी थी, पर इनके पास केवल तेरह सौ ही सैनिक थे।

लैण्डनबर्ग अपनी सेना लेकर एक तंग पहाड़ी रास्तेसे होकर आ रहे थे। एक ओर ऊंचा पहाड़ था, दूसरी ओर झील और बीचमें वह तंग रास्ता था। इसलिये लैण्डनबर्गकी सेना तितर-बितर हो गयी। अकस्मात वीर स्विसोंने आक्रमण कर दिया। आस्ट्रियनोंको बड़ी गहरी हार खानी पड़ी। यहींसे स्वीजरलैण्डकी स्वाधीनताका आरम्भ होता है। इस युद्धके बाद यूरी, स्क्वीज और वाल्डेन—तीनों प्रदेशोंके एकत्र मिलनेसे स्विस राष्ट्रकी स्थापना हुई।

इसके बाद बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी। आस पास जो छोटे-छोटे प्रदेश विदेशियोंके शासनाधीन थे उन सबोंने भी बारी बारीसे स्वाधीनताके संग्राम छेड़ दिया। स्वधीनता प्राप्त करनेके बाद वे भी स्विस राष्ट्रमें सम्मिलित हो गये। इस प्रकार स्विस राष्ट्रसंघमें २५ प्रदेश आकर शामिल हो गये। इसके लिये बड़ी लड़ाइयां लड़नी पड़ी थीं।

बर्न-रुडल्फ

वर्न प्रदेशको जिसने स्वाधीन किया उसका नाम था, रुडल्फ। उस समय वर्न फ्रांसके अधीन था। रुडल्फने अपने देशको फ्रांस-की पराधीनतासे मुक्त करनेका निश्चय किया। उसकी चेष्टासे बर्न-निवासियोंने एक स्वरसे स्वाधीनताकी घोषणा की।

फ्रांसीसियोंने बर्न-निवासियोंका दमन करना शुरू किया।

आस्ट्रिया और जर्मनीके अनेक राजाओंने भी इस विद्रोहका दमन करनेके लिये फ्रांसका साथ दिया। रुडलफने सोचा कि शत्रुओंके आक्रमण करनेके पहले ही उनका विनाश करना चाहिये। इस-लिये उसने अपने सैनिकोंका एक दल लेकर शत्रुओंपर आक्रमण कर दिया। दुर्भाग्यवश इस बार उसकी जीत नहीं हुई। फ्रांसी-सियोंने बर्नको रक्तमय कर दिया। छःसौ स्वाधीनता प्रेमी वीर बर्न-निवासी कैद कर लिये गये।

किन्तु इसपर भी रुडलफ निरुत्साह नहीं हुआ। उसने स्विस जाति संघकी सहायतासे बहुतसे सैनिकोंको एकत्र किया। इस बार लपेनमें युद्ध हुआ। थोड़ेसे आदमियोंको लेकर रुडलफने शत्रुओंकी विशाल सेनाको पराजित कर दिया। सब कैदी मुक्त कर दिये गये।

पराजित होनेपर शत्रुओंका क्रोध और भी बढ़ गया। समय-समयपर वे बर्नपर फिर अत्याचार करने लगे। तब वीर रुडलफने उल्टा शत्रुओंपर ही आक्रमण कर दिया और अपनी वीरतासे उसने उन्हें काबूमें कर लिया।

जूरीच—ब्रन

जूरीच प्रदेशपर कई व्यक्तियोंका शासन था। ये शासनकर्ता सबके सब विलासी, अत्याचारी और स्वार्थपरायण थे। यहांतक कि सरकारी आय-व्ययका हिसाब भी वे प्रजाको नहीं बत-लाते थे।

तब ब्रन नामक एक साहसी वीरने प्रजा वर्गकी ओरसे उन स्वे-

च्छाचारी शासनकर्ताओंके विरुद्ध विद्रोहकी घोषणा की। शासनकर्ता भागकर अपने-अपने देश चले गये। उसके बाद आस्ट्रियन और फ्रांसीसियोंके साथ मिलकर वे फिर जूरीचपर आक्रमण करने लगे। व्रन उनका जवाब देनेके लिये पूरी तरहसे तैयार था। उसने शत्रुओंके मनोरथको हर बार व्यर्थ कर दिया। स्वाधीनता प्राप्त करनेके बाद व्रनने जूरीचको स्विस जाति संघमें मिला दिया।

सेम्पाककी लड़ाई—वीर विंकेलरिड

उस समय फसल काटनेके दिन थे। झुण्डके झुण्ड किसान खेत काट रहे थे। इसी समय हजारों आस्ट्रियन आकर किसानोंपर टूट पड़े। उनके हाथमें लम्बे-लम्बे बर्छे थे। किसान निहत्थे थे। फलतः सैकड़ों किसान मारे गये। समाचार पाकर गांवके और लोग हथियार ले-लेकर दौड़े आये।

उनका अगुआ था वीर विंकेलरिड। अपने देशको वह अपनी जानसे भी बढ़कर मानता था। उसने आकर देखा कि हजारों सैनिक हाथोंमें बरछा लेकर इस तरह खड़े हैं कि उनके साथ थोड़ेसे ग्रामवासियोंका पार पाना बिल्कुल असम्भव है। उसने सोचा, अगर किसी प्रकार शत्रुओंके व्यूहमें प्रवेश किया जा सके तो सहजमें ही वे तितर-बितर हो सकते हैं और मुट्ठी भर किसान उन असंख्य सैनिकोंको परास्त कर सकते हैं।

यह सोचकर उसने निश्चय किया कि अपनी जान देकर भी देशको स्वाधीन करूंगा। वह बड़े साहससे आगे बढ़कर शत्रुओंके

सामने पहुंचा। सैकड़ों सैनिक बर्छा लेकर उसपर टूट पड़े; पर वह जरा भी विचलित नहीं हुआ। वह और भी आगे बढ़ता ही गया। शत्रुओंके बर्छोंसे उसका शरीर जर्जरित हो गया। इतनेमें ही ग्रामवासी भी पीछेसे मौका पाकर शत्रुओंकी सेनामें घुस पड़े। उन्होंने बड़ी वीरता और पराक्रम दिखलाकर शत्रुओंको परास्त कर दिया। यह लड़ाई सेम्पाक नामक झीलके किनारे हुई थी। वीर विंकेलरिडके रक्तसे सेम्पाकका किनारा पवित्र हो गया।

निफेलकी लड़ाई—वीर मैटिस आमबुल

सेम्पाककी लड़ाईमें हारकर आस्ट्रियन कुछ दिनतक चुप रहे। उसके बाद फिर उन्होंने निफेलमें अत्याचार करना शुरू कर दिया। इस बार वीर मैटिस आमबुलने हाथमें स्वाधीनताका झंडा ले उनका मुकाबला किया।

उस समय जाड़े का दिन था। इसके सिवा पहाड़ी प्रदेश था। रास्तोंपर बर्फ जम गयी थी। इसलिये निफेल निवासियोंको बाहरसे सहायता पाना असम्भव था। क्योंकि बर्फको पारकर कोई उनकी सहायता करने नहीं आ सकता था। वीर आमबुलने कहा भाइयो, निराश मत होओ। जिस तरह होगा, हम अवश्य स्वाधीन होंगे। इस बर्फीले पहाड़में जाकर हम अपनी रक्षा करेंगे पर शत्रुओंके कब्जेमें नहीं आयंगे। ठीक यही हुआ। झुंडके झुंड स्त्री-पुरुष, आबाल-वृद्ध और युवा ठंड और बर्फकी कुछ परवा न कर पहाड़में जाकर छिप गये और उनकी रक्षा करने लगा वीर आमबुल।

हमारे देशके महाराणा प्रतापकी तरह बुल पहाड़की गुफाओंमें छिप-छिपकर आस्ट्रियनोंके साथ लड़ने लगा। उसके हथियार थे पहाड़के टुकड़े। पत्थरके टुकड़ोंकी वर्षासे शत्रुओंकी सेना तितर-बितर हो जाती। उसके बाद बुल उनपर बाघकी तरह टूट पड़ता और उन्हें छिन्न-भिन्न कर देता। शत्रु हार मानकर भाग जाते। आस्ट्रियन सैनिकोंकी संख्या फिर बढ़ जाती। फिर उन्हें बुलसे पराजित होना पड़ता। इस प्रकार बुल और आस्ट्रियनोंके बीच ग्यारह बार लड़ाई हुई। प्रत्येक बारके युद्धमें वीर केशरी मैटिस बुलकी जीत हुई। देश स्वाधीन हो गया।

एपेनजेलकी लड़ाई

एपेन जेलका कर्ता-धर्ता एबट नामक एक पुरोहित था। सेण्ट गेल नामक स्थानमें वह रहता था। उसके कर्मचारी एपेनजेलमें शासन करते थे। उनके अत्याचारकी कोई सीमा नहीं थी। लोग कबतक चुपचाप अत्याचारको सह सकते थे। अन्तमें उन्होंने विद्रोहकी घोषणा कर दी।

एबट अपनी सेनाके साथ विद्रोहका दमन करने आया। एपेनजेलके निवासी आसपासके पहाड़ोंमें छिप गये। एबटकी सेनाके एपेनजेलमें घुसते ही उन्होंने चारों ओरसे उनपर आक्रमण कर दिया। एबटकी सेना हारकर भाग गयी।

इसके बाद फिर लड़ाई हुई। विशाल आस्ट्रियन सेना क्षुद्र एपेनजेलको ध्वंस करने आयी। एपेनजेलके निवासी भी अपनी जान हथेलीपर रखकर स्वाधीनता संग्रामकी तैयारी करने लगे।

देशके सभी युवक अपना-अपना काम-धाम छोड़ हाथमें हथियार लेकर रणक्षेत्रमें आ डटे। स्त्रियां भी घरमें नहीं रहीं। वे भी पुरुषोंका छद्म वेश धारण कर अपने पति, पुत्र और भाइयोंके साथ स्वाधीनताकी लड़ाई लड़नेके लिये मैदानमें आ खड़ी हुईं।

उस दिनकी भीषण लड़ाईमें आस्ट्रियनोंके रक्तसे पहाड़ी भूमि लाल हो गयी। एपेनजेलकेू निवासियोंने स्वाधीनता संग्राममें विजय प्राप्त कर इतिहासमें अपना नाम अमर कर दिया।

वीर चैलदार

स्कहम और रिनोवल—यह दोनों पहाड़ी प्रदेश भी आस्ट्रियनोंके अत्याचारसे पिसे जा रहे थे। जब अत्याचार असह्य हो गया तब वहांका वीर चैलदार अपने देशवासियोंको स्वाधीन होनेके लिये उत्तेजित करने लगा। परिणाम यह हुआ कि वह वहांके गवर्नरकी आंखोंमें बुरी तरह खटकने लगा। उस समय चैलदारके खेत पक गये थे। गवर्नरने अपने घोड़ोंको चैलदारके खेतमें चरनेके लिये छोड़ दिया। चैलदारसे यह अत्याचार नहीं सहा गया। उसने गवर्नरके घोड़ोंको मार भगाया और अपने खेतोंकी रक्षा की।

उसके बाद गवर्नरके सिपाहियोंने आकर चैलदारको गिरफ्तार कर लिया। उसके हाथ-पांव जंजीरसे बांध दिये गये और वह जमीनके नीचे कैदखानेमें कैद कर लिया गया।

बहुत दिनोंके बाद चैलदारके भाई बन्धुओंने बहुत रुपया जुर्माना देकर उसे जेलसे छुड़ा लिया। चैलदार अपने घर आया।

पर तब भी गवर्नरका क्रोध गया नहीं था। एक दिन चैलदारके घर आकर उन्होंने देखा कि वह खाने बैठा है। गवर्नरने उसकी थालीमें थूककर चैलदारको हुकुम दिया कि तुम्हें इसे खाना होगा। क्रोधके मारे चैलदार आग हो गया। उसने गवर्नरको गर्दन पकड़कर कहा कि तुम्हें ही इसे खाना होगा। यह कहकर उसने बलपूर्वक गवर्नरका मुंह थालीमें डाल दिया। खाना बड़ा गर्म था। गवर्नरका मुंह जल गया। थोड़ी ही देर बाद गवर्नर मारा गया। यही विद्रोहका आरम्भ है। अन्तमें देश आस्ट्रियनोंकी पराधीनतासे मुक्त हो गया।

इङ्गलैंड-वीर कैमोगेस्क

आसपासके सभी देश स्वाधीन हो गये। केवल इङ्गलैंड दासताकी बेड़ीमें जकड़ा हुआ था। यह चिन्ता वहाँके देशप्रेमी कैमोगेस्कको रात दिन जला रही थी। वे देशमें घूम घूमकर स्वाधीनताका सन्देश सुनाने लगे। विदेशी शासन कर्त्ताने कैमोगेस्कको दबानेकी अनेक चेष्टा की। पर जब वह किसी तरह भी सफल नहीं हो सके तब उन्होंने एक जघन्य पथका अवलम्बन किया। कैमोगेस्ककी कन्या थेरेसा परम सुन्दरी थी। गवर्नरने कैमोगेस्कको थेरेसाको उनके यहां भेज देनेके लिये कहा।

कैमोगेस्कने गवर्नरको कहला भेजा कि कल मैं थेरेसाको लेकर स्वयं ही आपके पास आऊंगा। गवर्नर बड़े प्रसन्न हुए।

दूसरे दिन पिता कन्याको साथ लेकर गवर्नरके सामने हाजिर

हुए। गवर्नर थेरेसाको पकड़कर उसका चुम्बन लेने ही जा रहे थे कि कैमोगेस्कने उनकी छातीमें अपना छूरा घुसेड़ दिया। कैमोगेस्कके आदमी युद्ध करनेके लिये बिलकुल तैयार थे। इशारा पाते ही उन्होंने आक्रमण कर दिया। युद्ध हुआ। युद्धमें कैमोगेस्क विजयी हुए।

टाइरल—एण्ड्रियास हूफर

टाइरल आस्ट्रियाका ही प्रदेश था। दो सौ साल पहलेकी बात है—फ्रान्सके सम्राट नेपोलियनके हुक्मसे टाइरल जर्मनीके अधीनमें चला गया। इससे टाइरल निवासियोंको बड़ा दुःख पहुंचा। उन्होंने किसीके अधीन रहनेसे मर जाना ही अच्छा समझा। उन्होंने स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये षडयन्त्र रचा।

१८०६ ई० में टाइरल निवासियोंने खुल्लमखुल्ला युद्धकी घोषणा कर दी। उनके नेता हुए वीर शिरोमणि हूफर। एनड्रियास हूफर न तो उच्च वंशीय थे और न धनी ही। वे एक साधारण सरायके मालिक थे। पर उनका तेज, उनकी वीरता, उनका रणनैपुण्य असाधारण था। साधु, सच्चरित्र, देशभक्त, वीर हूफर इस युद्धको स्वाधीनतका युद्ध—धर्म युद्ध समझ कर जी जानसे लग गये। देशभरमें नवजीवनका संचार हो गया। चारों ओरसे झुंडके झुंड लोग हूफरकी सहायता करनेके लिये आने लगे। सारी जर्मन सेना पराजित होकर उनके कब्जेमें आ गयी। टाइरल निवासी विजयके आनन्दसे नाचने लगे।

फिर एक युद्धके बाद सन्धि हुई। सन्धिमें आस्ट्रियाके राजा

टाइरलको जर्मनीको दे देनेके लिये राजी हो गये। केवल इतना ही नहीं, अबतक तो वे टाइरल वासियोंको युद्धके लिये उत्साहित करते आ रहे थे, पर अकस्मात उन्होंने एण्डियास हूफर आदि प्रमुख विद्रोहियोंको आत्मसमर्पण करनेके लिये हुक्म दिया। बहुतोंने स्वेच्छासे आत्मसमर्पण कर क्षमा मांग ली।

पर हूफर उस श्रेणीके आदमी नहीं थे। पराधीनताके विरुद्ध विद्रोह करना ही उनका धर्म था। उन्होंने तो कोई अपराध नहीं किया था कि शत्रुके सामने घुटने टेककर क्षमा मांगते।

वे गांवको छोड़कर पहाड़में जा छिपे और वहींसे शत्रुओंके विरुद्ध युद्ध करने लगे। लाख चेष्टा करनेपर भी जर्मन उनका पता नहीं लगा सके। अन्तमें एक विश्वासघाती टाइरलवासीने घूस खाकर हूफरका पता बतला दिया। जर्मन सैनिक जाकर उन्हें पकड़ लाये और उनपर अमानुषिक अत्याचार करने लगे। किन्तु हूफरके मुखमण्डलपर विषादका चिह्न नहीं दिखलाई दिया। मान्टूयाकी फौजी अदालतमें उनका विचार हुआ। उसके बाद यह स्वदेशभक्त गोलीसे मार दिया गया। गोली मारनेके पहले सैनिक हूफरकी आंखोंपर पट्टी बांधने गये थे। पर उस वीरने कहा—मेरी आंखोंपर पट्टी मत बांधो। मैं अपनी खुली आंखोंसे छाती खोलकर मरूंगा। इसी प्रकार वे मरे भी। मृत्युको उन्होंने हंसकर गले लगा लिया। पर वे मरे नहीं, संसारको स्वाधीनताके इतिहासमें वे अपना नाम स्वर्णाक्षरोंमें लिख गये।

इटली



रोम साम्राज्यके विनाश होनेपर इटलीकी दुरवस्था आरम्भ हुई। एकके बाद दूसरे बाहरी लोग इटलीको लूटने पाटने लगे। क्षण-क्षणमें राज्य-परिवर्तन होता था। इससे प्रजा वर्गको अत्यन्त कष्ट पहुंच रहा था। अन्तमें राजाओंने इटलीको छः भागोंमें विभक्त कर लिया। अतः वहां संघबद्ध राष्ट्रकी सृष्टि नहीं हुई। प्रजामें एकता नहीं थी, इसलिये उन्हें राजाओंके अत्याचार चुपचाप सह लेने पड़ते थे। उस समय इटलीमें स्वाधीनता नामक वस्तुका कोई सम्मान नहीं था।

इसी प्रकार प्रायः ८०० सौ वर्ष बीत गये।

स्वदेशप्रेमी कोलदिरियेन्जी

चौदहवीं शताब्दिके आरम्भमें स्वदेशप्रेमी कोलदरियेन्जीका जन्म हुआ। इटलीको विभक्त और विच्छिन्न दशा देखकर उन्हें बड़ा दुःख होता था। उन्होंने अपने देशके उद्धारके लिये अपनेको उत्सर्ग कर देनेका निश्चय किया। देशकी सोती हुई जन-शक्तिको जगाकर उन्होंने कहा— भाइयो! देशके राजा आपसमें ही लड़ झगड़कर देशको चौपट कर रहे हैं। क्या हम चुपचाप उनके अत्याचारको योंही सहते रहेंगे? नहीं भाइयो, एक स्वरसे तुम पुकार कर कह दो—हम राजाओंके शासनमें नहीं रहना चाहते, हम लोग स्वयं ही अपने देशका शासन करेंगे। राजतन्त्रके स्थानमें प्रजातन्त्र स्थापित करेंगे।

कोलदिरियेञ्जीके मन्त्रसे दीक्षित हो झुण्ड-के-झुण्ड लोग उनके अनुयायी हो गये। राजाने उनको दबानेके लिये उनके विरुद्ध जनताको भड़का दिया। फल यह हुआ कि मूर्ख इटालियनोंने अपने देशके परम हितैषी कोलदिरियेञ्जीको नाना प्रकारसे लाञ्छित और अपमानित किया और अन्तमें उनकी हत्या भी कर डाली।

पर यथासमय इटली निवासियोंको अपनी भूल मालूम हुई। उन्हें इसके लिए बड़ा पश्चात्ताप हुआ। कोलदिरियेञ्जी महान पुरुष एवं उत्कट देशप्रेमी थे। देशवासियोंने उनकी स्मृतिरक्षाके लिये उनकी संगमर्मरकी मूर्ति स्थापित की।

सभोनारोला

पन्द्रहवीं शताब्दिके अन्तिम भागमें फ्लोरेन्समें सभोनारोलाका आविर्भाव हुआ। ये थे एक धर्मोपदेष्टा, पर देशकी दुर्दशा देखकर उन्होंने राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेश किया। एक दिन कोलदिरियेञ्जीने जो दिव्य आदेश दिया था, उन्होंने भी उसी प्रजातन्त्रको स्थापित करनेके आन्दोलनका देश भरमें प्रचार किया। उनका प्रचार सार्थक हुआ। फ्लोरेन्समें राजशक्ति लोप हो गयी और उसके स्थानमें प्रजातन्त्रकी स्थापना हुई।

उसके बाद एक विशेष राजनीतिक बातको लेकर पोप और सभोनारोलामें विवाद चलने लगा। अन्तमें पोपके कुचक्रसे सभोनारोला जलती आगमें जीते ही जला दिये गये।

जाग्रत इटली और मैटसिनी

उसके बाद धीरे-धीरे कई वर्ष बीत गये। देशमें कितने परिवर्तन हुए। दुर्भाग्यवश इटली, आष्ट्रिया और फ्रान्सकी चक्कीमें पीसा जाने लगा। उस समय इटली इतना दुर्बल था कि उसके स्वाधीन होनेकी कोई आशा ही नहीं थी।

इसी समय फ्रान्समें राष्ट्र विप्लव आरम्भ हुआ। उस समय यूरोपमें ऐसा कोई देश नहीं था, जहां फ्रान्सको राज्यक्रान्तिकी चिनगारी उड़ कर न गयी हो। फ्रान्सकी राज्यक्रान्तिकी लपटने इटलीके नैराश्य अन्धकारमें एक नूतन प्रकाश फैला दिया। इटलीके नवजवान स्वाधीन होनेके लिये मतवाले हो गये। उन्होंने देशको विदेशियोंके चंगुलसे निकाल लेनेका निश्चय किया, पर उनके पास ऐसा कोई साधन नहीं था जिससे शीघ्र ही यह गुरुतर कार्य आरम्भ कर दिया जाता। इसलिये उन्होंने कार्बोनारी नामक एक गुप्त समितिकी स्थापना की। उसके बाद विद्रोहकी तैयारी होने लगी।

कार्बोनारी समितिके स्थापित हो जानेके कुछ दिनों बाद उसमें जोसेफ मैटसिनी नामक एक छात्र सम्मिलित हुआ। मैटसिनी जैसा मेधावी था, वैसा ही वह स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये उत्साही भी था। कार्बोनारी समितिमें अनेक बुराइयां थीं। मैटसिनी आकर उन बुराइयोंको दूर करने लगा। अन्तमें सन् १८२० ई०में विदेशी राजशक्तिके विरुद्ध खुल्लम-

खुल्ला विद्रोहकी घोषणा की गयी, पर कार्बोनारी समितिकी त्रुटियां दूर नहीं हुई थीं, इसलिये नवजवानोंका यह विद्रोह सफल नहीं हुआ।

किन्तु उत्साही और उद्योगी मैटसिनी इस असफलतासे निराश नहीं हुए। उन्होंने देशकी अवस्थाको अच्छी तरह देख-भाल कर नये तरीकेसे उसे सुधारनेका संकल्प किया। वे देशमें स्वाधीनताके उच्च आदर्शको इस प्रभावशाली और ओज-पूर्ण भाषामें प्रचारित करने लगे कि देशके नवयुवकोंमें एक नवीन शक्ति और स्फूर्त्ति जाग उठी। मैटसिनीने 'नूतन इटली' नामक एक समितिकी स्थापना की।

इस नूतन इटली समितिके स्थापित होनेके साथ-ही-साथ नूतन इटलीका भी जन्म हुआ। इस समितिमें जो भर्ती होते थे, उन्हें कई बातोंकी शपथ लेनी पड़ती थी, जिससे सदस्योंके मन और प्राण स्वाधीनताके उच्च भावोंसे स्पन्दित हो उठते थे।

कुछ दिनोंके बाद फिर विद्रोह आरम्भ हुआ, पर कुछ देश-द्रोहियोंके विश्वासघातके कारण इस बार भी सब परिश्रम व्यर्थ हो गया। मैटसिनीको देश छोड़कर भाग जाना पड़ा, पर विदेश जाकर भी वह फिर विद्रोह आरम्भ करनेकी धुनमें थे।

गैरिबाल्डी

जिस प्रकार नूतन इटलीके मंत्रदाता ऋषि मैटसिनी थे। उसी प्रकार नूतन इटलीके स्वाधीनतायज्ञके प्रधान होता थे गैरिबाल्डी।

मैटसिनीके मंत्रसे गेरिबाल्डीमें एक अपूर्व शक्तिका संचार हुआ। मैटसिनीने जिस कल्पनाको आदर्श रूपमें अङ्कित किया था, गैरिबाल्डीने उसे अस्त्रकी सहायतासे वास्तविक कार्यरूपमें परिणत कर दिया। मैटसिनी इटलीके मंत्रगुरु थे और गैरिबाल्डी थे इटलीके रणगुरु। इन्हीं दोनों वीरोंकी चेष्टासे इटलीके भाग्यका सितारा चमक उठा। वहांके प्रत्येक विभागने विदेशी शासनको अस्वीकार कर प्रजातन्त्रकी घोषणा कर दी। फिर तो आस्ट्रियनोंके साथ बड़ा घमासान युद्ध हुआ।

गेरिबाल्डी जी-जानसे इस युद्धमें कूद पड़े, पर दुर्भाग्यसे इस बार भी इटली स्वाधीन नहीं हो सका।

विक्टर इमान्युअल और कावूर

इटलीके राजा विक्टर इमान्युअल प्रजातन्त्रके पक्षपाती थे। उन्होंने भी मैटसिनी और गेरिबाल्डीका साथ दिया। वे गैरिबाल्डीकी असाधारण वीरताकी बात जानते थे। वह इसी सुयोगकी प्रतीक्षामें थे कि गेरिबाल्डीको स्वाधीनता संग्रामका नायक बना कर विदेशियोंको परास्त करेंगे। अन्तमें वह सुयोग मिल भी गया।

इमान्युअलके मन्त्रीका नाम था कावूर। वह बड़ा चतुर और चाणक्यकी भांति राजनीतिकुशल था। ऐतिहासिकोंका कहना है कि कावूरकी 'ही मन्त्रणासे इटलीकी स्वाधीनताका पथ इतना सुगम हो गया था।

काबूरने राजाको सलाह दी कि आप गैरिबाल्डीको सेनापति बनाइये। गैरिबाल्डी सेनापति बना दिये गये।

लोगोंने जब सुना कि गैरिबाल्डी सेनापति बना दिये गये तो उनमें आशा और उत्साह भर गया। लड़के, बूढ़े, छात्र, शिल्पी, किसान, मजूर—सभी गैरिबाल्डीकी सेनामें भरती हो गये। उसके बाद युद्धकी तैयारी होने लगी।

तैयारी हो जानेपर अन्तमें आस्ट्रियनोंके विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी गयी। जिस प्रकार आंधीके सामने पड़नेसे छोटे-छोटे तिनके उड़ जाते हैं, उसी प्रकार गैरिबाल्डीकी शक्तिशाली सेनाके सामने आस्ट्रियन ठहर नहीं सके। गैरिबाल्डीने कई लड़ाइयोंमें आस्ट्रियनोंको हराकर इटलीको स्वाधीन कर दिया।

आधुनिक इटली और मुसोलिनी

आज कल इटलीमें एक नये आंदोलनका जोर है। उसका नाम है "फैसिज्म"। "फैसिज्म" प्रजातन्त्रको नहीं मानता। बहुत दिनोंसे इटलीमें कई मतवादोंका प्रचार चला आ रहा था। इसलिये वहांके लोग कई दलोंमें विभक्त हो गये थे और उनकी शक्ति भी क्षीण होती चली जा रही थी। इसी समय वेनिटो मुसोलिनीका आविर्भाव हुआ। मुसोलिनी बड़े शक्तिशाली पुरुष हैं। आरम्भमें वे एक मामूली शिक्षक थे। उन्हें कई तरहके कष्ट भी सहने पड़े थे। उनके राजनीतिक विचारोंके कारण ही उन्हें देश निर्वासनकी सजा हुई थी, पर इस पुरुष सिंहने वहां

भी अपने लिये रास्ता तैयार कर लिया । उनकी आन्तरिक इच्छा थी, विच्छिन्न इटलीको एक कर देना। अन्तमें राष्ट्र-विप्लवके चक्रमें पड़कर इटलीका भाग्य मुसोलिनीके हाथमें आया। जब शासनकी बागडोर उनके हाथमें आयी, तब उन्होंने निश्चय किया कि बहुत आदमियोंकी राय न लेकर मैं स्वयं अपने मतसे कार्य करूंगा। इसी मतवादका नाम है 'फैसिज्म'। इस मतवादके साथ मुसोलिनी इस कड़ाईसे इटलीका शासन कर रहे हैं कि प्रजातन्त्रका पक्षपाती कोई दल उनके सामने सिर नहीं उठा सकता ।

मुसोलिनीके इस स्वेच्छाचारतन्त्रसे देशकी चाहे जितनी भी उन्नति हो, पर यह बहुत दिन तक ठहर नहीं सकता । प्रजा-तन्त्रके पुनः जाग्रत होते ही मुसोलिनीके फैसिज्मका लोप हो जायगा।



यूगोस्लाविया



सर्विया, मण्टिनिग्रो, क्रोट और स्लाव—इन चार छोटे-छोटे राज्योंने एकत्र मिलकर जिस स्वाधीन राष्ट्रकी स्थापना की, उसीका नाम है यूगोस्लाविया। क्रोट और स्लावका इतिहास विशेष महत्वपूर्ण नहीं है, पर सर्विया और मण्टिनिग्रोका इतिहास गौरवमय है।

सर्विया—कारा जार्ज

सन् १३८९ ई०में कसोवाकी लड़ाईमें सर्विया निवासी तुर्कों-से हार गये। उसी समयसे सन् १८७८ तक सर्विया तुर्कोंके अधीन था। पर कोई देश सर्वदा पराधीन नहीं रह सकता, सर्विया भी तुर्कोंके पराधीनता-जालसे मुक्त हुआ। जिन्होंने सर्वियाको स्वाधीनताके अग्निमन्त्रकी दीक्षा दी, उनका नाम था कारा जार्ज।

कारा जार्ज स्वाधीनताके अनन्य उपासक थे। वे हंसते-हंसते अपनी जान दे सकते थे, पर किसीकी अधीनतामें रहना उन्हें मंजूर नहीं था। वह अपने वाल्यकालसे ही देखते आ रहे थे कि उनकी जन्मभूमि सर्वियाके सर्वेसर्वा तुर्की हैं। उनकी प्रवल आकांक्षा थी कि देशका उद्धार करना चाहिये। वड़े होनेपर इस आकांक्षाकी अग्नि उनके हृदयमें धधक धधक कर जलने लगी।

देशमें स्वाधीनताके इच्छुक नर-नारियोंकी कमी नहीं थी।

उन सबोंने कारा जार्जका साथ दिया। तुर्कोंके विरुद्ध विद्रोहका प्रचार होने लगा। विद्रोहियोंके नेता हुए कारा जार्ज।

कारा जार्जके समान रण-कुशल, शक्तिशाली, एवं स्वदेश-सेवक बहुत कम देखनेमें आते हैं। कारा जार्जके नेतृत्वमें विद्रोही सर्वियन तुर्कियोंको नेस्तनाबूद करने लगे। जितनी भी छोटी-छोटी लड़ाइयां हुई, उन सबमें विद्रोहियोंकी ही विजय हुई। अन्तमें तुर्कियोंके साथ एक बड़ी लड़ाई हुई। उसमें भी कारा जार्जके ही दलकी विजय हुई। तब तुर्कियोंने सर्वियनोंको शान्त करनेके लिये कहा—हम तुम्हें स्वायत्त-शासन देते हैं और कारा जार्जको सर्वियाका गवर्नर बना देते हैं।

पर कारा जार्ज प्रलोभनमें भूल जानेवाले व्यक्ति नहीं थे। उन्होंने बड़े गर्वसे उत्तर दिया—हमें स्वायत्त-शासन नहीं चाहिये, (स्वायत्त-शासनका यह अर्थ था कि वास्तविक शासन तो तुर्कियों-के हाथमें रहेगा और सर्विया निवासी उनके अधीन रहकर राज-कार्य चलायेंगे) हम पूर्ण स्वाधीनता चाहते हैं। हमारे देशमें तुर्कियोंका किसी प्रकारका शासन नहीं चल सकता। जितने दिनोंतक हम तुर्कियोंको अपने देशसे भगा नहीं देते, उतने दिनों-तक हमारी स्वाधीनताकी लड़ाई जारी रहेगी।

कारा जार्जके इस गर्वपूर्ण उत्तरसे तुर्कोंकी जिद और भी बढ़ गयी। उन्होंने पहलेसे भी बड़ी सेना लेकर सर्वियापर आक्रमण कर दिया। निरुपाय हो वीर शिरोमणि कारा जार्ज एक नौकरको साथ ले देशसे अदृश्य हो गये। उनका प्रण था कि

प्राण रहते मैं तुर्कियोंकी अधीनता नहीं स्वीकार कर सकता। तुर्कियोंने सर्विया पर फिर अपना अधिकार जमा लिया और मिलोश ओब्रेनोविक नामक एक विद्रोही नेताको वहांका गवर्नर नियुक्त कर दिया।

मिलोश बड़े चालाक आदमी थे। एकाध वर्षतक शान्तिरक्षा करनेके बाद उन्होंने फिर विद्रोहका पताका खड़ा किया। इस बार भी कई लड़ाइयां हुई। हर बार विद्रोहियोंकी ही जीत हुई। फलस्वरूप १८१६ ई०में तुर्कोंने सर्वियाको स्वायत्त-शासन प्रदान किया।

दूरसे ही कारा जार्ज विद्रोहियोंकी गति-विधि देख रहे थे। उन्हें यह आशा थी कि विद्रोही स्वायत्त-शासनसे सन्तुष्ट नहीं होंगे, वे पूर्ण स्वाधीनताके लिये लड़ाई लड़ेंगे। किन्तु विद्रोहियोंके नेता मिलोशको स्वायत्त-शासनसे ही सन्तुष्ट होते देख उन्हें मर्मान्तक पीड़ा हुई। उन्होंने और एक वर्षतक प्रतीक्षा की कि देखें मिलोश पूर्णस्वाधीनताके लिये फिर विद्रोह आरम्भ करते हैं या नहीं, पर मिलोश निश्चेष्ट थे। तब कारा जार्ज गुप्त रूपसे फिर सर्विया लौट आये। उनकी इच्छा थी कि देशको फिरसे विद्रोह करनेके लिये उभाड़ेंगे।

कितने ही देश-द्रोहियोंसे तुर्कोंको खबर मिल गयी कि कारा जार्ज फिर लौट आये हैं। उन्होंने मिलोशसे पूछा—क्या यह सत्य है कि कारा जार्ज फिर लौट आया है? यदि सत्य है तो उसे प्राणदंडकी सजा दो।

इस स्थलपर मिलोशने बड़ी भूल की। तुर्कियोंकी प्रेरणासे उन्होंने कारा जार्जको मार डालनेके लिये आज्ञा दी। कारा जार्जको इस कुचक्रका पता न था। यह खबर उनके कानों तक पहुंचनेके पहले ही मिलोश द्वारा नियुक्त गुप्त घातकोंने महाप्राण स्वदेशभक्त कारा जार्जको निद्रितावस्थामें मार डाला।

वीर मिलन

कारा जार्जने देशके लिये अपने प्राणोंका उत्सर्ग कर दिया। किन्तु उनका प्राण देना व्यर्थ नहीं हुआ। उन्होंने पूर्णस्वाधीनताका जो आन्दोलन आरम्भ कर दिया था, वह क्रमशः जोर पकड़ता ही गया। अन्तमें सन् १८६६ ई०में मिलनके नेतृत्वमें इस आन्दोलनने विकराल रूप धारण कर लिया। मिलनने पूर्णस्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये तुर्कियोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी, पर पहली बार उनकी हार हुई। तुर्कियोंने उनसे एक सन्धि करवायी। एक वर्षके बाद मिलनने फिर विद्रोह खड़ा कर दिया। उन्होंने तुर्कियोंके हाथसे निस, पिरोथ आदि कई स्थानोंको छीन लिया। अब तुर्कियोंके लिये विद्रोहका दमन करना कठिन हो गया। अन्तमें उन्होंने सर्वियाको पूर्णस्वाधीनता दे दी। इस प्रकार कारा जार्जके रक्तसे सर्वियाकी स्वाधीनताकी प्रतिष्ठा हुई।

मण्टिनिग्रो

संसारमें बहुतसे ऐसे आदमी हैं, जो किसीकी पराधीनता स्वीकार करनेकी अपेक्षा जङ्गलोंमें बाघ, भालुओंके साथ रहनाही

पसन्द करते हैं। ऐसे ही आदमियोंके एक दलने मण्टिनिग्रो राज्यकी स्थापना की। कसोवाके युद्धमें जब सर्विया निवासी तुर्कियोंसे हार गये, तब ऐसे आदमियोंके एक दलने जिन्हें तुर्की-की अधीनतामें रहना मंजूर नहीं था, पहाड़ों और जङ्गलोंमें जाकर आश्रय लिया। वहां जाकर उन्होंने मण्टि निग्रो राज्यकी स्थापना की। इससे अनुमान किया जा सकता है कि वह राज्य कितना छोटा था, पर राज्यके छोटे होनेपर भी वहांका प्रत्येक निवासी मियानसे निकली हुई तलवारके समान तेज था। तुर्कियोंने इस राज्यपर कितनी बार आक्रमण किया और कितनी बार हार खायी, इसका ठिकाना नहीं। संसारमें सबसे छोटा राज्य मण्टि निग्रो है, पर केवल मण्टि निग्रो ही एक ऐसा देश है, जहां किसी विजयीकी विजयपताका आजतक नहीं उड़ी। मण्टि निग्रो अपनी छातीका रक्त बहा-बहाकर सन् १३६९ ई० से आजतक अपनी पूर्ण स्वाधीनताकी रक्षा करता आ रहा है।

कालो आइवन

मण्टिनिग्रोका प्रत्येक अधिवासी स्वाधीनताकाशका जग-मगाता सितारा था। किसको प्रशंसा की जाय, किसको छोड़ दिया जाय, यह कहा नहीं जा सकता, पर सबमें कालो आइवन ही एक ऐसा है जिसमें औरोंकी अपेक्षा अधिक प्रकाश है।

उस बार तुर्कियोंने मण्टि निग्रोपर बड़े भीषण रूपसे आक्र-मण किया। मुट्ठीभर मण्टिनिग्रो निवासियोंके लिये विशाल

तुर्की सेनाके साथ लड़ाई करना असम्भव था। यह देखकर आइवनने एक चाल चली। किसी भी शहरमें तुर्कियोंके प्रवेश करनेके पहले काली आइवन उसमें आग लगाकर पहाड़ोंमें छिप जाते थे। इससे तुर्कियोंको केवल हैरान ही नहीं होना पड़ता था, बल्कि उन्हें भारी क्षति भी उठानी पड़ती थी।

ग्रहोवाका युद्ध—१८५२ साल

ग्रीक माराथनका बड़ा गर्व करते हैं, क्योंकि वहींपर थोड़ेसे ग्रीकोंने शत्रुओंकी विशाल सेनाको हराया था। ग्राहोवा मण्टिनिग्रोका माराथन है। वहांपर मुट्ठीभर मण्टिनिग्रो निवासियोंने हजार-हजार तुर्कियोंको इस तरह हराया कि उसके सामने ग्रीकोंके माराथनका गौरव भी तुच्छ जान पड़ता है। इस सेनाके सेनापति थे राजाके भाई मिर्को।

मण्टिनिग्रो स्वाधीनताकी तीर्थभूमि है।



जेकोस्लोवाकिया



बोहेमिया, स्लोवाकिया, मराविया, साइलेसिया, कार्पेथिया, रुथेनिया—इन्हीं सब प्रदेशोंको मिलाकर स्वाधीन जेकोस्लोवाकिया राष्ट्रकी स्थापना हुई है । पहले ये सब प्रदेश आस्ट्रियाके अधीन थे। आज ये अपने पराक्रमसे पराधीनताकी बेड़ियां काट कर स्वाधीन हो संसारमें सिर ऊंचा उठाये हुए हैं। इन सबोंमें बोहेमियाका इतिहास विशेष गौरवजनक है।

बोहेमिया

बोहेमिया एक छोटासा प्रदेश है। इसका अतीत इतिहास स्वाधीनताके संग्रामोंके वर्णनसे भरा है; पर वह स्वाधीनता देशकी स्वाधीनता नहीं थी, प्रत्युत धर्मकी अपनी। धार्मिक स्वाधीनताके लिये क्षुद्र बोहेमियाने जैसा साहस और दृढ़ संकल्प दिखलाया है, वह वास्तवमें अपूर्व है।

जानहूस

बोहेमियाके निवासी प्रोटेस्टेण्ट थे, इसलिये रोमन केथलिकोंसे उनकी शत्रुता थी। रोमन केथलिकोंके गुरु थ पोप। उन दिनोंमें पोपका बड़ा दबदबा था। राजा महाराजा भी पोपके डरसे थर-थर कांपते थे। पोपके क्रोधके सामने किसी विशाल राज्यको भी अपनी रक्षा करना कठिन था। इन्हीं पोप और पोपके अनुयायी राजाओंके साथ बोहेमियाको लड़ाई लड़नी पड़ी।

इस धार्मिक युद्धके नेता थे जानहूस। धार्मिक स्वाधीनता-के लिये उन्होंने बोहेमियनोंको संगठित कर लिया। फिर उनको अपने साथ ले उनके अगुआ बनकर वे पोपके दरबारमें गये। पोपने उन्हें धर्मद्रोही कहकर जीतेजी आगमें जला दिया। यह खबर सुनकर हूसके अनुयायी बिगड़ खड़े हुए। यहांतककी पोपके अनेक चेष्टा करनेपर भी वे उनके वशीभूत नहीं हो सके।

राजनैतिक स्वाधीनता

धर्मके फेरमें पड़कर बोहेमिया कभी भी राजनैतिक स्वाधीनताका उपभोग नहीं कर सका। पहले जर्मनीका फिर आष्ट्रिया-का और इनके सिवा अन्यान्य कई देशोंका बोहेमियापर आधिपत्य रहा; यद्यपि शासनका भार बोहेमिया निवासियोंके ही हाथमें था। अठारहवीं शताब्दिमें आष्ट्रियाकी सरकारने बोहेमिया-का शासनभार भी अपने हाथोंमें ले लिया। सरकारी महकमोंमेंसे बोहेमियन निकाल दिये गये और उनकी जगह आस्ट्रियन नियुक्त किये गये। बोहेमियाकी अदालत उठा दी गयी। वहांके स्कूल, कालिजों और सरकारी कामोंमें, वहांकी मातृभाषाके स्थानमें जर्मन भाषाका प्रचार किया गया। बोहेमियन भाषामें लिखी हुई पुस्तकें जला दी गयीं। यहांतक कि उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता भी छीन ली गयी, वे वलपूर्वक रोमन कैथलिक बनाये जाने लगे।

इस बार बोहेमियाकी आंखें खुलीं। उन्होंने अच्छी तरह समझा कि धर्मके सिवा मनुष्य अथवा जातिके और भी अनेक

अधिकार हैं। इसी समयसे बोहेमियाका राष्ट्रीय आंदोलन आरम्भ हुआ।

बोहेमिया निवासियोंने अपनी राष्ट्रीय भाषा और साहित्यके प्रचारका प्रश्न लेकर इस आंदोलनका श्रीगणेश किया। जगह-जगह साहित्य-समितियां और राष्ट्रीय भाषा परिषदोंकी स्थापना हुई। स्कूलों, कालेजों और सरकारी महकमोंमें बोहेमियन भाषा का प्रचार करने अथवा कम-से-कम उसे जर्मन भाषाके समान स्वीकार किये जानेका आन्दोलन आरम्भ हुआ।

जब देशमें जागृति फैल गयी, तब क्रमशः अन्यान्य राजनैतिक अधिकारोंके लिये भी आन्दोलन खड़े होने लगे। पर विदेशियोंका शासन अचल एवं अटल था। वे किसी तरह भी बोहेमिया निवासियोंके अधिकारोंको देनेको तैयार नहीं थे। फिर क्या था, बोहेमियनोंने आन्दोलनकी गति और भी उग्र रूपसे बढ़ा दी।

स्वाधीनता लाभ

बहुत दिनोंतक आन्दोलन चलता रहा। अन्तमें बोहेमियामें स्वाधीनताके सूर्यका उदय हुआ। १९१४ ई० में यूरोपीय महासमर आरम्भ हुआ और १९१९ ई०में समाप्त हुआ। उस समय बोहेमियाके दावोंको कोई अस्वीकार नहीं कर सका। बोहेमियाने अपने अन्यान्य विछिन्न जातिवर्गोंको मिलाकर यूरोपीय महासमरके बाद जेकोस्लोवाकिया नामक स्वाधीन राष्ट्रकी स्थापना की।

हंगरी



सोलहवीं शताब्दीमें तुर्कोंके अत्याचारसे यूरोपके सभी छोटे-बड़े राज्य सशंकित हो उठे थे। तुर्कोंके डरसे हंगरी आस्ट्रियाके साथ मिल गया, अवश्य ही यह मिलन मित्रतापूर्ण था।

कई वर्षों के बाद इस मित्रताका विषम परिणाम निकला। आस्ट्रियाने हंगरीको अपने अधीन घोषित कर दिया। यही नहीं, उसने घोर अत्याचार करना भी शुरू कर दिया। अब हंगरियनों-की आँखें खुलीं। उन्होंने आस्ट्रियनोंके पंजेसे छुटकारा पानेका निश्चय कर लिया। स्वाधीनताका आन्दोल छेड़ दिया गया। तुर्कों और आस्ट्रियनों—दोनों प्रबल शक्तियोंके विरुद्ध उन्होंने युद्धकी घोषणा कर दी।

निकोलस जिनरियायी

सबसे पहले वीर निकोलस जिनरियायी ताल ठोककर तुर्कोंके विरुद्ध मैदानमें खड़े हुए। वे त्रिगेदगड नामक दुर्गके अधिपति थे। तुर्कोंने ५०-६० हजार सैनिकोंको लेकर उस दुर्गपर अधिकार जमानेके लिये आक्रमण कर दिया। जिनरि-यायीने केवल ३ हजार सैनिकोंको लेकर उनका सामना किया। ६ सप्ताह तक तुर्कोंके साथ लड़ाई होती रही। उस लड़ाईमें तुर्कोंके २० हजार सैनिक मारे गये। वीर जिनरियायीने शत्रुओंके

हाथोंमें बंदी होनेकी अपेक्षा मृत्युका आलिङ्गन करना ही अच्छा समझा। उन्होंने बारूदसे अपने किलेको उड़ा दिया। तुर्कोंने उस दुर्गके ध्वंसावशेषमें जिनरियायीको बहुतेरा खोजा, पर उनकी लाश भी उनके हाथ नहीं लगी।

इमरि टोकोलो

आस्ट्रियनोंके विरुद्ध खुलमखुल्ला जिसने विद्रोहका झंडा खड़ा किया उस वीरका नाम था इमरि टोकोली। इमरि टोकोलीको परास्त करनेके लिये कई वार आस्ट्रियनोंने अपनी सेना भेजी, पर उन्होंने हर बार उन्हें पराजित कर दिया।

फ्रान्सिस रोकोकजि

इसके बाद एक और बड़ी लड़ाई हुई। इस लड़ाईमें हंगरियानोंने तुर्कोंकी सहायता ली। किन्तु दुर्भाग्यवश वे हार गये। पराजित होनेपर आस्ट्रियनोंने उनपर और भी अधिक जुल्म करना आरम्भ कर दिया। तब आस्ट्रियनोंके विरुद्ध फ्रान्सिस रोकोकजिने विद्रोहकी घोषणा की। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रान्सिसरोकोकजिसे हार मानकर आस्ट्रियाके सम्राटने हंगरीके सब पुराने अधिकार दे दिये।

स्टिफेन जेकनियाई

उसके बाद फिर मौका पाते ही आस्ट्रियाके सम्राटने हंगरीपर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। वे हंगरीकी स्वाधीनताको बड़ी निष्ठुरतासे नष्ट करने लगे। फिर हंगरी आस्ट्रियाके अधीन

हो गया। इस बार वह क्रमशः अपने जातीय गौरवको भी भूलने लगा। हंगरीके शिक्षित अपनी मातृभाषाको छोड़कर आस्ट्रियन भाषा अपनानेमें अपना गौरव समझने लगे। इसी समय स्टिफेन जेकनियाईका जन्म हुआ। उन्हें अपनी मातृभूमिकी इस दशापर बड़ा खेद हुआ। वह अपने देशवासियोंमें जागृति उत्पन्न करने लगे। पहली ही सभामें उन्होंने मातृभाषाके महत्वपर भाषण दिया। उनके पास अपार धन था। उन्होंने अपना सारा धन देशकी भलाईमें लगा दिया।

कसुथ और डिक

यों तो जेकनियाईने देशमें जागरण उत्पन्न कर दिया था, पर हंगरीके स्वाधीनता-संग्रामके कर्णधार थे कसुथ और डिक। इन्होंने ही वास्तविक स्वाधीनताका आंदोलन सञ्चालित किया था।

उस समय आस्ट्रिया खुलेआम हंगरीको अपना अधीन देश कहकर घोषित कर रहा था। आस्ट्रियाके सम्राट हंगरीसे अपनी सेनाके लिये सैनिक भरती करने लगे। हंगरीकी राष्ट्रीय महासभाने आस्ट्रियाके इस जुल्मका प्रतिवाद किया। देशके इसी सङ्कटके समय राजनैतिक क्षेत्रमें कसुथका आविर्भाव हुआ।

कसुथ बड़े शक्तिशाली लेखक और वक्ता थे। उनके लेखों और भाषणोंसे देशमें एक अपूर्व जागृतिकी लहर पैदा हो गयी। इसी समय हंगरीकी राष्ट्रीय महासभाने राष्ट्रीय शिक्षाका प्रबन्ध करना चाहा, आस्ट्रियाके सम्राटने ऐसा नहीं होने दिया, पर

सम्राटकी वाधाकी किसीने परवा नहीं की। हंगरीका राष्ट्रीय दल और भी गर्म हो उठा। कसुथने राष्ट्रीय शिक्षाके सम्बन्धमें आस्ट्रियाके सम्राटकी व्यङ्गोक्तिको कागजपर लिथोसे लिख-लिख कर देशभरमें प्रचारित कर दिया। परिणाम यह हुआ कि देशमें चारों ओर सम्राटके विरुद्ध उत्तेजना फैल गयी। आस्ट्रियाके सम्राटने देखा कि यदि कसुथ यहांसे भगा नहीं दिया जाता है तो बड़ा उपद्रव मच जायगा। पहले कसुथको एक बड़ी नौकरी-का प्रलोभन दिया गया, पर उन्होंने घृणाके साथ इस प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया।

तब आस्ट्रियाकी सरकारने क्रुद्ध होकर कठोर दमन नीतिका आश्रय लिया। कसुथ और उनके प्रमुख अनुयायी गिरफ्तार कर लिये गये। अदालतमें उनके विरुद्ध मामला चलाया गया। उन्हें कठोर कारावासका दंड दिया गया। हंगरीकी राष्ट्रीय महा-सभा भंग कर दी गयी। किन्तु फिर भी स्वाधीनताका आन्दो-लन नहीं रुका।

कसुथके जेल जानेपर स्वदेश प्रेमी डिक दूने उत्साहके साथ आंदोलन चलाने लगे। आन्दोलनने ऐसा विकराल रूप धारण किया कि सरकारको वाध्य होकर राजनैतिक कैदियोंको छोड़ देना पड़ा। जेलसे छूटनेके वाद कसुथने एक समाचारपत्र नि-काला। इस समाचारपत्रके द्वारा कसुथ देशके एक छोरसे दूसरे छोर तक स्वाधीनताके भावोंका प्रचार करने लगे। इसका फल यह हुआ कि हंगरीने आस्ट्रियाके सामने अपने दो दावे पेश किये।

पहला, आस्ट्रियाके बराबर ही हंगरीकी जनतापर टैक्स लगे। दूसरा, आस्ट्रियन भाषाके स्थानमें मातृ भाषाका प्रचार हो।

आस्ट्रियन सरकारने भाषा सम्बन्धी दावेको तो स्वीकार कर लिया, किन्तु वह टैक्स घटानेको राजी नहीं हुई। तब कसुथने आस्ट्रियाकी बनी हुई चीजोंके बहिष्कारका आन्दोलन आरम्भ किया। सरकारने भी इस आन्दोलनको गैरकानूनी घोषित कर अत्याचार करना शुरू किया। इससे देशमें और भी जागृति फैल गयी।

३ मार्च सन् १८४८ ई०को कसुथने हंगरीकी महासभामें आस्ट्रियाके शासनके विरुद्ध एक तेजस्विनी वक्तृता दी। इस वक्तृतासे हंगरीकी तो बात ही नहीं,आस्ट्रियाकी राजधानी बियनाके छात्रसमाजने भी आस्ट्रियाके शासनके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। विद्रोहियोंपर गोली चलायी गयी; किन्तु अन्तमें उन्हींकी ही विजय हुई। स्वेच्छा-तन्त्रका पृष्ठपोषक मन्त्री मेटारनिक छद्मवेशमें इङ्गलैंड भाग गया।

इसके बाद ही फ्रान्समें राज्यक्रान्ति उठ खड़ी हुई। समस्त देशने स्वेच्छाचारके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। आस्ट्रियाके सम्राटने भी अपनी खैरियत नहीं देखी, इसलिये वाध्य होकर उन्होंने हंगरीको स्वाधीनता दे दी।

उसके बाद जब आस्ट्रियाकी राज-गद्दीपर फ्रेन्सिस जोजेफ बैठा तब फिर उसने हंगरीपर अत्याचार करनेकी चेष्टा की। उस समय कसुथ हंगरीके प्रजातन्त्रके सभापति थे। वे भला

कब यह जुल्म बरदाश्त करनेवाले थे ? आस्ट्रियाके साथ युद्धकी घोषणा कर दी गयी। हंगरीकी सेनाके नायक हुए आर्थर जार्जी। जार्जीने बड़े साहसके साथ युद्ध किया। किन्तु शत्रुओंकी सेना इतनी अधिक थी, कि उन्हें बाध्य होकर हार जाना पड़ा। कसुथ भागकर तुर्की चले गये, पर इस पराजयसे भी स्वाधीनता आंदोलनकी अग्निशिखा बुझी नहीं। डिक नामक सर्वत्यागी और एकनिष्ठ साधकने आंदोलनको और भी प्रज्ज्वलित कर दिया। आस्ट्रियाके सम्राटने डिकको वशीभूत करना चाहा। किन्तु डिक ऐसे व्यक्ति नहीं थे जिन्हें भय, प्रलोभन, विफलता अथवा मृत्यु कर्तव्य पथसे विचलित कर सके। आस्ट्रियाके सम्राटने कई बार कई तरहके प्रस्ताव उनके सामने रखे, कई बार उन्हें बुलाया, पर डिकने हर बार यही उत्तर दिया कि जबतक हंगरीकी लुप्त स्वाधीनता फिर लौट नहीं आती तबतक मैं सम्राटकी किसी प्रकारकी सहायता नहीं कर सकता और न उनसे कोई बातचीत ही हो सकती है।

डिकके नायकत्वमें हंगरीमें फिर स्वाधीनताकी आग जलने लगी। आस्ट्रियाके सम्राटको अब अधिक चिन्ता होने लगी। सम्राट दो तीन बार हंगरी गये। बहुतसे उत्सव और जलसे किये। हंगरीको बहुतसे अधिकार देनेकी चेष्टा की और दिये भी। किन्तु डिक किसी तरह भी वशमें नहीं आये। उनका दावा था, पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना—उसको पाये बिना वह आस्ट्रियाके साथ किसी प्रकारका सहयोग करनेको तैयार नहीं

थे। अन्तमें सरकारने हंगरीके राष्ट्रीय दलको दबानेके लिये दमन नीतिसे काम लिया, पर सब विफल हुआ। डिक तो इसके लिये तैयार बैठे ही थे इसलिये वह अपने दावेसे तिलमात्र भी पीछे नहीं हटे।

अन्तमें आस्ट्रियाको बाध्य होकर हंगरीकी स्वाधीनता स्वीकार करनी पड़ी और आजतक वह स्वाधीन है।



अलबेनिया और बलगेरिया



अलबेनिया तुर्कीके पास ही एक पहाड़ी देश है। यहांके स्त्री-पुरुष भी पर्वतकी नाईं सिर ऊंचा उठाये रहना चाहते हैं। वे पराधीनताके बन्धनमें रहना नहीं चाहते। तुर्कीने अलबेनियाको जीतकर अपने साम्राज्यमें मिला लिया, पर अलबेनियाके स्वातंत्र्य भाव नष्ट नहीं हो गये। वह बराबर स्वाधीन होनेकी चेष्टा करने लगा।

सिकन्दर बेग

इसी समय स्वाधीनता प्रिय जातिमें सिकन्दरबेग नामक एक वीरका जन्म हुआ। तुर्कोंने उनके पिताको युद्धमें हराकर तुर्कोंकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये उन्हें बाध्य किया। तुर्कियोंने पिताके साथ उनके तीन भाइयोंको भी गिरफ्तार कर लिया। उस समय सिकन्दर बेग छोटे थे। तुर्कोंने उन्हें इसलाम धर्ममें दीक्षित करनेके लिये राजमहलके कामोंमें लगा दिया। तरुण सिकन्दर बेग अत्यन्त सुन्दर थे और उनकी मानसिक शक्ति भी असाधारण थी। थोडे ही दिनोंमें वे लोकप्रिय हो गये। राज दरबारमें उनकी बड़ी मान होने लगी। १८ वर्षकी अवस्थामें एक सेनाके सेनापति बनाकर वे एशिया माइनर भेज दिये गये। पर सिकन्दर बेगकी इच्छा तुर्कोंके

अधीन काम करनेकी न थी। उनकी नसोंमें विशुद्ध अलबेनियन रक्त-प्रवाहित हो रहा था। उनके पिताकी मृत्यु पहले ही हो गयी थी और उनके भाई भी मार डाले गये थे। तुर्कोंने उनको मृत्युके बाद अलबेनियापर अधिकार जमा लिया था। उस समय सिकन्दर बेग कुछ नहीं कर सके, पर उनके हृदयमें प्रतिहिंसाकी आग धधक रही थी। वन्दिनी मातृभूमिको मुक्त करना एवं भाइयोंकी हत्याका बदला लेना उनके जीवनका एकमात्र लक्ष्य हो गया। एक दिन वह सुअवसर उपस्थित भी हो गया।

तुर्क एक युद्धमें हंगेरियनोंसे हार गये। उस समय सिकन्दर बेगकी अवस्था २० वर्षकी थी। वह तीन सौ अलबेनियनोंको साथ ले चुपकेसे तुर्कोंकी छावनी छोड़कर चले आये। उन्होंने बड़े कौशलसे क्रयाके दुर्गको कब्जेमें कर लिया, एवं तुर्कोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी। झुण्ड-के-झुण्ड स्त्री-पुरुष उनके दलमें शामिल होने लगे और एक महीनेके अन्दर ही सिकन्दर बेगने अलबेनियाको तुर्कोंके हाथसे छीन लिया।

उनके समान वीर, शक्तिशाली और स्वाधीनताप्रिय व्यक्ति संसारके इतिहासमें बिरले ही मिलेंगे। पूरे २५ वर्षतक स्वाधीनताकी रक्षाके लिये उन्होंने तुर्कोंसे लड़ाई की। जबतक वे जीते रहे तबतक अलबेनिया पूर्ण स्वाधीन था।

उनके मरनेके बाद अलबेनिया फिर तुर्कोंके अधीन हो गया। तुर्कोंने अलबेनियाकी स्वाधीनताको एक बारगी ही लोप करना चाहा। अलबियनोंको अपनी मातृभाषा लिखने पढ़नेकी मनाही

कर दी गयी। अलबेनियन भाषामें पुस्तक छपनेवालोंको १५ वर्ष कारावास दिये जानेकी व्यवस्था की गयी। किन्तु अलबेनियन दृढ़ थे। वे दण्ड और अत्याचारकी कुछ भी परवा न कर एलबियन भाषामें पुस्तक लिखने और छापने लगे। तुर्कोंने राजभाषा सिखानेके उद्देश्यसे बहुतसे स्कूल खोल दिये थे। अलबियन उन स्कूलोंमें जा-जाकर विद्या प्राप्त करने लगे, पर उन्होंने अपनी मातृभाषाको नहीं छोड़ा। बालक-बालिकाएं बाल्यकालसे ही युद्ध-विद्या सीखने लगीं। सभी स्त्री-पुरुष हर समय अपने साथ हथियार रखने लगे। स्त्रियां पिस्तौल रखती थीं और पुरुष बन्दूक रखते थे। पुरुषोंकी भांति स्त्रियां भी हंसते-हंसते अपने प्राण देनेको तैयार थीं। जब शत्रुओंके हाथसे मानरक्षाका और कुछ उपाय नहीं रह जाता तब वे राजपूत वीरांगनाओंकी तरह आगमें जलकर मर जातीं। अलबेनियाके स्त्री-पुरुषमें कोई ऐसा नहीं था जो प्राणोंके भयसे शत्रुओंके सामने सिर झुकाता। ऐसी वीर जातिको पराधीनताके बन्धनमें अधिक दिन तक रखना सम्भव नहीं था। १६२० ई०में उन्होंने तुर्कोंके विरुद्ध युद्धकी घोषण करके अपनी स्वाधीनता प्राप्त की। इस पहाड़ी वीर जातिकी वीरताकी कथा याद आते ही श्रद्धासे अनायास ही सिर नत हो जाता है।

बलगेरिया

जिस समय बलगेरिया बाइजण्टाइन सम्राटके अधीन था उस

समय उस देशमें पीटर और आइवन नामक दो वीरोंका आविर्भाव हुआ।

इन दो भाइयोंने देशको विदेशी शासनसे मुक्त किया। विदेशी उनपर मनमाना अत्याचार करते थे। बाल्यकालसे देशकी यह दुर्दशा देखकर उनके हृदयमें स्वाधीन होनेकी भावना जागृत हुई। उपयुक्त समय आनेपर उन्होंने एक गिरजेमें देशके गण्य-मान्य व्यक्तियोंको एकत्र करके कहा—भाइयो, अब हम लोग कबतक पराधीन रहेंगे। भगवानने हमें आदेश दिया है कि उठो और स्वाधीनताके युद्धमें अग्रसर हो। क्या अब भी हम सोते रहेंगे?

इस वक्तृतासे देशके लोगोंमें विद्रोहकी आग जल उठी। धनी, गरीब, मजूर, किसान सबने देशकी स्वाधीनताके लिये हथियार उठाया। उनके नेता हुए पीटर और आइवन। विद्रोह-का परिणाम यह हुआ कि बलगेरिया विदेशी शासनसे मुक्त हो गया।

प्रिन्स बोथारि

सन १३९३ सालतक बलगेरिया स्वाधीन रहा। उसके बाद वह तुर्कोंके अधीन हो गया। तुर्कोंने बलगेरियनोंपर अत्याचार करना शुरू कर दिया। सन १५३५ सालमें जब तुर्कोंका अत्याचार असह्य हो गया, तब वीर बोथारिने विद्रोहका झंडा खड़ा किया। बलगेरियनोंका रक्त खौलने लगा। उस समय वीर बल-गेरियनोंका एक ऐसा दल था जो राजाके अत्याचारसे तंग आकर

बनोंमें वास करता था। जब देशमें स्वाधीनताका संग्राम छिड़ गया तब उन्होंने आकर प्रिन्सबोथारिका साथ दिया। बोथारि इन वीरोंकी सेना लेकर पड़ाड़ोंकी गुफाओंमें छिपकर गोरिलासे युद्ध करने लगे। जब तक वे जीते रहे तबतक वे स्वाधीनता संग्रामको बराबर चलाते रहे। उनकी मृत्युके बाद देशकी अवस्था फिर पूर्ववत हो गयी।

देशबन्धु पाइसि और सफ्रोनी

उन्नीसवीं शताब्दीके प्रथम भागमें पाइसि और सफ्रोनीने देशमें फिर जागृति फैलाईं। इतने दिनों तक बलगेरियन केवल तुर्कों का ही अत्याचार नहीं सहन करते आ रहे थे ग्रीक पुरोहित भी उनपर कम अत्याचार नहीं करते थे। प्रत्येक गिरजामें ग्रीक पुरोहित थे। भाषा आदि भी ग्रीक ही थी। इसका परिणाम यह हुआ कि बलगेरियन अपनी भाषाको प्रायः भूलसे गये।

इस आत्म विस्मृत जातिको जगानेके लिये देशबन्धु पाइसि और सफ्रोनीने देशके अतीत गौरव और वर्तमान हीनताका इतिहास लिखा। इस इतिहासको पढ़कर बलगेरियाका लुप्त साहस लुप्त जीवन धीरे-धीरे जागृत होने लगा। स्वदेशकी महिमाका वर्णन करनेके लिये उस समय और भी अनेक पुस्तकें निकलने लगीं। बलगेरियनोंने अपने राष्ट्रीय साहित्यकी ओर विशेष ध्यान दिया। १० वर्षके भीतर ५३ राष्ट्रीय स्कूल और पांच प्रेस स्थापित हुए।

ग्रीक भाषाके स्थानपर राष्ट्रभाषाका प्रचार किया गया। ग्रीक पुरोहित और ग्रीक पूजा पद्धति उठा दी गयी और धर्म मन्दिरोंमें भी राष्ट्रीयता स्थापित की गयी।

सशस्त्र विद्रोह

इस जातीय जागरणके फलस्वरूप देशमें राजनीतिक आकांक्षा भी जाग उठी। कितने ही साहसी युवकोंने सशस्त्र विद्रोहका सूत्रपात कर दिया। उनके नाम थे राकोवस्की, पानाइयात, खितभ, हाजिये डिमिल, स्टिफेन, कराजा आदि। किन्तु उस समय देश पूर्णरूपसे तैयार नहीं था, इसलिये उनका प्रयत्न सफल नहीं हुआ।

तुर्कोंका अत्याचार दिन प्रति दिन बढ़ने ही लगा। अन्तमें सन् १८९६ ई० निरुपाय होकर बलगेरियनोंने विद्रोह कर दिया। तुर्कोंने असंख्य सैनिक भेजकर विद्रोहका दमन किया। १५ हजार बलगेरियोंने अपने प्राण दिये।

स्वाधीन बलगेरिया

तुर्कोंके अत्याचारके प्रतिवादमें रूसने तुर्कोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की। युद्धमें विजयी होनेपर रूसने बलगेरियापर अपना अधिकार जमाया। अब रूसके हाथसे छुटकारा पानेके लिये बलगेरियामें आन्दोलन होने लगा। अन्तमें १९०८ ई० में प्रिन्स-फर्डिनेण्डके जमानेमें बलगेरिया पूर्ण स्वाधीन हो गया।

ग्रीस और रूमानियां

—००‡०‡००—

ग्रीस स्वाधीनताका क्रीड़ाक्षेत्र है। स्वदेश और स्वाधीनताकी रक्षाके लिये पिता अपने पुत्रको बलि चढ़ा देता था, नवयुवक मृत्युके मुखमें कूद पड़ते थे, बहिन भाईको सैनिक वेश पहनाकर उसे बड़े गर्वसे युद्धमें भेजती थी। ग्रीसमें कोई राजा नहीं था, वहांकी जनता प्रतिनिधि सभा द्वारा राज्य चलाती थी। बालक-बालिकाओंकी शिक्षाका भी बड़ा अनुपम प्रबन्ध था। सबको युद्ध-विद्या सीखनी पड़ती थी। इसका फल यह हुआ कि ग्रीसकी स्वाधीनता सदा अक्षुण्ण रही। कई बार इरानियोंने लाखों सैनिक लेकर ग्रीसपर आक्रमण किया, पर ग्रीसकी पराजय नहीं हुई। एक बार मिलिटेडसने थोड़े से सैनिकोंको लेकर माराथनमें उन्हें हरा दिया और एक बार लिओनीडासने केवल ३०० सैनिकोंको लेकर थर्मापोलीमें उनका सामना किया। माराथन और थर्मापोली—मिलिटेडस और लिओनिडास ग्रीसके इतिहासमें अमर हो गये हैं।

स्वाधीनताका आन्दोलन

कई सदियोंतक ग्रीस अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करता आ रहा था, पर अन्तमें सन् २१६ ईसाके पूर्व वह रोमन साम्राज्यके अधीन हो गया। उसके बाद सन् १५४० ई० में तुर्कोंने ग्रीसपर

अपना अधिकार जमा लिया। उस समय ग्रीकोंका प्राचीन वीरत्व लुप्त-सा हो गया था। बहुत दिनोंकी पराधीनतासे ऊब कर एवं तुर्कों के थपेड़े खानेसे ग्रीकोंकी नींद टूटी।

बहुत दिनोंसे रूस भी ग्रीसपर आंख लगाये बैठा था। इस लिये रूस ग्रीकोंको तुर्कों के विरुद्ध उत्तेजित करने लगा। फलस्वरूप १७६६ ई० से ग्रीक तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह करने लगे, पर तुर्कों ने कठोर हाथोंसे विद्रोहका दमन कर दिया।

तब ग्रीकोंने यह समझा कि इस तरह खंड युद्ध अथवा विद्रोहसे जाति जाग नहीं सकती। जातिको जगानेके लिये शिक्षा, दीक्षा, आचार व्यवहार सबकी आवश्यकता है। सदियोंसे पराधीन रहनेके कारण ग्रीसका साहित्य लोप हो गया। अब चेत होनेपर ग्रीक अपने लुप्त रत्नका फिरसे उद्धार करने लगा। देशभरमें साहित्य सम्मतियां, स्वदेश बान्धव सभाएं एवं राष्ट्रीय विद्यालय खुल गये। भाषाविद पंडितोंने राष्ट्रीय भाषाका फिरसे संस्कार किया और उसीका प्रचार करने लगे। राष्ट्रीय भाषामें राष्ट्रीय कविताओं और संगीत की रचना होने लगी। स्त्री पुरुषोंके हृदयमें स्वाधीनताकी आकांक्षा जाग उठी।

उस समय सन् १८१५ ई० में फिलिके हिटिरिया नामक एक गुप्त विद्रोह समिति स्थापित हुई। विद्रोही ग्रीक, मास्को, बुखारेस्ट, स्ट्रीट, लेवाण्ट आदि स्थानोंमें उक्त समितिके केन्द्र स्थापित कर चारों ओर विद्रोहकी आग भड़काने लगे। ६ वर्ष प्रचार करनेके बाद सन् १८२१ ई० में ग्रीसने खुलमखुल्ला विद्रोह-

की घोषणा कर दी। उस विद्रोहके नायक हुए तांरा। तांरा देशकी पुकार सुनकर युद्धमें कूद पड़े।

स्वाधीनताका युद्ध

आठ वर्षतक ग्रीकों और तुर्कोंमें लड़ाई होती रही। ग्रीकोंने सबसे पहले बन्दरोंपर अधिकार जमा लिया। उसके बाद चारों ओर विद्रोह फैला दिया। कालाम्रृतासे आर्क विशप जार्मानोसने किसानोंकी एक सेना लेकर यात्रा की। ग्रीसके सरदार पिट्रो अपनी सेना लेकर तुर्कोंका सर्वनाश करने लगे। कालो कोद्रानीने तुर्कोंके एक नगरपर अपना दखल जमाकर वहांसे तुर्कोंको निकाल भगाया। स्पेटसि, सारा, हिद्रा, सामल आदि प्रधान प्रधान ग्रीक द्वीपोंने वारी-वारीसे विद्रोहमें योगदान दिया।

२ री अप्रैलको युद्ध आरम्भ हुआ। सितम्बरके पहले सभी स्थान ग्रीकोंके अधिकारमें आ गये। जिन स्थानोंपर ग्रीकोंने अधिकार जमा लिया, वहांसे तुर्क खदेड़ दिये गये।

पर तुर्कोंने सहज ही ग्रीसको छोड़ना नहीं चाहा। आठ वर्षों तक उन्होंने ग्रीसपर पुनः अधिकार प्राप्त करनेकी चेष्टा की, पर सब व्यर्थ। १८२२ में ग्रीसने अपनेको स्वाधीन देश घोषित कर दिया। स्वाधीनता प्रिय अंगरेज कवि बायरनने इस युद्धमें ग्रीसकी ओरसे युद्ध किया था।

रूमानियां

जिस समयकी बात हम लिख रहे हैं, उस समय रूमानिया दो भागोंमें विभक्त था। एकका नाम था वालाचिया और

दूसरेका मोलदाविया। वालाचिया तुर्कोंके अधीन था और मोल्दाविया पोलैंडके अधिकारमें था।

वीर स्टिफेन

मोल्दावियाको पराधीनताकी जंजीरसे छुड़ानेकी चेष्टा सबसे पहले वीर स्टिफेनने की। उन्होंने देशको स्वाधीनताके मन्त्रसे दीक्षित कर दिया। सैनिकोंका एक दल लेकर उन्होंने वालाचियापर आक्रमण कर दिया और तुर्कोंको वहांसे भगा दिया तब तुर्कोंने एक बड़ी सेना लेकर मोल्दावियापर आक्रमण कर दिया तब स्टिफेनने स्वाधीनता-संग्रामके लिये देशके युवकोंको उत्तेजित किया। उनके आदेशसे ४५ हजार युवक तैयार हो गये। इन्हीं ४५ हजार युवकोंको सेना लेकर स्टिफेनने तुर्कोंकी विशाल सेनाका मुकाबला किया और उन्हें पराजित कर दिया। देश-विदेशोंमें वीर स्टिफेनके वीरत्वकी प्रशंसा होने लगी।

कुछ दिन बाद फिर तुर्क युद्ध करने आये। इस बार उनके सैनिकोंकी संख्या दो लाख थी। स्टिफेन इससे जरा भी भयभीत नहीं हुए। थोड़ेसे सैनिकोंको लेकर वे रणक्षेत्रमें कूद पड़े। इस बार तुर्कोंकी जीत हुई, पर युद्धमें उनके प्रायः सारे सैनिक मारे गये। जो थोड़से सैनिक बाकी बच गये थे, उनको लेकर एक देशपर अधिकार जमाना सम्भव नहीं था। इसलिये विजयी होकर भी तुर्क वापस लौट गये। रूमानियाकी स्वाधीनता ज्यों-की-त्यों बनी रही।

किन्तु तुर्क चुपचाप बैठे नहीं रहे। वे फिर रूमानियापर आक्रमण करने लगे, पर हर बार स्टिफेन उन्हें मार भगाते। यह स्वदेशभक्त अपने जीवनके शेष दिनतक रूमानियाकी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये युद्ध करते रहे। उनके मरनेके बाद फिर रूमानिया तुर्कोंके अधीन हो गया।

वीर माइकेल

१५६३ ई० में रूमानियाके श्रेष्ठ वीर माइकेल वालाचियाके सिंहासनपर बैठे। उस समय तुर्कोंका अत्याचार चरमसीमाको पहुंच गया था। तुर्कोंकी पराधीनताकी चक्कीमें पिसकर देशवासी आर्तनाद कर रहे थे। इसी समय वीर माइकेलका आविर्भाव हुआ। वह केवल आठ वर्षतक सिंहासनपर बैठे, पर इन्हीं आठ वर्षोंमें उन्होंने देशको ऐसा जाग्रत कर दिया कि सारे संसारकी दृष्टि उनकी ओर आकर्षित हो गयी।

सबसे पहले उन्होंने एक सेना लेकर बलगेरियामें तुर्कोंपर आक्रमण किया। तुर्क एक लाखकी सेना लेकर उनका दमन करने चले। माइकेलके पास केवल १५ हजार सैनिक थे। वह एक पहाड़ी तंग रास्तेमें अपना डेरा डाले रहे। तुर्कोंकी सेना उसी रास्तेसे जाने लगी। जब माइकेलने देखा कि तुर्कोंने जालमें पांव रख दिया है, तब उन्होंने दोनों ओरसे उनपर आक्रमण कर दिया। सारी सेना तितिर-बितिर हो गयी। एक लाख तुर्क सैनिकोंमेंसे केवल कुछ हजार जीते बचे। स्वयं सेनानायक शिनन-पाशा किसी प्रकार अपनी जान बचाकर भागे।

इसके बाद तुर्कों ने बुखारेस्टपर अधिकार करके माइकेलपर आक्रमण करनेकी तैयारी की। माइकेल भी निश्चेष्ट होकर चुपचाप बैठे नहीं रहे। वह भी अपनी सेना बढ़ाकर तुर्कों का मुकाबिला करनेका मौका खोजने लगे। शीघ्र ही वह मौका मिल गया। शिननपाशा सेना लेकर डेन्यूब नदीके पार हो गये थे। उसी समय माइकेलने चुपकेसे तुर्कों पर आक्रमण करके उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया।

इधर पोलोंने मोलदावियापर अधिकार कर अपने एक आदमीको वहांके सिंहासनपर बैठा दिया। माइकेलने आकर पोलोंको मार भगाया और देशमें पूर्णस्वाधीनता स्थापित की। रूमानियाके इतिहासमें पहले वालाचिया और मोलदावियाने एकत्र हो कर स्वाधीन राज्यकी स्थापना की।

माइकेलके चरित्रमें एक कलङ्क था। उन्होंने अपने देशकी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये ट्रांसलवेनियाको अपने अधीन कर लिया था। कुछ दिन बाद इसका बड़ा विषमय परिणाम हुआ। ट्रांसलवेनिया विद्रोह करके माइकेलके हाथसे निकल गया। इसके साथ-ही-साथ मोलदाविया और वालाचिया भी अलग-अलग हो गये। माइकेल राज्यच्युत कर दिये गये। माइकेल आस्ट्रियन सेना लेकर फिर ट्रांसलवेनियापर अधिकार करने गये, पर वहीं पर किसी आस्ट्रियन गुप्तघातकके हाथसे उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद रूमानिया फिर तुर्कों के अधीन हो गया।

ट्यूडर ब्लादिमेरेस्को

उसके बादसे तुर्क ग्रीक प्रतिनिधियों द्वारा रूमानियाका शासनकार्य चलाते थे। इन ग्रीक शासन-कर्त्ताओंने रूमानिया पर इतना अत्याचार किया कि देशमें फिर विद्रोह दिखाई देने लगा। माइकेलके मरनेके सौ वर्ष बाद एक महापुरुषके नेतृत्वमें फिर स्वाधीनताका युद्ध आरम्भ हुआ। इस बारके नेताका नाम था ट्यूडर ब्लादिमिरेस्की। उन्होंने देशको उत्तेजित कर दिया। तुर्कीशासनको अग्राह्य करके उन्होंने स्वाधीनताको घोषणा कर दी। इससे ग्रीक खूब बिगड़ उठे। उन्होंने गुप्तघातकके द्वारा स्वदेशप्रेमी ट्यूडर ब्लादिमिरेस्कीको मरवा डाला।

यह जघन्य कार्य करके भी उन्हें कुछ सुविधा नहीं मिली। इस हत्याके बाद तुर्कोंने फिर ग्रीक प्रतिनिधि नहीं भेजे। रूमानियांवासियोंपर ही देशका शासन-भार दिया गया।

पूर्ण स्वाधीनता

सन् १८६६ की बात है। बलगेरिया, बसनिया आदि रूमानियाके पार्श्ववर्ती देशोंमें विद्रोह मच रहा था। रूमानियाने सोचा, तुर्कोंके पंजेसे निकलनेका यही उपयुक्त समय है। ऐसा निश्चय कर रूमानियाकी पार्लेमेंटने पूर्ण स्वाधीनताकी घोषणा कर दी। रूसने रूमानियाका पक्ष लिया। उसके बाद रूस और तुर्कीमें लड़ाई हुई। इस युद्धके बाद सबने स्वीकार किया कि रूमानिया स्वाधीन राष्ट्र है, और आजतक उसकी स्वाधीनता ज्यों-की-त्यों बनी है।

फिनलैण्ड



गत यूरोपीय महासमरके फलस्वरूप जिन-जिन छोटे-छोटे राज्योंने अपनी लुप्त स्वाधीनता पुनः प्राप्त की थी, उनमें फिनलैंड भी एक है।

प्राचीन फिनलैंड

कई हजार वर्ष पहलेकी बात है। उस समय फिनलैंड स्वाधीन देश था। उस समय वहां राजतंत्र था। छोटे-छोटे ग्रामीण राष्ट्र एक दूसरेसे मिलकर शासनका कार्य चलाते थे। उनके धर्म, भाषा और आचार-व्यवहार एकसे ही थे। फिनशोंका धर्म हिन्दुओंकी भांति प्रकृतिकी पूजाका था। उनके देवताओंके नाम थे, पूक्को (पतन देव), आतो (वरुणदेव), तापियो (वन देवता), फिनश वीरतामें बड़े विख्यात थे।

पराधीन फिनलैंड

सन् ११५७ ई०में फिनलैंड पहले-पहल सभ्य जगतके स्पर्शमें आया अर्थात् सभ्य जगतके अत्याचारके पंजेमें फँसा। स्विसोंने फिनलैंडमें आकर क्रिश्चियन धर्मका प्रचार करना आरंभ किया और पीछेसे उसपर अपना अधिकार जमा लिया; किन्तु स्विस अधिक दिनतक फिनलैंडपर अपना शासन कायम नहीं रख सके। फिनलैंडपर रूसकी शनिदृष्टि पड़ी। परिणाम इसका यह हुआ

कि रूस और स्विसोंमें कई वर्षों तक लड़ाई होती रही। अन्तमें सन् १८०६ ई० में स्विसोंने रूसको फिनलैंड छोड़ देनेके लिये वाध्य कर दिया। कुछ दिन बाद रूस फिर फिनलैंडपर अपनी छड़ी घुमाने लगा। पर फिनश जातिकी स्वतंत्रता किसी दिन नष्ट नहीं हुई। एक जातिके बाद दूसरी जाति उनपर अपना अधिकार करती आयी, पर उनकी भाषा, साहित्य और शासन-प्रणाली अक्षुण्ण बनी रही। इसीलिये पराधीनताकी ज्वालाका अनुभव उन्होंने पूर्णरूपसे नहीं किया।

सम्मिलित फिनलैंड

रूसके सिंहासनपर तीसरे एलेक्जेण्डरके बैठनेके बादसे गोलमाल मचना आरम्भ हुआ। स्लोवोफिल आन्दोलनकारी यह प्रचार कर रहे थे कि एक धर्म, एक भाषा और एक कानूनसे समस्त रूस साम्राज्यको सुदृढ़ करना होगा। इसी नीतिका समर्थन करके तीसरे एलेकजैण्डर फिनलैंडकी इतने दिनोंकी स्वाधीनता नष्ट करने चले।

यह देखकर फिनलैंडवाले उत्तेजित हो गये। उन्होंने निश्चय किया कि किसी तरह भी हम अपनी स्वाधीनता नष्ट नहीं होने देंगे। सात वर्षों तक फिनलैंडके राष्ट्रीय दल और रूसमें यह वाद-विवाद चलता रहा। फिनलैंडके अन्य राजनैतिक दलोंने भी राष्ट्रीय दलका साथ दिया और सभी सम्मिलित रूपसे देशकी स्वाधीनता-रक्षाकी चेष्टा करने लगे। देशके इस दुर्दिनमें सभी

अपने भेद-भावोंको भुलाकर राष्ट्रीय पताकाके नीचे आकर खड़े हुए। खूब जोरोंका आन्दोलन चलने लगा।

किन्तु फिनलैंडके जनमतको उपेक्षा करके १८९९ सालमें फिनश शासनप्रणालीको लुप्त कर देनेका हुक्म जारी किया गया। फिनशोंकी जातीय सभाको कानून बनानेकी क्षमता जाती रही। फिनलैंडका स्वतन्त्र सेनाविभाग तोड़ दिया गया और फिनश सैनिकोंको रूसी सेना-विभागमें मिला दिया गया। फिनलैंडका रूसी शासनकर्त्ता नियुक्त हुआ। फिनश भाषा हटा दी गयी और उसको जगह बलपूर्वक रूसो भाषाका प्रचार किया गया।

रूसके थपेड़े खाकर फिनश जाति जाग्रत हो उठी। उन्होंने जी-जानसे यह प्रतिज्ञाकी कि चाहे जिस तरहसे हो देशकी स्वाधीनता पुनः प्राप्त करनी होगी।

विद्रोही फिनलैंड

रूस सरकारने भी पूर्ण रूपसे अत्याचार करना शुरू कर दिया। विद्रोह दमनके लिये रूस सरकारने अतिरिक्त पुलिसकी व्यवस्था की। देशभरमें जासूस छा गये। दमननीति खूब जोरोंसे चलने लगी। खानातलाशी, बेकानूनी गिरफ्तारी, बिना विचार निर्वासन एवं समाचारपत्रोंका दमन करना प्रति दिनकी घटना हो गयी।

इतना अत्याचार होनेपर भी फिनलैंड अचल एवं अटल रहा। अन्तमें १९०५ ई०के नवम्बरमें रूसके अत्याचारका प्रतिवाद करनेके लिये समस्त देशव्यापी हड़तालकी घोषणा की गयी। हड़ताल

पूर्णरूपसे सफल हुई। सभी गांव, सभी शहर, सभी दल, सभी प्रकारके शिल्पी, व्यवसायी और किसान मजूर इस हड़तालमें शामिल हुए। रेलवे, स्टीमर, टेलीफोन, पोस्ट आफिस, ट्राम, अन्यान्य सवारियां, गेस कम्पनी, बिजली कम्पनी, दूकानें, स्कूल और कालेज सभी एक साथ बन्द हो गये। छात्रसमाज स्वाधीनताके संग्राममें कूद पड़ा। एक सप्ताहतक हड़ताल रही। रूस शासन तन्त्र बेचैन हो गया। अन्तमें ७ वीं नवम्बरको फिनलैंड स्वाधीन हो गया।

स्वाधीन फिनलैंड

इतनेसे ही फिनलैंड चुप नहीं बैठा रहा। पूर्ण स्वाधीनताके लिये फिर आन्दोलन चलने लगा।

अन्तमें सन् १९१४ ई में यूरोप महासमर छिड़ा। यह सुयोग देखकर फिनलैंडने अपनी चिर दिनकी स्वाधीनता प्राप्त कर ली।



पोलेण्ड



पोलेण्ड एक छोटा-सा राज्य है, किन्तु बहुत प्राचीन कालसे इसके ऊपर अनेक जातियोंकी शनि दृष्टि पड़ती रही है, विशेषकर जर्मनोंकी। पोलेण्डने जर्मनोंसे अपनी रक्षाके लिये बड़ी चेष्टा की, पर अन्तमें वह आत्मरक्षा नहीं कर सका। सन् १२४१ ई०में तातारियोंने रूससे होकर पोलेंडपर हमला किया। पोलेंड एकबारगी ही नेस्तनाबूद कर दिया गया। गांवोंके घर नष्ट-भ्रष्ट हो गये। जमीन बिना जोती-बोई पड़ी रही। जोतने-बोनेवाले आदमी नहीं रहे। फलतः पोलेण्डके जमींदारोंकी आमदनी भी बहुत कम हो गयी।

पोलेंडकी इस दुर्दशाको देखकर झुंड-के-झुंड जर्मनोंने आकर पोलेंडके जमींदारोंसे जमीन बन्दोबस्त करा लिया। इस तरह पोलेण्डके बहुतसे स्थानोंपर जर्मनोंका अधिकार हो गया। एक शताब्दीमें ही जर्मन पोलेण्डमें बड़े शक्तिशाली हो गये। उनके संघर्षमें पड़कर पोलोंकी शक्ति बहुत कुछ क्षीण हो गयी।

ब्लादिश्लेव

पोलेण्डको इस अधःपतनसे मुक्त करनेके लिये चिन्ताशील पोल्स जमींदारोंने संगठित होकर चेष्टा की। उनके नेता हुए

ब्लादिश्लेव। उन्होंने देखा कि पोलेण्डमें चारों ओर अन्धकार छाया हुआ है। यदि बहुत ही शीघ्र पोलेण्डके स्वत्व, स्वार्थ और जातीयताकी रक्षाका बन्दोवस्त नहीं किया जायगा तो वह बहुत जल्द ही पराधीनताकी बेड़ीमें जकड़ जायगा। चारों ओर नूतन जागृतिका सञ्चार हो उठा। ब्लादिश्लेवके नेतृत्वमें कई बार युद्ध हुआ और पोलेण्डका प्राचीन गौरव फिर लौट आया।

काशिमिर

ब्लादिश्लेवके बाद उनके पुत्र काशिमिरने जाति-सङ्गठनका भार लिया। उन्होंने सबसे अधिक शिक्षापर जोर दिया। शिक्षाके बिना स्वदेश-प्रेम अथवा राष्ट्रीयताका ज्ञान नहीं होता न किसी प्रकार सुधार किया जा सकता। देशकी वाणिज्य-व्यवस्था और शिल्पकी उन्नति नहीं होने पाती। शिक्षा ही स्वाधीनता प्राप्त करनेका श्रेष्ठ साधन है। इसीलिये उन्होंने सन् १३६४ ई०में क्राको शहरमें एक विश्वविद्यालयकी स्थापना की। वास्तवमें उन्होंने सब ओरसे पोलेण्डमें नयी जागृति और नवजीवनका सञ्चार कर दिया।

चतुर्थ काशिमिर

पोलेण्डमें इतने दिनोंतक राजतन्त्र शासनप्रणाली थी। चतुर्थ काशिमिरने उसके स्थानपर पार्लमेण्टके ढङ्गपर दो सभाओंकी स्थापना की। एक राजकीय व्यवस्थापिका सभा, दूसरी प्रजावर्गकी व्यवस्थापिका सभा। इस तरह राज्य-शासनमें प्रजाका भी हाथ रहने लगा। किन्तु यह व्यवस्था अधिक दिन तक नहीं

रही। पोलेण्डके भाग्यमें दुःख लिखा था। पोलेण्ड निवासी फिर धीरे-धीरे अशिक्षा, दरिद्रता और अज्ञताके समुद्रमें डूबने लगे।

कोनोटस्की

देशके इस दुर्दिनमें एक महाप्राण मनीषीका आविर्भाव हुआ। उनका नाम था कोनोटस्की। उन्होंने देखा, देशको जगानेके लिये सबसे पहले अशिक्षाको दूर करना होगा। वे देश भरमें शिक्षाका प्रचार करने लगे। चारों ओरसे खूब जोरका आन्दोलन होने लगा। धीरे-धीरे पोलैंडमें पुनः जागरण हो उठा। इधर इस जागरणोन्मुखी देशको दिनोदिन उन्नति देखकर विदेशी राज-शक्तिने अत्याचार करना शुरू कर दिया। फलस्वरूप देशमें विद्रोहकी आग भड़क उठी। यद्यपि वह विद्रोह सफल नहीं हुआ तो भी उससे यह लाभ हुआ कि देशके लोगोंकी आंखें और भी अधिक खुल गयीं, और भी दूने उत्साहसे राष्ट्र-सङ्गठनका काम होने लगा। एक शिक्षा-समितिकी स्थापना करके क्राको डिलान आदि जगहोंमें विश्वविद्यालय खोल दिया गया। बहुतसे स्कूल भी खोले गये। साहित्य, इतिहास, दर्शन, विज्ञान, कृषि आदि विषयोंकी शिक्षाका प्रबन्ध किया गया। इसके अतिरिक्त सेना-संगठनका भी कार्य होने लगा। कहनेका आशय यह है कि स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये जिन साधनोंकी आवश्यकता पड़ती है, उन सबका समुचित प्रबन्ध किया गया। उसके बाद उचित अवसर देखकर खुल्लमखुल्ला रूसियोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी गयी।

वीर कस किवस्को, कलोन्ताज और पतो की—

कसकिवस्को नामक एक साहसी और रणकुशल व्यक्तिको डिक्टेटर बनाया गया। उनके साथ कलोन्ताज और पतोकी आदि प्रमुख नेताओंने योग दिया। युद्ध आरम्भ करते ही इन लोगोंने वार्सको अपने अधिकारमें कर लिया; किन्तु अन्तमें उनकी जीत नहीं हो सकी।

सन् १८३० ई० में फ्रासमें राजविद्रोह उठा। साथ-ही-साथ पोलोंने भी विद्रोह आरम्भ कर दिया। स्वाधीनता प्राप्त करना ही उनका एकमात्र उद्देश्य था। विद्रोहियोंके पास बहुतसे सैनिक और पर्याप्त हथियार थे। रूसी विद्रोहका दमन करने लगे। प्रायः एक वर्षतक पोल लड़ते रहे पर अन्तमें उनकी पराजय हुई। रूस जैसे विशाल देशसे अधिक दिन तक लड़ते रहना कहांतक सम्भव था?

फिर सन् १८४६ में गेलिसियावमें और सन् १८४८ ई० में पोसेनमें पोलोंने विद्रोहकी घोषणा की थी, पर दुर्भाग्यवश किसी भी विद्रोहमें उन्हें सफलता नहीं मिली।

फिर क्या था, रूस और भी भीषण रूपसे अत्याचार करने लगा। पोलेण्ड वालोंकी राष्ट्रीयता नष्ट करनेके लिये रूसने पोलोंकी सब राजनीतिक संस्थाएं, सभा-समितियां, विश्वविद्यालय, स्कूल, कालेज आदि बन्द कर दिये। यहां तक कि उनकी भाषा तकका भी प्रचार बन्द कर दिया गया। सभी पोल युवकोंको रूसी भाषा सीखनेके लिये वाध्य किया गया। अदालतोंमें

रूसी भाषा जारी की गयी। स्वदेशभक्त युवक निर्वासित कर दिये गये। किन्तु इतनी चेष्टा होनेपर भी पोल रूसी नहीं बने, अत्याचारके फलस्वरूप उनमें राष्ट्रीयताके भाव और भी उग्ररूपसे भर गये।

१८५६ ई० में दूसरे आलेकजण्डर जब रूसके सम्राट हुए, तब उन्होंने अत्याचारकी मात्रा कुछ कम कर दी। निर्वासित युवकोंको अपने देश लौट आनेकी इजाजत दी गयी। शासनकी कड़ाई कुछ कम हुई। पोलोंको कृषिसमिति स्थापित करनेकी अनुमति दी गयी। स्वदेश-प्रेमी पोलोंको फिर मिलकर देशकी स्वाधीनता प्राप्त करनेके उपाय सोचनेका मौका मिला। इस बार उन्होंने देखा कि उनके पास सेना नहीं, अस्त्र नहीं, ऐसी दशामें सशस्त्र विद्रोह करना असम्भव है। इस समय एकमात्र रास्ता है, देशवासियोंको जाग्रत करना और संसारको रूसका अत्याचार दिखा देना। सन् १८६० ई० से इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये सभा-समितियां स्थापित होने लगीं। रूसने पोलेण्ड-में राष्ट्रीयताकी आगको पुनः भड़कते देख सभी सभा-समितियों-को गैरकानूनी घोषित कर दिया, पर नेताओंने इस आज्ञाको माना, फलस्वरूप वार्सकी एक सभामें पुलिसने गोली चलायी।

गुप्त समिति

तब गुप्त समितियोंकी स्थापना हुई। एक-एक करके रूसी कर्मचारियोंकी हत्या होने लगी। अन्तमें बाध्य हो कर रूसको पोलेण्ड वालोंको कुछ अधिकार देने पड़े। इससे उत्साहित

होकर नेताओंने सन् १८६३ ई० में खुल्लमखुल्ला विद्रोहकी घोषणा कर दी, फिर रूसकी अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित सेनाके सामने वे टिक नहीं सके। उनकी हार हुई।

स्वाधीन पोलेण्ड

उसके बाद स्वाधीनताका स्वप्न देखते-देखते पोलेण्डके अधिक दिन बीत गये। बीसवीं सदीमें यूरोपीय महासमरके अन्त होनेपर सब राष्ट्रोंने पोलेण्डको स्वाधीनता स्वीकार की। आज पोलेण्ड स्वाधीन देश है।



पुर्तगाल



पुर्तगालका अतीत इतिहास अन्धकारमय है। जो कुछ भी वहांका अतीत इतिहास मौजूद है उससे मालूम होता है कि प्राचीन कालमें पुर्तगाल छिन्न-भिन्न अवस्थामें था। उसका एक भाग लूसितानिया रोमनोंके अधीन और अन्यान्य भाग अन्यान्य राज्योंके साथ शामिल थे।

वीर विरियेथस

दूसरी शताब्दीमें लूसितानियाने रोमनोंके विरुद्ध बगावत की। विद्रोहियोंके नेता थे वीर विरियेथस। विरियेथस अत्यन्त स्वाधीनताप्रिय थे। उनका उद्देश्य था, रोमनोंके हाथसे देशको मुक्त कर स्वाधीन राज्यकी प्रतिष्ठा करना। किन्तु प्रबल प्रतापी रोमनोंने उनकी आशा पूरी नहीं होने दी।

द्वितीय बरमुडो

आठवीं सदीमें अरबोंने पुर्तगालको अपने अधिकारमें कर लिया। दो सौ वर्षों तक उन्होंने वहां राज्य किया। दसवीं शताब्दीमें अरबोंकी शक्ति क्षीण होने लगी। उस समय पुर्तगालके छोटे-छोटे राजा देशको स्वाधीन करनेके लिये चेष्टा करने लगे। गैलिसियाके राजा द्वितीय बरमुडो इस दलके नेता हुए। उन्होंने अरबोंको हरा कर देशके बहुत-से भागको स्वाधीन

कर लिया। शेष भागका उद्धार करनेकी भी वे चेष्टा करते रहे, पर उनकी मनोकामना पूरी भी नहीं होने पायी कि वे चल बसे।

प्रथम अलफेञ्जो

पुर्तगालके सर्वश्रेष्ठ वीर पुरुष थे अलफेञ्जो। जितने दिनतक वह नाबालिग थे, उतने दिनतक उनकी मां उनके नामसे राज्य-शासन चलाती रही। पर जब वह बालिग हुए तब भी उनकी मां राज्य छोड़नेको राजी नहीं हुई। इसलिये उन्हें अपनी माताकी सेनाके विरुद्ध युद्ध करके अपना राज्य अपने कब्जेमें करना पड़ा।

राजा होते ही वे देशोद्धारके काममें लग गये। अरबोंने उस समय पुर्तगालका बहुत-सा भाग अपने अधिकारमें कर लिया था। अलफेञ्जोने अपने देशको अपने हाथमें करनेके उद्देश्यसे अरबोंसे लड़ाई छेड़ दी। युद्धमें बराबर ही इनकी विजय होती रहती। ऐसे ही पराक्रमी योद्धा अलफेञ्जो और उनके सैनिक थे।

एक युद्धमें अरबोंकी सेना असंख्य थी। अलफेञ्जोकी सेनामें अपेक्षाकृत बहुत कम आदमी थे। इसके अतिरिक्त मुसलमानोंकी अपेक्षा वे कमजोर भी थे, किन्तु इन्हीं सैनिकोंको लेकर अलफेञ्जोने मुसलमानोंके छक्के छुड़ा दिये।

एक बार अलफेञ्जो सेनाटरेम दखल करने गये। मुसलमानोंने शहरका दरवाजा बन्द कर दिया। अन्धेरी रात थी और मुसलमानोंकी सेना भी अधिक थी। यह सब देखकर भी

अलफेन्जोने हिम्मत नहीं हारी। कुछ साहसी सैनिकोंको उन्होंने दीवालको खोद डालनेका हुक्म दिया। दीवाल खोद दी गयी और शहरका दरवाजा अनायास ही खुल गया। उस दिन रातको सड़कोंपर मुसलमानोंके रक्तकी नदियां बह चलीं। इस तरह अलफेन्जोंने पुर्तगालके बहुतसे स्थानोंको मुसलमानोंके हाथसे मुक्त कर दिया।

१६४० का विद्रोह और वीर नारी लुइजा

१५८१ ई० में स्पेनने पुर्तगालपर अपना अधिकार जमा लिया। अधिकार जमानेके साथ ही स्पेनने पुर्तगालपर असह्य अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। बहुत वर्षों तक पुर्तगाल स्पेनका अत्याचार सहता रहा, पर अन्तमें पुर्तगाल निवासी ऊब गये। फलस्वरूप सन् १६३४ ई०में लिसबनमें स्पेनके विरुद्ध एक छोटीसी लड़ाई हो गयी। किसी प्रकार स्पेन उस युद्धमें संभल गया। तीन वर्ष बाद सन् १६३७ में इवोरामें फिर दूसरी लड़ाई हुई। इस बार भी स्पेनका आसन नहीं डिगा।

सन् १६४० ई० में स्पेन और फ्रान्समें लड़ाई छिड़ गयी। उस समय स्पेनके राजसिंहासनपर माण्टूयाकी डचेस थी। यह मौका देखकर पुर्तगीजोंने स्पेनके विरुद्ध विद्रोहकी घोषणा कर दी।

इस विद्रोहके नेता हुए ब्रागण्डोके ड्यूक जान। वे कुछ आलसी प्रकृति थे, पहले वह आगे बढ़ना नहीं चाहते थे। पर उनकी पत्नी लुइजा दि गुजमैनने उन्हें उत्साहित कर विद्रोहियोंका

अग्रणी बनाया। पर वास्तवमें वही नायिका थी। जोया और पिण्डोरिवेरियोंने भी विद्रोहियोंका एक दल लेकर उनका साथ दिया।

पहली दिसम्बरको विद्रोह आरम्भ हुआ। विद्रोहियोंने अच्छी-अच्छी जगहोंपर कबजा कर लिया, और लिसबनमें एक स्थायी राष्ट्रको स्थापना की। सेनापति हुए लिसबनके आर्क विशप रोड्रिगो-ला-कुनहा।

पहली दिसम्बरको जानको राजसिंहासनपर बैठाया गया। किन्तु स्पेन पुर्तगालको सहजमें ही छोड़ना नहीं चाहता था। बहुत दिनोंतक दोनोंमें संघर्ष चलता रहा। अन्तमें सन् १६६२ ई० में स्पेनको पुर्तगालकी स्वाधीनता स्वीकार करनेको वाध्य होना पड़ा।

गणतन्त्रकी स्थापना

शिक्षा-विस्तारके साथ-साथ पुर्तगोजोंने और-और विषयोंकी ओर भी ध्यान दिया। फ्रान्सके राजविद्रोहको सुनकर उन्होंने भी राजतन्त्रके विरुद्ध एक दल तैयार किया। कई स्थानोंमें युवकोंने क्लबोंकी स्थापना कर आंदोलन आरम्भ कर दिया। किन्तु पुलिसने युवकोंको गिरफ्तार करके आन्दोलनको दबा दिया।

इसी बीच अङ्गरेज भी पुर्तगालमें आकर अपना अड्डा जमाने लगे। फिर पुर्तगोज चौकन्ने हो गये। १८१७ ई०में फिर सशस्त्र विद्रोह हुआ। इस विद्रोहके नायक हुए जेनरल जोजेफ फ्रियार

दि० आन्द्रे, किन्तु वे थोड़े ही दिनोंमें शत्रुओंके हाथोंमें पड़कर मारे गये।

१८२० ई० में फिर अपोर्टोमें विद्रोह हुआ। विद्रोहकी आग क्रमशः दक्षिणकी ओर बढ़ती गयी। अंगरेज अपनी जान लेकर पुर्तगालसे भागे। १८२६ ई० में विद्रोहियोंने राजतन्त्रका मूलोच्छेद कर नूतन राष्ट्रतन्त्रको स्थापना की जिसमें प्रजावर्गका अधिकार पूर्णरूपसे स्वीकार किया गया।

बीसवीं सदीके आरम्भमें पुर्तगालमें गणतन्त्रका आन्दोलन खूब जोरोंसे चला। इस आन्दोलनके फलस्वरूप सन् १९०८ में पुर्तगालमें फिर विद्रोहके आसार दिखाई देने लगे। १ ली फरवरीको राजा, रानी और युवराज लिसबनकी एक सड़कपर एक गाड़ीमें बैठे जा रहे थे। गाड़ी ज्योंही एक मोड़पर पहुंची त्योंही एक विद्रोहीने गाड़ीके पावदानपर खड़ा होकर राजाको गोलीसे मार दिया और पकड़े जानेके पहले ही उसने स्वयं भी अपनेको गोली मार ली। युवराजको मैन्युअल व्यूका नामक एक व्यक्तिने गोलीसे मार दिया। गिरफ्तार होनेपर उसको फांसी हो गयी। विद्रोहियोंने इन दोनों वीर पुरुषोंको जातीय वीर कहकर घोषित किया।

सन् १९१० ई०में गणतन्त्रकी स्थापना हुई। नवगठित गणतन्त्रके सभापति हुए डाक्टर मैन्युअल आरि आगा। उसी समयसे पुर्तगालमें गणतन्त्र शासन-प्रणाली चल रही है।

नारवे



राजनीतिक सुविधाके लिये नारवे डेनमार्कके साथ शामिल हुआ था ; किन्तु इस मिलनेका फल बहुत बुरा हुआ। डेन नारवेके साथ मनमाना बर्ताव करने लगे। अन्तमें उन्होंने १८१४ ई०में नारवेको स्वीडेनको दान कर दिया।

स्टर्थिङ्ग

यह देखकर नारवे-निवासी अवाक रह गये। उन्होंने कहा—डेनोंको क्या अधिकार है कि उनके देशको स्वीडेनको दान कर दें। तब सब प्रदेशोंके प्रतिनिधियोंने मिलकर स्थिर किया कि वे स्वाधीन रूपसे रहेंगे और उनकी शासन-पद्धति होगी अमेरिका अथवा फ्रान्सके ढङ्गपर। उनकी एक जातीय महासभा होगी जिसका नाम होगा स्टर्थिङ्ग। स्टर्थिङ्गको ही कानून बनानेका अधिकार होगा। १७ मईको इस सभाका संगठन हुआ था। फल यह हुआ कि नारवेको डेनमार्क और स्वीडेनके साथ कई बार लड़ाई लड़नी पड़ी। अन्तमें नारवे स्वीडेनकी नाममात्र अधीनता स्वीकार करनेको राजी हुआ। स्वीडेनने भी इस शर्तको स्वीकार कर लिया।

स्वाधीनता दिवस

किन्तु स्वीडेनने बहुत दिनतक इस शर्तका पालन नहीं किया। नारवेको इतने दिनोंतक स्वाधीनता भोग करते देख उनसे नहीं रहा गया। वे शीघ्र ही उसकी स्वाधीनता नष्ट करनेकी चेष्टा करने लगे।

१७ मई नारवेके लिये महान दिवस था। इसी दिन उसकी नवीन स्वाधीनताका आरम्भ हुआ। इसीलिये वे आज भी प्रति वर्ष उस दिनको बड़ा उत्सव मनाते हैं। १८१८ ई० में अकस्मात् उन्हें यह हुक्म मिला कि १७ मईको वे कोई उत्सव नहीं मना सकते। इस अन्यायपूर्ण हुक्मको सुनकर सारा देश चञ्चल हो उठा। उन्होंने निश्चय किया कि वे किसी तरह भी इस हुक्मको नहीं मानेंगे। जनतामें उत्तेजना देखकर दमन करनेके लिये हजारों सैनिक नियुक्त किये गये। तब जातीय नेताओंने उस सालका उत्सव बन्द कर दिया।

नेताओंके पराजय स्वीकार करनेसे तरुण समाज चञ्चल हो उठा। उनका रक्त गर्म था। वे मृत्युका भय नहीं करते थे। उन्होंने निश्चय किया कि वे कभी भी इस अपमानको सहन नहीं करेंगे। जब भयभीत होकर नेता पीछे हट गये तब नूतन आदर्श लेकर तरुण छात्र आगे बढ़े। उन्होंने उच्च स्वरमें प्रतिज्ञा की कि सैनिकोंकी गोलीसे प्राण भले चले जायं, पर हम पराजय नहीं स्वीकार करेंगे। हम खुलेआम खुले स्थानमें अपना राष्ट्रीय उत्सव मनाना चाहते हैं।:

१७ मईको एक अपूर्व दृश्य दिखाई दिया। राह-राह, गली-गली, हाट-बाजार सर्वत्र आनन्द-उत्सव मनाया जा रहा है। स्वाधीनताकी जय मनायी जा रही है। जातीय गान गाया जा रहा है। आबाल वृद्ध-वनिताके हाथोंमें राष्ट्रीय पताका फहरा रही है। सैनिकोंने उत्सवमें मस्त स्त्री-पुरुषोंपर गोलियां चलायीं। अपनी छातीका रक्त दे-देकर नारवेके छात्रोंने अपने राष्ट्रीय सम्मानकी रक्षा की।

चारण कवि बर्जिलैंड

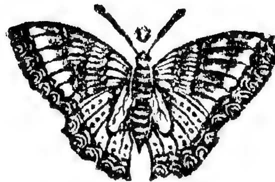
सारा देश जाग उठा। केवल धनी अथवा उच्च श्रेणीके ही लोग नहीं प्रत्युत देशके वास्तविक निवासी किसान और मजूरोंमें भी नयी लहर फैल गयी। किसानों और मजूरोंका ही सच्चा राष्ट्रीय दल हुआ। वे पूर्ण स्वाधीनता चाहते थे।

जातीय साहित्यके द्वारा जातीय दलके आदर्शोंका प्रचार होने लगा। इसी जातीय दलके सुविख्यात कवि थे बर्जिलैंड। अपनी कविता और गायनसे उन्होंने देशवासियोंकी नस-नसमें राष्ट्रीय भावोंको कूट-कूट कर भर दिया।

स्वाधीनताका आन्दोलन

पहले पहल अनेक विघ्नबाधाओंके उपस्थित होते हुए भी यह जातीय दल क्रमशः विजय पाता गया। अन्तमें जातीय दलने स्टर्थिंग सभापर अधिकार जमा लिया। उसके बाद एक-एक करके सभी लुप्त अधिकार प्राप्त किये जाने लगे।

स्वीडेनने नारवेको अपनी जातीय पताकाको हटाकर स्विस झण्डेका व्यवहार करनेके लिये वाध्य किया था। इस बार फिर नारवेकी जातीय पताका घर-घर उड़ने लगी। स्वीडेनसे एक गवर्नर नारवेका शासन करने आया करता था, इस बार वह पद हटा दिया गया। इसी प्रकार नारवेने अन्तमें १६०५ ई० में पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त कर ली।



हालैण्ड

हालैण्डमें कई तरहकी जातियां निवास करती हैं। प्राचीन कालमें इन जातियोंमें बिल्कुल एकता नहीं थी। इसलिये विदेशी बाहरसे आ-आकर इनपर शासन करते थे।

शिविलो

पहले हालैण्ड रोमके अधीन था। हालैण्ड देश निवासी शिविली नामक एक योद्धा रोममें काम करते थे। उनके समान वीर और साहसी पुरुष उस जमानेमें अधिक नहीं थे। उन्हें यह कभी सह्य नहीं था कि उनका देश रोमके पैरों तले कुचला जाय। उन्होंने अपने देशको स्वाधीन करनेकी प्रतिज्ञा कर ली थी। इसी उद्देश्यसे वे राजधानीमें गये थे। वहां जाकर वे युद्ध-कौशल तथा रोमनोंकी गुप्त बातें आदि जानने और सीखने लगे। अकस्मात् रोमनोंको उनपर सन्देह हुआ। वे रोमसे अपने देश भाग आये। आते ही उन्होंने अपने देशवासियोंसे कहा कि भाइयो, रोमनोंको यहांसे भगाये बिना हमारी उन्नति नहीं हो सकती। इसके लिये हम सबको अपने भेदभावोंको भुलाकर एक होना पड़ेगा। एकता स्थापित हुए बिना हम रोमनोंको भगा नहीं सकेंगे। आओ, हम सब हालैण्ड-निवासी एक होकर स्वाधीनता-संग्रामको चलावें।

शिविलीके आह्वानसे सारा देश एक होकर शत्रुओंके विरुद्ध खड़ा हो गया। शिविली अपने देशको मुक्तिपथपर ले चले।

सम्मिलित हालैण्ड

पर हालेण्डको यह एकता स्थायी नहीं रही। नीति और धर्मको लेकर हालेण्ड सैकड़ों टुकड़ोंमें विभाजित हो गया। फिर विदेशियोंने हालैण्डपर आंख गड़ाना शुरू कर दिया। अन्तमें स्पेनने हालैण्डको अपने अधीन कर लिया।

इसी समय हालैण्डमें स्वाधीनताप्रिय विलियमका आविर्भाव हुआ। वे शिविलीके आदर्शपर देशको स्वाधीनता मंत्रसे दीक्षित करने लगे। विछिन्न देश क्रमशः एकता-सूत्रमें आबद्ध होने लगा। जब सारा देश एक हो गया तब विलियमने स्वाधीनताकी घोषणा कर दी। स्पेनने देखा कि विलियमको दबाये बिना हालैण्डको हाथमें रखना असम्भव हो जायगा। इसलिये उसने भेद नीतिसे काम लिया। ईसाइयोंमें दो दल हैं—कैथलिक और प्रोटेस्टेण्ट। स्पेन केथलिक था, इसलिये उसने हालैण्डके कैथलिकोंको प्रोटेस्टेण्टोंके विरुद्ध उभाड़ दिया। सरकारी सेना हजारों प्रोटेस्टेण्टोंको बड़ी नृशंसतासे मारने लगी। फिर देश दो भागोंमें बँट गया।

विलियम प्रोटेस्टेण्ट थे। उन्होंने देशके इस अधःपतनसे दुःखित हो केथलिकोंकी आशा छोड़ दी। देशके उत्तरी भागमें प्रोटेस्टेण्टोंका निवास था। अन्तमें विलियमने उत्तरी हालैंडमें प्रोटेस्टेण्टोंकी सहायतासे स्वाधीन राज्यकी स्थापना की।

तब स्पेनने विलियमके सिरके लिये पुरस्कार देनेकी घोषणा की। अन्तमें एक देशद्रोहीके हाथसे विलियम मार डाले गये।

स्वाधीन हालैण्ड

किन्तु विलियमका प्राणदान व्यर्थ नहीं हुआ। १५८४ ई० में उनकी हत्या की गयी और उनके चलाये हुए आन्दोलनके फलस्वरूप १६४८ ई०में स्पेनको हालैण्डकी स्वाधीनता स्वीकार करनेको बाध्य होना पड़ा। उसी समयसे आज तक हालैण्ड स्वाधीन है। वहांकी प्रजातंत्रात्मक शासन-प्रणाली है।



बेलजियम



बेलजियमका पुराना इतिहास भी हालैण्डकी ही तरह अन्धकाराच्छन्न है। स्पेनके अत्याचारसे जर्ज्जरित हो सन् १५४७ ई० में बेलजियम निवासियोंने विद्रोहकी घोषणा की। स्पेनने इस विद्रोहका दमन करनेके लिये बड़ी चेष्टा की। पर फल उलटा ही हुआ। विद्रोह दमन कहांसे होगा, उत्तरोत्तर बढ़ने ही लगा। १५५५ ई० में इस विद्रोहके परिणामस्वरूप सम्राट चार्ल्सको सिंहासन छोड़ देना पड़ा।

चार्ल्सके बाद फिलिफ सम्राट हुए। फिलिफने अत्याचारकी मात्रा और भी बढ़ा दी। परिणाम यह हुआ कि विद्रोहकी आग और भी विकराल रूपसे जलने लगी। अन्तमें सन् १५८१ ई० में उसने स्वाधीनताकी घोषणा कर ही दी।

विद्रोही बेलजियम

किन्तु वह अपनी स्वाधीनता अधिक दिनतक सुरक्षित नहीं रख सका। अठारहवीं सदीमें आस्ट्रियनोंने बेलजियमपर अधिकार जमा लिया। इसी समय बेलजियममें विद्रोही वीर आनिशनका आविर्भाव हुआ। उन्होंने देशभरमें स्वाधीनताके संदेशका प्रचार कर दिया। शक्तिशाली नेताके आदेशसे पीड़ित बेलजियम जाग उठा। सारा देश युद्ध करनेके लिये तैयार हो गया। सन् १७२०

ई० में ब्रसेलमें खुल्लमखुल्ला विद्रोहकी घोषणा कर दी गयी। किन्तु दुर्भाग्यवश विद्रोहके नेता आनिशेन गिरफ्तार कर लिये गये। आस्ट्रियनोंने बड़ी निष्ठुरतासे उनकी हत्या कर डाली। विद्रोह तो दब गया, पर सारा बेलजियम आनिशेनकी हत्याकी प्रतिहिंसा लेनेके लिये एक वृहत विद्रोह करनेकी इच्छासे तपस्या करने लगा।

सन् १७८९ ई० में फ्रान्सके राज-विप्लवके साथ-साथ बेलजियमकी भी दबी आग भड़क उठी। बेलजियमने स्वाधीनताकी घोषणा कर दी। फ्रेञ्च विद्रोहियोंने बेलजियमका पक्ष लिया। अन्तमें सन् १७६०में आस्ट्रियाने बेलजियमको स्वाधीन कर दिया।

स्वाधीन बेलजियम

एक साल बीतने पर रक्षक ही भक्षक बन बैठे। अब फ्रान्सने बेलजियमको अपने अधीन कर लिया। उसके बाद सन् १८१५ ई०में हालेंडने बेलजियम पर अपना आधिपत्य जमाया। फिर बेलजियम अपनी स्वाधीनता खोकर पराधीन हो गया। पर एक बार जिसे स्वाधीनताका स्वाद मिल चुका, फिर क्या वह पराधीन रह सकता है?

बेलजियमके युवकोंने फिर विद्रोहका झंडा खड़ा कर दिया। फिर बेलजियमपर तरह-तरहके अत्याचार होने लगे। विद्रोही पकड़-पकड़कर जेलोंमें ठूंस दिये जाने लगे। किन्तु बेलजियम अपनी मुक्ति-साधनामें अटल रहा। अन्तमें उसके मुक्त होनेका सुअवसर आ पहुंचा।

सन् १८२८ ई०में दो स्वाधीनताकामी दलोंने सम्मिलित रूपसे विद्रोहका आयोजन किया। सन् १८३० में पेरिसमें राष्ट्रविप्लव आरम्भ हुआ। उसी समय बेलजियमने भी विद्रोह कर दिया। ब्रसेल विद्रोहियोंका प्रधान अड्डा था। वहां खूब जोर शोरसे विद्रोह छिड़ गया। विदेशी शासकोंने कठोर दमन नीतिका आश्रय लिया। राष्ट्रीय पत्रोंका प्रकाशन बन्द कर दिया गया। अनेक लेखक और विद्रोह-प्रचारक निर्वासित कर दिये गये। किन्तु विद्रोहकी आग किसी तरह भी शान्त नहीं हुई। इतनी कड़ाई होनेपर भी लामिडेट नामक एक विद्रोहात्मक नाटक खेला गया। उस नाटकमें हालैण्डके अत्याचारोंका नग्न चित्र चित्रित किया गया था। थियेटर हालमें इतने दर्शक एकत्र हुए थे कि तिल धरनेको भी जगह नहीं थी। नाटक देखकर लोग उत्तेजित हो उठे। वे उन्मत्त हो झुण्डके-झुण्ड बाहर सड़कपर निकल आये। असंख्य नर-नारियोंने उस दलमें योगदान किया। विद्रोही सरकारी कर्मचारियोंके घर विध्वंस करने लगे। पुलिस अथवा सेनाकी हिम्मत नहीं पड़ी कि उनको रोके।

ब्रसेलकी यह विद्रोहाग्नि बेलजियमके सारे शहरों और गांवोंमें फैल गयी। विद्रोहियोंने स्वाधीनताकी घोषणा करके अपने देशका शासन अपने हाथोंमें ले लिया तभीसे आजतक बेलजियम स्वाधीन है।

फ्रांस



वीरांगना जोन आफ आर्क

यदि कोई पूछे कि संसारमें अब तक जितनी स्त्रियोंने जन्म लिया है उनमें सर्वश्रेष्ठ वीराङ्गना कौन है, तो हम उसी क्षण उत्तर देंगे कि जोन आफ आर्क। स्वाधीनताके मन्दिरमें यदि किसीकी मूर्ति स्थापित की जा सकती है तो वह फ्रांसकी वीराङ्गना जोन आफ आर्ककी।

पन्द्रहवीं शताब्दीके प्रथम भागकी बात है। उस समय इगलैंडने फ्रान्सके आधे हिस्सेको अपने कब्जेमें कर लिया था। उस समय फ्रान्स निवासियोंमें भी आपसमें बड़ी कलह चल रही थी। इसीलिये वे एक होकर अङ्गरेजोंके विरुद्ध खड़े नहीं हो सकते थे। बर्गोण्डके ड्यूकने अंगरेजोंका पक्ष लिया। पेरिस आदि बड़े-बड़े शहर अङ्गरेजोंके प्रभुत्वके केन्द्र हो गये। देशके वास्तविक अधिपति राजकुमार डफिन भागकर इधर-उधर घूमने चले गये। इसके सिवा वे विलासी, अकर्मण्य, व्यक्तित्वहीन, काठकी पुतलीकी तरह थे। इसलिये फ्रांसके मुक्त होनेकी कोई आशा नहीं रही। फ्रांसके स्वाधीनता-सूर्यको काले बादलोंने ढक लिया।

उसी समय वीरांगना जोन आफ आर्कका जन्म हुआ। छोटी ही उमरसे जोन देशकी दुरवस्थाका चित्र अपनी आंखोंसे देखने

लगी। जिस प्रकार भूखा बच्चा बड़े चावसे भोजन खाता है, उसी प्रकार जोन अपने देशके पहाड़ और नद-नदियोंको देखने लगी।

अपने पिताके साथ वह खेतमें धान काटने जाती और वहीं देशकी बात सोचती रहती।

ग्राम्य—जीवन, कठिन परिश्रम, और दिव्य अन्तर्दृष्टिने उसके चरित्रको सुन्दर और सबल बना दिया। उसकी मां भी ७सीकी ही तरह थी। जब काम-काजसे छुट्टी मिलती तो वह जोनको कहानियां सुनाती। कैसी कहानियां?—स्वाधीनता, वीरत्व और आत्मत्यागकी कहानियां। माताके अग्निमय वचन जोनकी नस-नसमें प्रवेश कर गये।

इस वीरत्वके साथ जोनके हृदयमें भगवानकी दिव्य ज्योतिका भी प्रकाश हुआ। जोन रात-दिन भग वानकी प्रार्थना करने लगी। उसको प्रार्थना अपने लिये नहीं होती थी, बल्कि सारे देशके लिये।

भगवानने भो उसकी प्रार्थना सुनी। उसके अन्तस्तलमें भगवानकी यह दिव्य वाणी सुनाई दी, जोन उठो, जागो और अपने देशको जगाओ, अपनी जातिको स्वाधीन करो। भगवानकी यह वाणी इतनी स्पष्ट इतनी अग्निमय थी कि जोन चंचल हो उठी। उस समय उसकी अवस्था केवल तेरह वर्षकी थी। उसने अपने माता-पितासे अपने हृदयकी बात खोलकर कही। किन्तु किसीने भी उसकी बातका विश्वास नहीं किया।

किन्तु जब मनुष्यके हृदयमें भगवानका आदेश जाग उठता

है, तब वह विश्वास और अविश्वासके द्वन्द्वसे दब नहीं जाता। जोनके सामने तो भगवानका आदेश और भी स्पष्ट होने लगा। दो तीन वर्षतक उसके हृदयमें भगवानकी वाणी हलचल मचाती रही। अब जोनको विश्वास हो गया कि फ्रान्सको अंगरेजोंके हाथोंसे मुक्त करनेके लिये ही भगवानने उसे यहां भेजा है।

जोनकी तरह जो लोग भगवानकी करुणाके पात्र होते हैं, उनकी एक और आंख खुल जाती है। वह आंख कहां होती है, मालूम नहीं, पर वह बड़ी शक्तिशाली होती है। हम जिस चीजको इन चर्म-चक्षुओंसे नहीं देख सकते, वह उस दिव्य नेत्रसे साफ-साफ दिखाई देती है। जोनकी वह आंख खुल गयी थी। वह किसी भी घटनाका भूत, भविष्य अथवा फलाफल बतला सकती थी। फ्रान्सकी स्वाधीनताका चित्र भी उसकी आंखों-के सामने स्पष्ट दिखलाई देने लगा।

अन्तमें जोनने राजकुमार डेफिनसे मिलकर उन्हें भगवानका आदेश सुनानेका निश्चय किया। इसी उद्देश्यसे वह एक दिन डेफिनके पास गयी। उसने जोनकी बातका विश्वास नहीं किया। उसने समझा, जोनका दिमाग खराब हो गया है।

तब जोनने अपनी बातकी सत्यताको प्रमाणित किया। उस समय अंगरेजों और फ्रान्सीसियोंमें एक छोटीसी लड़ाई छिड़ी हुई थी। युद्धके फलाफलकी खबर आनेके एक सप्ताह पहले जोनने ठीक-ठीक बतला दिया कि इस युद्धमें फ्रान्सकी हार होगी। और भी कितनी ही असाधारण बातें बतलायीं। एक

सप्ताह बाद वहांसे जो समाचार आया, वह जोनकी बातसे अक्षरशः मिल गया। तब डेफिनका जोनके ऊपर विश्वास हुआ। उन्होंने जोनको एक सेना दी। उस सेनाको लेकर जोनने असीम उत्साह और वीरत्वसे कई बार अंगरेजोंको हराया। जोनके पराक्रमसे फ्रान्स स्वाधीन हो गया। राजकुमार डेफिन फ्रान्सके सिंहासपर बैठे।

इस शक्तिशालिनी वीर महिलाके डरसे अंगरेज थर-थर कांप रहे थे। पीछे अंगरेजोंने जिस पैशाचिकतासे उस वीर रमणीके ऊपर अत्याचार किया उसे सुनकर आंखोंसे आग निकलने लगती है।

एक युद्धसे लौटनेपर शहरमें प्रवेश करते हुए जोनने देखा कि शहरका दरवाजा बन्द है। नगर-रक्षकोंने विश्वासघात करके जोनको शहरमें नहीं जाने दिया। वह बर्गण्डीके ड्यूकके पंजेमें पड़ गयी। इस देशद्रोही ड्यूकने जोनको अङ्गरेजोंके हाथ बेच दिया। जोनको हाथमें पाकर अङ्गरेज बौखला उठे। उसपर मामला चलाया गया। स्वदेशभक्त वीर रमणी जोनपर उन्होंने डायन होनेका अभियोग लगाया। इसी अपराधमें वह जलाकर मार डाली गयी। जोनने हँसते-हँसते अपने प्राण दे दिये और अंगरेजोंपर भगवानके शापका पहाड़ टूटा। थोड़े ही दिनोंमें उन्हें फ्रान्सको छोड़ देनेके लिये बाध्य होना पड़ा। आज भी अंगरेजोंके माथेपर कलंकका टीका लगा हुआ है।

जोनकी मृत्युके बाद फिर उसके अभियोगका विचार हुआ। उस समय देखा गया कि जोन बिलकुल निर्दोष थी।

फ्रेंच-विप्लव

एक समय ऐसा था जब थोड़ेसे आदमी संसारका सब धन, ऐश्वर्य अपने हाथोंमें करके अधिक लोगोंको अपने पांवोंके नीचे दबाकर रखते थे। इन्हीं कुछ आदमियोंके बुद्धिबल, शास्त्रबल और अत्याचारने मनुष्यको दासत्वके पङ्कमें डुबो दिया। सब देशोंमें थोड़े बहुत अन्तरके साथ यही प्रथा प्रचलित थी। राजाकी स्वेच्छाचारिता प्रजाकी स्वाधीनताको कुचलकर मार डालती थी।

इस स्वेच्छातन्त्र शासनके दासत्वसे मनुष्यको मुक्त करनेका रास्ता फ्रेञ्च-विप्लवने ही निकाला। इसी विप्लवने पहले पहल राजाके स्वेच्छाचारको धूलमें मिलाकर साम्य, मैत्री और स्वाधीनताका सन्देश संसारको सुनाया। फ्रेञ्च विप्लवके बाद ही संसारमें आधुनिक स्वाधीनताका आन्दोलन छिड़ा। संसारके जिन-जिन देशोंमें जनता थोड़े से लोगोंके हाथोंमें पिसी जा रही थी, फ्रेञ्च विप्लवके बाद उन देशोंमें भी विद्रोहकी भेरी बज उठी।

इस विप्लवका बीजारोपण किया मनटेस किउ, वाल्टेयर, हाल बैक, रूसो आदि ऋषियोंने और नेता हुए डाण्टन, रवस्पियर आदि वीर पुरुष।

उसी दिनसे आजतक फ्रान्समें प्रजातंत्र शासन-प्रणाली स्थापित है।

आयर्लैण्ड

आयर्लैण्डके इतिहासको हम एक शब्दमें स्वाधीनताका इतिहास कह सकते हैं। प्राचीन कालमें जब आयर्लैण्डमें डेन समुद्री डाकुओंका उत्पात था, तभीसे आजतक आयरिश जाति स्वाधीनताके लिये युद्ध करती आ रही है।

ब्रियान बरु

पन्द्रह वर्षका बालक ब्रियान बरुने डेनोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की। पहले तो आयरिश हार गये। सबने डेनोंकी अधीनता स्वीकार कर ली। केवल ब्रियान बरु और उसके अठारह साथियोंने पराधीनता स्वीकार करनेकी अपेक्षा वनवास करना ही श्रेयस्कर समझा। वे अपने देशको छोड़कर वनमें चले गये। उसके बाद ब्रियान बरु जङ्गलमें छिप-छिपकर डेनोंसे गोरिला युद्ध करने लगा। बिजलीकी तरह वनमेंसे निकलकर वह डेनोंपर टूट पड़ता और बिजलीकी तरह फिर वनमें छिप जाता। डेन वनका कोना-कोना छान लेते, पर वे ब्रियानबरु और उसके साथियोंको खोज नहीं पाते। अन्तमें डेन ब्रियानके नामसे थर-थर कांपने लगे। मौका पाकर बरुने डेनोंके विरुद्ध फिर युद्धकी घोषणा की। इस बार डेन पराजित होकर भाग गये।

विद्रोहका प्रथम युग

उसके कुछ ही वर्ष बाद आयर्लैण्ड अङ्गरेजोंके हाथोंमें पड़ा। घरमें एक जगह आग लगनेसे जिस तरह वह धीरे-धीरे सारे घरको जलाने लगती है उसी प्रकार अङ्गरेजोंके अत्याचारकी अग्नि सारे आयर्लैण्डमें फैल गयी। झुण्ड-के-झुण्ड अङ्गरेज आयर्लैण्डमें आकर अत्याचार करने लगे।

यदि कोई अङ्गरेज किसी आयरिशका खून भी कर देता तो यह उसका अपराध नहीं गिना जाता। आयरिशोंकी भू-सम्पत्तिपर अधिकार जमाना ही अंगरेजोंका एकमात्र उद्देश्य था। उनके साथ जाल, फरेब, अन्याय कुछ भी करनेमें वे जरा भी हिचकिचाते नहीं थे। फलस्वरूप आयरिशोंमें विद्रोहाग्निका संचार हुआ। अंगरेजोंको देशसे भगानेके लिये अनेक दलोंकी सृष्टि हुई।

तब अंगरेज और भी अधिक अत्याचार करने लगे। आयरिशोंको उनके घरोंसे निकाल-निकालकर उनमें अंगरेजोंको बसाने लगे। आयर्लैण्डका एक भाग आयरिशोंसे खाली हो गया। अंगरेज न्याय-विचारको पावों तले दबाकर आयर्लैण्डको निगलने लगे। उनकी जमीन हड़पनेके लिये अंगरेजोंने एक फन्दा तैयार किया। रानी एलिजाबेथने यह नियम बनाया कि स्कूलों और गिरजोंमें आयरिश-भाषाका व्यवहार नहीं हो सकता। उसके बाद आयरिश पहनावा, रहन-सहन, धर्म आदिके ऊपर भी ऐसी ही निषेधाज्ञा जारी होने लगी। स्कूलों और

कालेजोंमें ऐसी शिक्षा दी जाने लगी जिससे आयरिश अपनेको छोटे और अंगरेजों बड़ा मानना सीखें।

इसके विरुद्ध जो कोई विद्रोह करता, उसकी सम्पत्ति जप्त कर ली जाती और उसकी जानके लाले पड़ जाते। अनेक स्वदेशप्रेमी वीरोंने इसके प्रतिवादमें अपने प्राण गँवाये।

इसी प्रकार वर्षके बाद वर्ष बीतने लगा। अङ्गरेजोंने आयरिशोंपर इतना अधिक कर लगा दिया कि देशमें दुर्भिक्ष छा गया। झुण्ड-के-झुण्ड लोग देशको छोड़कर अमेरिका चले जाने लगे।

इसके कुछ दिनोंके बाद ही अमेरिका अङ्गरेजोंको हराकर स्वाधीन हो गया। यह देखकर आयरिश युवक-चञ्चल हो उठे। अमेरिका जब अङ्गरेजोंको भगाकर स्वाधीन हो सकता है तो वे क्यों नहीं स्वाधीन हो सकते? इसी प्रकार मुक्तिकी आशासे उत्साहित होकर संगठित आयरिश नामक एक दलकी सृष्टि हुई। सैकड़ों स्वाधीनता-प्रेमी युवक उस दलमें सम्मिलित हुए। किस प्रकार देशको स्वाधीन किया जाय, वे दिन-रात यही सोचने लगे। कुछ ही दिन बाद फ्रेंच राज-विप्लव छिड़ा, आयरिश युवक फ्रांसमें जा-जाकर विद्रोहका कौशल सीखने लगे और यह भी चेष्टा होने लगी कि फ्रांस आयरिशोंको सहायता दे।

सन् १७९४ ई०में अङ्गरेज इस दलका दमन करने लगे। तब सङ्कुटित आयरिश दल गुप्त समितिमें परिणत हो गया। समितिका काम खूब जोरोंसे चलने लगा। सन् १७९५ ई० में

लार्ड एडवर्ड फिजरैल्ड भी इस दलमें सम्मिलित हो गये। इस दलके एक और विख्यात नेताका नाम था डलफटन।

सन् १७९८ में अङ्गरेजने फिजरैल्ड आदि प्रमुख नेताओंको गिरफ्तार कर कठोर दण्ड देना शुरू किया। फलस्वरूप देश विद्रोही हो उठा। आयरिश युवकोंने विद्रोहका झण्डा हाथोंमें लिया। यद्यपि विद्रोही विजयी नहीं हुए तो भी उन्होंने अंगरेजोंको नेस्तनाबूद कर दिया।

विद्रोहके असफल होनेपर भी समिति भंग नहीं हुई। युवक राबर्ट एमेट स्वाधीनताका सन्देश लेकर उठ खड़े हुए। उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति लगाकर युद्धके लिये हथियार इकट्ठे किये। जिस दिन युद्ध आरम्भ करनेकी बात थी उस दिन उनके अस्त्रागारमें आग लग गयी। इसके सिवा उनके दलके अनेक लोग उच्छृङ्खल हो गये। इसीलिये उनकी आशा पूर्ण नहीं हुई। अंगरेजोंने उन्हें और उनके बहुतसे साथियोंको गिरफ्तार करके फांसीपर लटका दिया।

उस समय आयर्लैण्ड भरमें तरह-तरहकी समितियां स्थापित होने लगीं। चारों ओरसे आयरिश जाग्रत हो उठे। बहुत-सी गुप्त समितियां स्थापित हुईं। सैकड़ों अंगरेज कर्मचारी गुप्त-रूपसे मारे डाले जाने लगे। इंगलैण्डमें भी जाकर गुप्त समिति के सदस्य अंगरेजोंकी हत्या करने लगे। आयरिश अंगरेजी भाषाको छोड़कर फिर अपनी जातीय भाषाका प्रचार करने लगे। सन १८९३ ई० में हाइडने गेलिक लीग स्थापित करके

आयरिश जातीय भाषाका प्रचार आरम्भ किया। फल यह हुआ कि देशमें राष्ट्रीयताकी लहर फैल गयी। इसी प्रकार विद्रोह और जातीय संगठनके बीच एक शताब्दी बीत गयी। कितने आयरिश वीरोंने इन एक सौ वर्षों में अपने प्राण गंवाये उनकी कोई संख्या नहीं। इन्हीं वीरोंके रक्तके ऊपर नूतन आयर्लैण्डकी स्थापना हुई।

नूतन आयर्लैण्ड

इस नूतन आयर्लैण्डके निर्माता थे अर्थर ग्रिफिथ। सिन-फिन (अर्थात् हमारा देश) नामक एक दल संगठित करके उन्होंने स्वाधीनताका आंदोलन उठाया। उनके साथ जो लोग उस दलमें सम्मिलित हुए वे सब-के-सब वीर एवं शक्तिशाली थे। उनमें उल्लेखनीय नाम ये हैं, माइकेल कालिनस, मेकस्वीनी एवं डीवेलरा।

मेकस्वीनीको अङ्गरेजोंने जेलमें कैद कर रखा। उन्होंने अङ्गरेजोंके अत्याचारके प्रतिवादमें ७० दिन तक उपवास करके प्राण त्याग दिये। डीवेलराको भी अङ्गरेजोंने खूब सताया, पर वह अङ्गरेजोंकी आंखोंमें धूल झोंककर निकल जाते थे। एक बार अङ्गरेजोंने डीवेलराको जेलमें बन्द कर दिया, पर वे जेलसे भागकर बाहर निकल आये। अङ्गरेजोंने वाध्य होकर आयर्लैण्ड को औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया। आज कल डीवेलरा आयर्लैण्डके प्रेसिडेण्ट हैं। किन्तु वह औपनिवेशिक स्वराज्यसे सन्तुष्ट नहीं हैं। वे पूर्ण स्वाधीनता चाहते हैं। आज भी उसीके लिये चेष्टा कर रहे हैं।

इंगलैण्ड

विद्रोहिनी रानी रोडेसिया

आजसे बहुत दिन पहलेकी बात है। उस समय रोमनोंने सबसे पहले इंगलैण्डपर अपना अधिकार जमा लिया था। इङ्गलैण्डके जो मूल निवासी थे उन्होंने रोमनोंके विरुद्ध विद्रोह करना आरम्भ किया। वह स्वाधीनताको अपने प्राणोंसे भी अधिक समझते थे। उस स्वाधीनताको छोड़कर भला वे रोमनोंके अधीन रहना क्यों स्वीकार करें ?

पहले पहल रानी रोडेसियाने विद्रोहका झंडा खड़ा किया। उनके झण्डेके नीचे हजारों देशवासियोंने एकत्र हो सम्मिलित स्वरमें कहा—हम स्वाधीनता चाहते हैं अथवा मृत्यु। एक वीरके शरीरमें एक बूंद भी रक्त रहते हम रोमनोंकी अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे।

अन्तमें युद्ध हुआ। एक ओर स्वाधीनताके उपासकोंका दल और दूसरी ओर विजय-गर्वोन्मत्त असंख्य रोमन थे।

दुर्भाग्यवश विद्रोहियोंकी हार हुई।

रानी रोडेसियाको इस हारसे बड़ी ग्लानि हुई। उन्होंने अपनी छातीमें छुरी घुसेड़ कर आत्महत्या कर ली, पर रोमनोंके हाथोंमें गिरफ्तार नहीं हुई।

करेक्टकस

इसके बाद जो रोमनोंके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ, उसका नाम था कारेक्टकस। रोमनोंने उसे युद्धमें हराकर कैद कर लिया और रोम ले गये। रोमन-सम्राटने शृङ्खलावद्ध कैदीसे कहा—विद्रोही, क्या तू जानता है, तूने कितना बड़ा अपराध किया है?

वीर बन्दीने अपने गर्वोन्नत सिरको ऊपर उठाकर कहा—अपराध! सम्राट, अपराध मैंने किया है अथवा तुमने?

सम्राटने कहा—मैंने क्या अपराध किया है?

वीर बन्दीने कहा—एक देश सैकड़ों वर्षोंसे स्वाधीनताका उपभोग करता आ रहा था। तुमने बिना दोषके ही उसको अत्याचार और दासत्वकी जञ्जीरमें जकड़ रखा है। ऐसा अन्याय और ऐसा अपराध संसारमें और कहीं देखनेको नहीं मिलेगा।

सम्राट इसका कोई उत्तर नहीं दे सके।

वीर हैम्पडेन

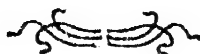
इङ्गलैंडमें राजाके होते हुए भी जनताके मत-बिना राज्य-शासन नहीं किया जाता। उस देशके लोग पूर्ण मात्रामें स्वाधीन हैं। इस स्वाधीनताके लिये उन्हें कितनी बार खूनखराबी करनी पड़ी है, एक उदाहरण देकर मैं इसे बतलाता हूं।

राजा प्रथम चार्ल्स बड़ा अत्याचारी था। जनताके मतकी कुछ भी परवा न कर वह अपनी मनमानी करता था। राजा

होनेके कुछ ही दिन बाद उसने "शिपामनी" नामक एक कर लगाया। बहुतोंने डरसे कर अदा किया पर हैम्पडेनने इसका विरोध करते हुए कहा—हम लोग यह कर नहीं देंगे। जब समुद्रके किनारे जलडाकुओंका डर था, तब यह कर लगाया गया था। इस समय इस करके लगानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। इसके सिवा मैं समुद्रके किनारे रहता भी नहीं।

राजा चार्ल्स हैम्पडेनके इस विरोधसे अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। वह हैम्पडेनपर अत्याचार करने लगा। उसपर मामला चलाया गया जिसमें यह फैसला किया गया कि हैम्पडेनको कर देना ही पड़ेगा।

राजाके अत्याचारसे इस बार देशभरमें आग भड़क उठी। क्रामवेल नामक एक वीर योद्धाकी सहायतासे विद्रोहियोंने चार्ल्सको गद्दीसे उतारकर मार डाला। इंगलैंडमें जनताके मतको हवामें उड़ा नहीं दिया जाता। जनसाधारणके विचारोंको प्रकट करनेके लिये एक सभा है जिसका नाम हाउस आफ कामन्स है। हाउस आफ कामन्स इंगलैण्डकी राष्ट्रीय सभा पार्लमेण्टकी प्रधान शाखा है।



वेल्स

वेल्सको जिन्होंने एकतासूत्रमें आवद्ध कर स्वतन्त्र राष्ट्रमें परिणत किया उनका नाम था।

रोडरिक

एक ओरसे सैक्सन और दूसरी ओरसे डेन उस समय वेल्सपर आक्रमण कर उसे लूटपाट रहे थे। रोडरिकने असाधरण वीरता और साहससे इस दुर्दिनमें जातिकी स्वाधीनताकी रक्षा की। वेल्स-निवासी आज भी अपनी प्राचीन गाथाओंमें उनका नाम बड़े आदर से लेते हैं।

ग्रिफिथ आफ कोनान और ग्रिफिथ आफ रिज

इङ्गलैंडको जीतकर रोमन वेल्सपर अधिकार जमानेके लिये आगे बढ़े। उस समय कोनान और रिज नामक दो वीर रोमनोंका सामना करनेके लिये अग्रसर हुए। रोमन उन दो वीरोंके प्रतापको सह नहीं सके और पीछे हट गये।

लिवोलिंग

उसके बाद कई वर्षतक वेलस बिना किसी विघ्न-बाधाके अपनी स्वाधीनताका भोग करता रहा। प्रथम एडवर्ड जब इंगलैंडके राजा हुए तब उनकी शनिदृष्टि वेल्सपर पड़ी।

उन्होंने छलबलसे वेल्सपर अधिकार करना चाहा। एक बड़ी सेना लेकर उन्होंने वेल्सपर आक्रमण कर दिया। उस समय वेल्सके राजा थे वीर लिवोलिङ्ग। उनका यह प्रण था कि वे किसी तरह भी अंगरेजोंके सामने सिर नहीं झुकायेंगे। कुछ साहसी युवकोंका एक दल लेकर वे अंगरेजोंका मुकाबिला करने चले। पहली बार तो उनकी हार हुई। अंगरेजोंने वेल्सपर अधिकार कर लिया। उसके बाद वे वेल्सपर अत्याचार करने लगे। वेल्समें कोई स्कूल अथवा कालेज स्थापित करनेकी अनुमति नहीं दी गयी। वेल्सवासियोंके नागरिक अधिकार छीन लिये गये, तात्पर्य कहनेका यह है कि वेल्सके साथ पदानत जातिके समान व्यवहार किया जाने लगा।

फलस्वरूप वेल्सवासियोंके मनमें असन्तोषकी अग्नि जल उठी, तीन वर्षके बाद उन्होंने अंगरेजोंके विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया। विद्रोहियोंके नेता हुए लिवोलिङ्ग और उनके भाई डेविड। डेविडने एक रविवारको राजमहलमें आग लगाकर विद्रोहकी सूचना दी। उसके बाद समस्त वेल्सवासियोंने आकर उनका साथ दिया। एडवर्ड फिर सेना लेकर विद्रोह दमन करने आये।

इसी समय अकस्मात् एक दुर्घटना हो गयी।

लिवोलिंग ब्राटचिनियेगके लोगोंको विद्रोह करनेके लिये उत्तेजित करने गये थे। वहीं वह वाई नदीके किनारे मार डाले गये। उसके कुछ दिन बाद डेविड गिरफ्तार कर लिये गये।

इन स्वदेशप्रेमी दोनों युवकोंकी जिस नृशंसताके साथ हत्या

को गयी, उसकी कल्पना करनेसे भी एडवर्डके प्रति घृणा होती है। एडवर्डने लिवोलिंगके कटे सिरको आम सड़कपर लटका रखा था।

आइयेन ग्लेन डावर

अपने नेताओंकी इस नृशंसताके साथ हत्या हो जानेपर भी वेल्सवासियोंकी स्वतन्त्रताकी अग्नि-वासना कम नहीं हुई। इस बार वेल्सके धनी, गरीब, कृषक, मजूर सभी विद्रोह करनेके लिये मतवाले हो गये। जाग्रत छात्र-समाज और कृषक, मजूर इस विद्रोहके प्राण थे और उनके नेता हुए आइयेन ग्लेन डावर। स्वाधीनता-प्रेमी वीर सैनिकोंको साथ ले आइयेन किलेपर किला दखल करते गये। अंगरेज उनका दमन करनेके लिये कई बार आये, पर हर बार उन्हें पराजित होकर लौट जाना पड़ा। अन्तमें आइयेनने वेल्सको पूर्ण स्वाधीन कर लिया। राष्ट्रीय पार्लमेंटकी स्थापना हुई। जगह-जगह राष्ट्रीय विद्यालय खोल दिये गये। वेल्स फिर सभी विषयोंमें स्वाधीन और स्वावलम्बी हो गया पर आइयेनकी मृत्युके बाद वेल्स अंगरेजोंमें मिल गया। अब स्वाधीन वेल्सकी केवल स्मृति रह गयी।

स्काटलैण्ड



इङ्गलैण्डके प्रथम राजा एडवर्ड बहुत दिनसे स्काटलैण्डपर अधिकार जमानेका मौका ढूंढ़ रहे थे। स्काटलैंडमें जब ब्रूस और वेलियलके बीच राजसिंहासनके लिये झगड़ा खड़ा हुआ, तब एडवर्डने झगड़ा मिटानेकी गरजसे इस मामलेमें हाथ दिया। पहले उन्होंने वेलियलको राजा बना दिया। उसके बाद कुछ दिन बीतनेपर वेलियलको हटाकर स्काटलैंडको अपने अधीन कर लिया। अंगरेज सैनिक स्काटलैंडमें घूम-घूमकर अंगरेजोंके प्रभुत्वका प्रचार करने लगे। निर्दोष स्काटिशोंपर वे अकथनीय अत्याचार करने लगे।

वालेस

उसी समय स्काटलैंडमें वालेस नामक एक वीर पुरुष रहते थे। जब वे स्कूलमें पढ़ते थे तभीसे वह अपने देशकी बात सोचा करते थे। वे दिन-रात इसी चिन्तामें मग्न रहा करते थे कि किस प्रकार देश स्वाधीन होगा। उन्होंने अपनी उम्रके लड़कोंको साथ लेकर एक दल तैयार किया। उस दलके प्रत्येक सदस्यको तलवार और छूरा रखना पड़ता था और देशके लिये प्राण देनेका प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी।

एक दिन अंगरेज सैनिकोंने वालेसको छेड़ा। वालेस इसको बर्दाश्त नहीं कर सके। उन्होंने एक भी अंगरेजको प्राण लेकर नहीं जाने दिया। अंगरेज सरकारने वालेसको विद्रोही करार कर दिया और उनकी गिरफ्तारीके लिये पुरस्कारकी घोषणा की। वालेसने अपने वीर साथियोंको लेकर पहाड़में जाकर आश्रय लिया। वहांसे वह अंगरेजोंके विरुद्ध गोरीला युद्ध करते रहे। उन्होंने अंगरेजोंको स्काटलैंडसे भगा देनेका प्रण किया था।

अंगरेजोंने विद्रोह दमन करनेके लिये एक बड़ी सेना भेजी। उधर वेल्सके दलमें स्काटलैंडके साहसी किसान शामिल हो गये।

इन्हीं स्वदेशभक्त वीरोंके दलको लेकर वालेस स्टर्लिंग पुलके इस पार छिपे थे। कुछ ही देर बाद उस पार अंगरेजोंकी सेना आ हाजिर हुई। उसके बाद अंगरेज सैनिक पुलसे होकर इस पार आने लगे। जब आधी सेना इस पार आ गयी तब गुप्त स्थानसे निकल कर वालेस शेरकी नाईं अंगरेजोंपर टूट पड़े। अंगरेज पराजित हो लौट गये।

हार जानेपर अंगरेजोंका क्रोध और भी बढ़ गया। इस बार वे एक और बड़ी सेना लेकर आये। आर्क नामक स्थानमें लड़ाई हुई। वालेसने अद्भुत वीरत्वके साथ युद्ध किया, किन्तु थोड़ेसे सैनिक लेकर वे अधिक देरतक नहीं ठहर सके। उन्हें फिर पहाड़में भाग जाना पड़ा। पहाड़में जाकर भी वालेसने

अंगरेजोंको चैनसे नहीं रहने दिया। वहींसे वे फिर गोरीला युद्ध करने लगे।

अन्तमें एक दुष्ट नाइटके विश्वासघातसे वालेस पकड़ लिये गये। अंगरेजोंने उन्हें लन्दन ले जाकर बड़ी नृशंसतासे उनकी हत्या कर डाली। वीर वालेस स्वदेशके लिये प्राण देकर इतिहासमें अपना नाम अमर कर गये।

रावर्ट ब्रुस

वालेसके बाद स्वाधीनता संग्रामको रावर्टब्रुस चलाने लगे। वालेसकी मृत्युकी खबरसे क्षुब्ध हो ब्रुसने अङ्गरेजोंके निर्वाचित राजप्रतिनिधि कोमिनककी हत्या कर स्काटलैण्डकी स्वाधीनताकी पताका उड़ा दी। झुण्ड-के-झुण्ड स्वदेशप्रेमी युवक उनकी पताकाके नीचे आकर एकत्र होने लगे। ब्रुस इन वीरोंको साथ लेकर स्काटलैंडके किलोंको एक-एक कर जीतने लगे। अङ्गरेज लोग भयभीत हो भाग गये।

ब्रुसको दबानेके लिये फिर अङ्गरेजी सेना आयी। ब्रुस कुछ दिनके लिये पहाड़की गुफामें छिप गये। वहीं पहाड़ियोंकी एक सेना संगठित करके अङ्गरेजोंपर टूट पड़े। अङ्गरेजोंकी ओर एक लाख सैनिक थे, और ब्रुसकी ओर मुट्ठी भर। पर इन मुट्ठीभर पहाड़ी वीरोंसे अङ्गरेजोंके एक लाख सैनिक बुरी तरह हार गये।

वीर केशरी रावर्ट ब्रुसने स्काटलैंडको स्वाधीन कर लिया। पर वर्तमान स्काटलैंड स्वाधीन नहीं, बल्कि अंगरेजी राज्यके अन्तर्गत है।

स्पेन



आठवीं शताब्दीके प्रथम भागमें मुसलमानोंका शासन था। बहुतसे स्पेनियर्ड मुसलमान धर्म ग्रहण करके मुसलमानोंके अधीन वास करते थे। किन्तु कुछ ऐसे भी थे जिनकी नसोंमें विशुद्ध स्पेनियर्ड रक्त प्रवाहित होता था। वे संख्यामें कम नहीं थे। वे किसी तरह भी विदेशियोंकी अधीनता स्वीकार करना नहीं चाहते थे। ऐसे ही स्वाधीनताप्रेमी स्पेनियर्ड मुसलमानोंके इलाकोंको छोड़कर जंगलों और पहाड़ोंमें जाकर बस गये। वे वहां चुपचाप बैठे नहीं रहे, बल्कि सदा यही उपाय सोचा करते थे कि देशको मुसलमानोंकी अधीनतासे कैसे मुक्त किया जाय।

महावीर पिलाव

इसी समय स्पेनमें वीर पिलावका जन्म हुआ। उनके जन्मका इतिहास महाभारतके कर्णके समान ही है। उनकी माँ लूसिया एक सम्भ्रान्त राजमहिला थीं। जन्मके पन्द्रह दिन बाद उनकी मांने उन्हें एक छोटे कठौतमें डालकर टेगासन नदीमें छोड़ दिया। नदीकी तेज धारामें कठौत बह चला। दो दिन और दो रातके बाद वह इत्रिमादुराके जंगलमें घुसा। वहाँ ग्राफेस नामक एक वीर शिकार खेलने गये थे। नदी किनारे आकर उन्होंने देखा कि एक कोमल शिशु पानीमें बहा जा रहा है।

उसके अङ्ग-अङ्गसे मानों ज्योति चमक रही है। उन्होंने नदीमेंसे बालकको निकाल लिया और उसे अपने घर ले गये। उन्होंने विवाह नहीं किया था। उनके एक नौकरानी थी जिसका लड़का मर गया था। ग्राफेसने पिलावको उसीको दे दिया।

क्रमशः पिलाव बालकसे मनुष्य होने लगे। ग्राफेसने उनका रूप रंग देखकर समझा कि यह लड़का किसी सम्भ्रान्त वंशका है। वे पिलावको उसी प्रकारकी शिक्षा देने लगे। ग्राफेसकी शिक्षासे पिलाव युद्ध-विद्यामें और शिकारमें अद्वितीय हो गये। घुड़सवारीमें वे ऐसे प्रवीण हो गये कि ऊंचे और असमतल पहाड़ोंपर भी वे घोड़ेको तेज दौड़ा ले जा सकते थे। इसके अतिरिक्त वे शास्त्र तथा ज्ञान-विज्ञानमें भी पारदर्शी हो गये।

अवतक पिलावको अपने वंशका परिचय ज्ञात नहीं था। एक दिन अकस्मात् अपने माता-पितासे उनकी मुलाकात हो गयी। उनको देखते ही उनकी माता चञ्चल हो उठी। तब ग्राफेसने सारी बात खोलकर कह दी कि किस प्रकार वे पिलावको नदीसे निकालकर अपने घर ले आये थे। यह सुनकर मांने पिलावको छातीसे लगा लिया। उसकी आंखोंसे झर-झर आंसू बहने लगे। पिलावके पिता कैण्टरबरीके काउण्ट थे। पिलाव अपने पिताके साथ कैण्टरबरीमें रहने लगे।

कैण्टरबरी पहाड़ी देश था। उसके चारों ओर घने जंगल थे, जिनमें भालू, बाघ आदि हिंस्र पशुओं तथा डाकुओंके अड्डे थे। इस भयङ्कर जंगली प्रदेशमें रहकर पिलावका साहस दस गुना

बढ़ गया। वे प्रताप एवं शिवाजीकी तरह विख्यात योद्धा हो गये। एक दिन वे जंगलमें झरनेके पास एक पेड़के नीचे सो रहे थे। अकस्मात् वहां एक दिव्य ज्योति संन्यासीका आविर्भाव हुआ। संन्यासीने पिलावके पास आकर कहा—पिलाव, अभी तुम सो रहे हो? तुम्हारी जन्मभूमि आज तुर्कोंके पैरों तले कुचली जा रही है। उसपर तरह-तरहके अत्याचार हो रहे हैं, और तुम अब भी नहीं जाग रहे हो?

पिलाव चौंककर जाग उठा। यह बात नहीं थी कि उन्हें देशकी दुर्दशाका ख्याल न था पर नीरव निश्चेष्ट जातिको जगानेकी शक्ति उनमें कहां थी? किन्तु उस महापुरुषकी बात सुनकर उसे ऐसा जान पड़ा मानो वे शक्ति-समुद्रके पास खड़े हैं। पिलावने कहा—महात्मा, मैं अकेला क्या कर सकता हूं? संन्यासीने कहा—पिलाव, तुम अकेले नहीं हो। भगवान तुम्हारे सहायक हैं। तुम्हारे द्वारा वे समस्त जातिको जगाना चाहते हैं। वीर उठो, जागो और देशकी बात सोचो। देशको जगाओ और स्पेनको स्वाधीन करो। यह कहकर संन्यासी अन्तर्धान हो गये। पिलाव एक अग्निमय शक्ति लेकर घर आये। उसी समयसे स्वाधीनता और स्वदेश उनके आराध्य विषय हो गये। स्वप्नमें भी वे अपनी पराधीन जननी जन्म भूमिकी दुर्दशाका चित्र देखते।

मनकी ऐसी ही अवस्थामें वे एक दिन घरसे निकल पड़े। देश-विदेशोंमें घूम-फिरकर उन्होंने देखा कि सभी देशके लोग स्वाधीनताके लिये मतवाले हो रहे हैं। केवल स्पेन ही निश्चेष्ट

है। बहुत दिनोंके बाद वे घर लौटे, किन्तु उस समय उनका घर गिरा पड़ा था, माता-पिता मर गये थे। और उनकी बहिन लूसिन्दा वन्दिनी कर ली गयी थी। पर वह कहां है, कोई नहीं जानता था।

पिलावके हृदयमें अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी। वह अपनी बहिनकी खोजमें निकल पड़े। उनका एकमात्र संगी एक पहाड़ी घोड़ा था और एकमात्र संवल एक तलवार थी। इसी प्रकार उन्होंने अपनी बहनकी खोजमें सारे स्पेनको मथ डाला। अन्तमें एक दिन लूसिन्दाका पता चला। वह एक धर्मत्यागी देशद्रोहीके हाथोंमें कैद थी। अपूर्व कौशलके साथ पिलाव उसके किलेमें घुसकर वहांसे अपनी बहिनको निकाल लाये। बाहर आते ही वे बहिनको घोड़ेपर चढ़ाकर बिजलीकी तरह दौड़ते हुए चले गये। मुसलमानोंने भी घोड़ोंपर सवार हो उनका पीछा किया, पर किसमें शक्ति थी जो पिलावको पकड़े। किसीको यह दिखायी भी नहीं दिया कि पिलाव किस ओर गये।

घोड़ेको दौड़ाते हुए पिलाव कोभाडांगा नामक पहाड़ी प्रदेशमें आये। यहीं पूर्वोक्त स्वाधीनता-प्रेमी स्पेनियर्डोंका निवास स्थान था। कोभाडांगा साधारण मनुष्योंके लिये अगम्य था। उसके चारों ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ थे। मुसलमानोंने अबतक भी वहां पांव नहीं दिया था।

पिलावने कोभाडांगामें आते ही उसी अग्निकांति संन्यासीको

देखा। संन्यासीने मुस्कुराकर कहा—क्यों पिलाव, तुम्हारी नींद टूट गयी है ?

घोड़ेसे उतरते ही पिलावने कहा—हां महात्मन्, निद्रा भङ्ग हो गयी। अब मैं पराधीनताको सहन नहीं कर सकता। अग्निकी तरह पराधीनता मुझे जला रही है। यही इच्छा करती है कि सिंहनाद करके शत्रुओंपर टूट पड़ूं।

संन्यासीने कहा— यही करो वीरवर! हम लोग हजारों स्त्री-पुरुष अस्त्र-शस्त्र लिये इसके लिये तैयार हैं। आजतक हम लोग तुम्हारी राह देख रहे थे, अब तुम आ गये। अब हम लोग स्वाधीनताकी भेरी बजाकर युद्धकी यात्रा करेंगे। तुम हमारे सेनापति होगे।

इस प्रकार पहाड़ोंकी गुफाओं में आश्रय लेकर उन वीरोंने स्वाधीनताकी पताका उड़ा दी। पहाड़ोंकी गुफाओंसे, जंगलोंमें-से तथा अन्यान्य गुप्त स्थानोंसे निकल-निकल कर हजारों स्वाधीनता-प्रेमी स्त्री-पुरुष पिलावके साथ मिल गये। पिलावने मुसलमानोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी।

मुसलमान हजारों सैनिक लेकर युद्ध करने आये किन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। मुसलमानोंके रक्तसे कोभाडांगाका पहाड़ी प्रदेश लाल हो गया। पिलावकी विजय हुई। पराजित मुसलमान स्पेनके एक कोनेमें अधिकार जमाये रहे। बाकी भाग पूरा स्वाधीन हो गया

रूस



प्राचीन रूस

तेरहवीं शताब्दीके प्रथम भागमें रूस पराधीनताके पाशमें आवद्ध हुआ। मुगलोंने आक्रमण कर रूसके सम्राटको हरा दिया और कर देनेके लिये वाध्य किया। उसी समयसे रूसके सम्राट मुगलोंको कर देते थे। इसी प्रकार अनेक दिन बीत गये।

चौदहवीं शताब्दीके अन्तिम भागमें मुगलोंमें घरेलू लड़ाई होने लगी। उस समय मास्कोके सिंहासनपर भी एक शक्तिशाली एवं स्वधीनता-प्रिय पुरुष

दिमित्रि डनस्कोई

थे। उन्होंने मौका देखकर मुगलोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी। युद्धमें उनको विजय हुई। मुगल हारकर भाग गये। मुगल भाग तो गये, पर दिमित्रि यह अच्छी तरह जानते थे कि मुगल चुपचाप नहीं बैठे रहेंगे। वे अवश्य ही अपनी पराजयका बदला लेंगे। वह भी भविष्यके लिये सब तरहसे तैयार बैठे थे।

सबसे पहले उन्होंने समस्त रूसको एकताके पुण्यमन्त्रसे दीक्षित करके एक वृहद् शक्तिशाली संघवद्ध राष्ट्रमें परिणत करनेकी चेष्टा की। उत्तरी रूस उनके झण्डेके नीचे आकर

खड़ा हुआ। भेद-भावको भुलाकर जातिके दुर्दिनमें जातिकी रक्षा करना ही मनुष्यका कर्तव्य है, उन्होंने इसी बातका प्रचार किया था। अब सारा देश तैयार होकर मुगलोंके आक्रमणकी प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ दिनोंके बाद मुगलोंने रूसपर आक्रमण किया। इस बार दिमिचिने उन्हें हराकर भगा दिया।

इतने दिनोंतक रसियनोंको अपनी शक्तिका पता न था। यह वे स्वप्नमें भी नहीं सोच सकते थे कि मुगलोंके साथ युद्ध करनेकी शक्ति उनमें है। दिमिचिने उनको आंखें खोल दीं। मुगलोंने बार-बार रूसपर आक्रमण किया, पर रूसियनोंकी आत्मनिर्भरता कभी भी विनष्ट नहीं हुई।

आइवान दी ग्रेट

कुछ समयके बाद फिर मुगल शक्तिवान हो उठे। वे फिर रूसपर अत्याचार करने लगे। इस बार जिन्होंने रूसको मुगलोंके पंजेसे बचाया उनका नाम था सम्राट तृतीय आइवान। उन्होंने अपनेको सम्पूर्ण रूपसे स्वाधीन घोषित करके मुगलोंको कर देना बन्द कर दिया। फलस्वरूप रूस और मुगलोंमें लड़ाई छिड़ गयी। उस लड़ाईमें मुगलोंकी बड़ी बुरी हार हुई।

उसी दिनसे रूस अपने इस परित्राताको आइवान ग्रेटके नामसे सम्मानित करता चला आ रहा है।

मध्ययुगमें रूस

सोलहवीं शताब्दीके अन्तिम भागमें रूसके सिंहासनको

लेकर फिर विवाद उठ खड़ा हुआ। अन्तमें सन् १६१० ई०में पोलेण्डके राजकुमार रूसके सम्राट हुए। साथ-ही-साथ अराजकता, विशृंखलता और अत्याचार भी दिखाई देने लगे। सारा देश विदेशी शासकोंके अत्याचारसे क्षुब्ध हो उठा। उनके विरुद्ध देशमें तीव्र आन्दोलन चलने लगा। धर्म-शिक्षाको लोग इस आन्दोलनमें उत्साहित करने लगे। विदेशियोंको भगाकर देशकी स्वाधीनता और सम्मान लौटा लाओ, यही उनका उपदेश था।

वह आन्दोलन व्यर्थ नहीं हुआ। देशवासियोंने एक साथ मिलकर प्रतिज्ञा की कि देश और धर्मकी रक्षाके लिये हम प्राण भी दे देंगे। उस आन्दोलनके नेता थे—

प्रिन्स योयारस्की और कोजामिनीन

कोजामिनीन जातिके मोची थे। देशके संकटके समय यह स्वदेशभक्त विद्रोहकी रक्तपताका हाथमें लेकर मैदानमें कूद पड़े। देशवासी युद्ध-सामग्रियोंसे सुसज्जित हो उनके झण्डेके नीचे आ खड़े हुए। प्रत्येकके मुंहसे यही एक स्वर निकलता था कि विदेशियोंको भगाकर देशको मुक्त करेंगे। जिसके पास जो कुछ धन-सम्पति, रुपया पैसा था उसने उसे देशके लिये उत्सर्ग कर दिया। कोजामिनीनके आह्वानसे सारा देश जाग उठा। असंख्य सेना एकत्र की गयी।

तब उस विराट सेनाको लेकर प्रिन्स योयारस्कीने पोलोंके विरुद्ध युद्धकी यात्रा की।

पोल हारकर रूससे भाग गये। रूस फिर स्वाधीन हो गया।

पीटर दी ग्रेट

सत्रहवीं शताब्दीके अन्तिम भागमें पीटर दी ग्रेटका आविर्भाव हुआ।

स्वाधीन होनेपर भी उस समय रूस शिक्षित, सबल एवं सम्पन्न नहीं था। चारों ओर कुसंस्कारोंका अन्धकार छाया हुआ था। पीटरने देखा कि ऐसी अध:पतित जातिकी स्वाधीनता कभी भी स्थायी नहीं रह सकती। स्वाधीनताको स्थायी रखनेके लिये जातिको नये ढङ्गसे संगठित करना पड़ेगा। शिल्प, विज्ञान, शिक्षा, दीक्षा, धर्म आदि सब विषयोंमें रूसको उन्नत एवं जाग्रत करना चाहिये। ऐसा सोचकर उन्होंने दृढ़ चित्तसे संस्कार-कार्योंमें हाथ लगाया। देश-विदेशोंके अध्यापकोंको मंगवा कर वे सब विषयोंमें शिक्षा दिलाने लगे। जहाज बनानेकी शिक्षा देनेवाला कोई आदमी नहीं मिला। तब स्वयं पीटर साधारण कुलीके छद्मवेशमें इङ्गलेंडसे जहाज बनानेकी कला सीख आये। इङ्गलैंडसे लौट आनेपर उन्होंने रूसमें जहाज बनानेके कारखाने खोले। ऐसा उनका अध्यवसाय था और ऐसी उनकी उत्कट देशहितैषिता थी। किन्तु रूस उनके इस संस्कारको ग्रहण करना नहीं चाहता था। रूस रूढ़िवादी था। जो कुछ पुराने नियम-कानून थे उन्हें ही वह सबसे अच्छा समझता था। किन्तु पीटरने उनकी इस आपत्तिकी कुछ परवा नहीं की।

वह आज्ञा देते कि अमुक काम करना ही होगा, नहीं करनेसे कठोर दंड दिया जायगा। जो कोई उनके हुक्मको नहीं

मानता था उसे वे कड़ा दंड देते भी थे। इसलिये इच्छा न रहते हुए भी लोगोंको उनकी आज्ञाके अनुकूल चलना पड़ता था। अवश्य ही अन्तमें देशवासियोंने उनके सदुद्देश्यको समझा। पीटर रूसके नवजीवनदाता थे।

रूसके सम्राटको जार कहते थे। जार लोग अत्याचारके मूर्त्तिमान अवतार थे। प्रजाके प्राणोंसे वे खेला करते थे। किन्तु फ्रांसके राजविप्लवके साथ रूसकी पीड़ित जनता भी चञ्चल हो उठी। तब जारने अत्याचारकी मात्रा और भी बढ़ा दी। बात-बातमें बिना विचारे लोगोंको साइबेरिया प्रदेशमें निर्वासित कर देना ही जारके जीवनकी नित्य नैमित्तिक घटना हो उठी। प्रजा-वर्गके ऊपर असीम अत्याचार होने लगा। बीस वर्षोंसे साढ़े दस लाख आदमी साइबेरियामें निर्वासित किये गये थे, अन्यान्य दंडितोंकी तो कोई संख्या नहीं।

विप्लवी रूस

इस अत्याचारके फलस्वरूप रूसमें विप्लवका बीजारोपण हुआ। रूसके युवक वालटेयर, स्पेन्सर, डारविन, मिल, कोमत, और रूसो आदिकी पुस्तकोंको पढ़कर विप्लवकी ओर झुक पड़े। यह विप्लव ही निहिलिज्मका जन्मदाता है। छात्र एवं युवकोंने ही पहले-पहल विद्रोहका झण्डा खड़ा किया। सन् १८६२ ई०के अप्रैल महीनेमें "विप्लव समितिकी घोषणा" नामक एक इश्तहार निकाला गया। उसका आशय यह था कि जार-

वंशके रक्तसे रूसकी प्रजाके दुःखका प्रायश्चित्त किया जायगा। उसी समय जारने दमन-नीतिका अवलम्बन किया। बहुतसे स्कूल, कालेज, क्लब, सण्डे स्कूल और समाचारपत्र बन्द कर दिये गये। बहुतसे लोग निर्वासित कर दिये गये। पर तो भी आन्दोलन नहीं रुका।

सन् १८६६ ई० में मास्को गुप्त समितिके कैराको जफ नामक एक युवकने सम्राटको लक्ष्य कर गोली चलायी। पर निशाना चूक गया। युवक गिरफ्तार हुआ और उसे मौतकी सज़ा दी गयी।

सरकार छात्र-समितिके ऊपर और भी कड़ी नज़र रखने लगी। पर सरकार जितना अत्याचार करती, विद्रोही उतने ही जोरसे आन्दोलनको चलाते।

सन् १८७६ ई०में सम्राटको मार डालनेकी एक बार और चेष्टा हुई। उस बार भी भाग्यवश जार बच गये। अन्तमें १८८१ ई० में जार मार डाले गये। उस जारकी मृत्युके बाद नये जार हुए निकोलस। निकोलसने सोचा, शासनकी बागडोर कुछ ढीली है, इसीलिये विद्रोही इतना ऊधम मचा रहे हैं। अतएव शासनकी बागडोरको और कड़ा करना चाहिये अर्थात् और अधिक अत्याचार करना चाहिये। जारके कठोर अत्याचारसे निलिस्ट दल विनष्ट हो गया।

किन्तु किसी दलके विनष्ट होनेसे संसारमें कहीं भी किसी दिन विप्लव नष्ट नहीं हो जाता। रूसमें भी विप्लव नष्ट नहीं

हुआ। निहिलिज्मके लोपके साथ-साथ 'सोशल डिमोक्रेट' दलकी सृष्टि हुई। उन्होंने निश्चय किया, कि इस बार मजूरोंको साथ लेकर विद्रोह करना चाहिये। यह निश्चय कर वे "श्रमिक मुक्ति-सम्मेलन" नामक एक गुप्त समिति स्थापित कर मजूरोंको उत्तेजित करने लगे।

एक और भी विप्लव दल उठ खड़ा हुआ। उसका नाम था "विप्लववादी सोशलिस्ट"। ये बड़े उग्र विचारके थे। बम, पिस्तौल और खूनखराबीके ये भक्त थे। विप्लव आन्दोलन खूब जोरसे चलने लगा।

रूस-जापान-युद्ध

उसके बाद रूस-जापान युद्ध छिड़ा। इस युद्धमें रूसकी बड़ी बुरी हार हुई। इस हारसे सबसे अधिक क्षति मजूरोंकी ही हुई।

उन्होंने खुल्लमखुल्ला सरकारके प्रति असन्तोष प्रकट कर हड़-ताल कर दी। एक दिन झुण्ड-के-झुण्ड मजूर सम्राटके महलकी ओर जा रहे थे कि सैनिक उनपर गोली चलाने लगे। हजार हजार मजूरोंके रक्तसे सड़क रंग गयी।

इस घटनाके बादसे ही देश पूर्ण रूपसे विद्रोह करनेके लिये जाग उठा। विद्रोही सरकारी कर्मचारियोंकी हत्या करने लगे। इस विद्रोहका नेतृत्व ग्रहण किया था क्रोप्रस्टलेवने।

सम्राटने डरकर एक जातीय सभा संगठित करनेकी अनुमति

दी । उस नवगठित सभाका नाम हुआ डूमा । डूमामें वास्तविक कोई शक्ति नहीं थी । सम्राटने विद्रोहियोंको एक खिलौना देकर उन्हें सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा की थी । पर जब विद्रोहियोंको यह बात मालूम हो गयी तो वे और भी उत्तेजित हो उठे ।

सन् १६१५ ई० में यूरोपीय महासमर आरम्भ होनेके बाद विप्लवियों द्वारा जार सिंहासनसे च्युत कर दिये गये । रूसमें विद्रोहियोंका जयजयकार होने लगा ।

सोवियट रूस और लेनिन

विप्लवमें किसानों और मजूरोंने यद्यपि अपना अधिक खून बहाया, पर वास्तवमें उन्हें कुछ अधिकार नहीं मिला और न उनके दुःख-कष्टका अन्त ही हुआ ।

इस विप्लवमें एक और महापुरुषने काम किया था । उनका नाम था लेनिन । स्याही और कलमसे उनकी शक्ति, उनकी साधना और उनके उच्च आदर्शवादका वर्णन नहीं किया जा सकता । इस बार उन्होंने किसानों और मजूरोंकी ओरसे शासनतन्त्रको नये रूपमें परिवर्तित कर दिया । सन् १६१७ ई० में विरोधी दलके साथ उनकी लड़ाई हुई । उस युद्धमें विजय प्राप्त करनेके बाद वे रूसके भाग्य-विधाता बने ।

बोल्शेविज्म

उनके प्रवर्तित मतवादका नाम है बोलशेविज्म । दुनियाके किसान और मजुर ही परिश्रम करते हैं पर उनकी कमाईका

भोग करते हैं आलसी और विलासी धनी लोग। बोलशेविज्म-का उद्देश्य इसी वैषम्यको उलट-पुलट कर साम्यको स्थापना है। सबको बराबर परिश्रम करना होगा और सबको धनका बराबर-बराबर हिस्सा मिलेगा। यही बोलशेविज्मका मूल सूत्र है। आजकल रूसमें इसी बोलशेविज्मका बोलबाला है।



टर्की



एक दिन टर्की शूरता और वीरतामें संसारमें अद्वितीय था। किन्तु टर्कीके राजा कालक्रमसे विलासी और अत्याचारी हो गये। उनका राज्य-शासन स्वेच्छाचारका नामान्तर ही था। जनताको अपने ही देशमें पराधीनोंकी भांति रहना पड़ता था। फलस्वरूप जनतामें राजाओंके प्रति असंतोषका भाव फैलने लगा।

धुआंधार विद्रोह

उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तिम भागमें अब्दुल मजीदके शासन-कालमें इस संचित असन्तोषने विद्रोहका रूप धारण कर लिया। इस विद्रोहके नेता हुए टर्कीके युवक। वे राजाके स्वेच्छाचारकी तीव्र निन्दा कर स्वाधीनतामूलक शासनप्रणालीके लिये आन्दो-करने लगे। राजाने इस आन्दोलनमें बाधा दी। किन्तु युवक दबे नहीं। वे झुण्ड-के-झुण्ड विदेशोंमें चले गये और वहांसे विद्रोहात्मक पुस्तक और समाचारपत्र आदि छाप-छापकर टर्कीके घर-घरमें भेजने लगे।

सैकड़ों वर्षों से सोती हुई जाति धीरे-धीरे जागकर उठने लगी। कवि कमाल इकेन्दिके कंठसे विद्रोहका शंख बज उठा।

साहित्य द्वारा, भाषणों द्वारा खुल्लमखुल्ला राजाके स्वेच्छाचारका प्रतिवाद होने लगा। राजा जितना अधिक अत्याचार करने लगे, विद्रोह उतना ही विकराल रूप धारण करने लगा। परिणाम यह हुआ कि राजा अब्दुल अजीजको सिंहासन त्याग करनेके लिये वाध्य होना पड़ा। उसके बाद अब्दुल हामि सिंहासनपर बैठे।

नूतन टर्की

कुछ दिनोंके बाद रूस और टर्कीमें लड़ाई छिड़ी। उस लड़ाईमें टर्कीको बुरी तरहसे हारना पड़ा। इस हारसे टर्कीकी आंखें अच्छी तरह खुलीं। उनकी समझमें यह बात आ गयी कि देशको सुरक्षित रखनेके लिये इस स्वेच्छाचार तन्त्रको दूर करना होगा और टर्कीको नूतन युगके अनुसार गढ़ना होगा। इसी उद्देश्यसे मिधातपाशा, रूसदिपाशा, दामदपाशा, नूरीपाशा आदि विद्रोही नेतागण नये ढंगसे आन्दोलन चलाने लगे।

भगवानकी कृपासे उनके इस दलमें और भी दो शक्तिमान पुरुष आकर शामिल हुए। उनके नाम थे अनवरपाशा और कमालपाशा।

इन्ही तरुण विद्रोहियोंकी चेष्टासे 'नूतन टर्की सम्प्रदाय' नामक एक समिति स्थापित हुई। उसका प्रधान केन्द्र था पेरिस। पेरिससे इन विद्रोहियोंकी अग्निवाणी समस्त यूरोपमें प्रचारित होने लगी। टर्कीके राजाने विद्रोहियोंको दमन करना आरम्भ किया। मिधातपाशा, नूरीपाशा, दामदपाशाको प्राण-दण्ड दिया गया और कमालपाशा आदि कैद कर लिये गये।

कमालपाशा और राजविद्रोह

कुछ दिनोंके बाद नूतन टर्की सम्प्रदायके बहुतसे सदस्य जेलसे बाहर निकले। अब सम्प्रदायके कामका भार प्रधानतः कमालपाशा और अनवरपाशाके ऊपर पड़ा। कमालपाशाने देखा कि केवल मुंहसे बात करनेसे विद्रोह नहीं खड़ा होगा; इसलिये उन्होंने अन्य नीतिका अवलम्बन किया। जितने प्रदेश राज्य-शासनसे असन्तुष्ट थे, कमालपाशा उनमें घूम-घूम कर विद्रोहाग्नि फैलाने लगे।

दलका प्रधान अड्डा हुआ कमालपाशाकी जन्मभूमि सोलोनिका। उसके सभापति हुए अनवरपाशा। दलका नाम भी बदल दिया गया। अब उसका नाम हुआ 'मिलन और उन्नति-समिति।' वास्तवमें यह नाम सार्थक हुआ। बड़े-बड़े राजकर्मचारियोंसे लेकर सैनिकों तकने उस दलके साथ सहानुभूति प्रकट की। नेताओंने समझा, अब विद्रोहकी घोषणा करनेका उपयुक्त समय आ गया। तदनुसार सोलोनिकाके प्रधान केंद्रसे सन् १९०८ सालकी २२ जुलाईको विद्रोहकी घोषणा की गयी। साथ-ही-साथ यह भी निश्चय किया गया कि भावी शासन-प्रणाली कैसी होनी चाहिये। नियाजीबेने अपनी सेना लेकर रेशिनामें विद्रोहका झंडा खड़ा कर दिया। अब्दुल हमीदने डरकर नूतन शासनतन्त्र गठित करनेकी राय दी। फलस्वरूप टर्कीमें प्रतिनिधि मूलक शासन-प्रणालीकी व्यवस्था की गयी।

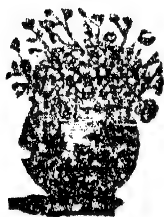
दो-एक वर्ष निर्विवाद बीत गये। उसके बाद फिर गोलमाल आरम्भ हुआ। कमालपाशाने इस्तीफा दे दिया। फिर आन्दोलन चलने लगा। कुछ दिन बाद बालकन-युद्ध छिड़ा। इस युद्धमें कमालपाशाने जो वीरता दिखलायी उससे टर्की मुग्ध हो गया। इसके बाद यूरोपीय महासमरके झमेलेमें पड़कर कमालपाशा कुछ नहीं कर सके।

इस युद्धमें शामिल होनेकी कमालपाशाकी इच्छा नहीं थी। किन्तु अङ्गरेज मन्त्री लायड जार्जने खूब आशा देकर कहा—तुम लोग युद्धमें हमारा साथ दो। टर्कीके जिन स्थानोंको अन्य देशवालोंने अधिकारमें कर लिया है उन्हें हम वापस करवा देंगे। कमालने लायड जार्जकी बातपर विश्वास नहीं किया, किन्तु युद्ध-मंत्री अनवरने आशान्वित होकर युद्धमें अंगरेजोंका साथ दिया।

लड़ाई खतम हुई। किन्तु टर्कीकी आशा पूरी नहीं हुई। लायड जार्जने तुर्कोंके अनाटोलिया प्रदेशको यूनानके ईसाइयोंको बांट दिया। यह देखकर कमालपाशा अग्निमूर्ति हो उठे। कमालने यूनानियोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की। सन् १९२२ में कमालपाशाने यूनानियोंको पूरी तरहसे हरा दिया। अनाटोलिया में टर्कीकी स्वाधीनता अक्षुण्ण रही। कमालपाशा सारे संसारमें विख्यात हो उठे। सन् १९२० में कमालपाशा आदि नेताओंकी टर्कीमें जो जातीय महासभा गठित की गयी थी, वही सभा नूतन टर्कीको मुक्तिकी ओर ले चलने लगा।

टर्कीमें प्रजातन्त्र

इतने दिनों तक टर्कीमें नाममात्रके राजा थे । कमालपाशाने राजाको हटाकर प्रजातंत्रको स्थापना की। केवल यही नहीं, धर्मान्ध मुल्ला हो धर्मके नाम पर देशकी उन्नतिमें बाधा देते थे, कमालपाशाने उन्हें राजनैतिक मामलोंसे बिल्कुल ही हटा दिया। इस समय टर्कीमें कमालपाशाने हर प्रकारके सुधार किये हैं। टर्की संसारके प्रमुख देशोंमें गिना जा रहा है।



फारस



ईसा मसीहसे छः सौ वर्ष पहलेकी बात है। उस समय फारस असीरियनोंके अधीन था। पर कोई देश सदा पराधीन नहीं रह सकता। फारसमें एक ऐसे वीर पुरुषका प्रादुर्भाव हुआ जिसके हृदयमें देशको स्वाधीन करनेकी सच्ची लगन थी। उनका नाम था साइरस।

बाल्यकालसे ही साइरसके हृदयमें स्वाधीनताके भाव कूट-कूटकर भरे थे। वे बड़े वीर थे, पर अकेले उनके वीर होनेसे क्या होता, जबतक सारा देश जाग्रत नहीं होता। पर देशको जगानेके लिये उपाय क्या था?

जब और कोई उपाय नहीं सूझा तब साइरसने एक चाल चली। वे राजा एस्ट्रिया जेलकी सभामें जाकर उसके क्रीतदास हो गये। इससे उन्हें बड़ी सुविधा मिली। उन्होंने विदेशी रीति-नीति दोषगुण सब अच्छी तरह जान लिये। दूसरे विद्रोह प्रचार करने पर उन्हें किसी बातका डर नहीं था, क्योंकि राज-भक्त जानकर उनपर कोई सन्देह नहीं करता। इसी प्रकार साइरस देशवासियोंके हृदयमें विद्रोहकी अग्नि भड़काने लगे।

अन्तमें एक दिन वह अग्नि विकराल रूपसे प्रज्ज्वलित हो उठी। विद्रोही फारसने साइरसके नेतृत्वमें विदेशियोंको भगाकर

स्वाधीनताकी घोषणा कर दी। साइरसका आत्मत्याग सार्थक हुआ।

नूतन फारस और रजा खां पहलवी

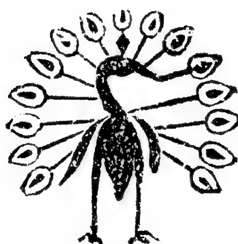
यह तो हुई अतीत कालकी बात। वर्तमान समयमें जिन्होंने फारसको जीवन दान दिया है उनका नाम है रजा खां पहलवी।

रजा खां किसानके लड़के हैं। वे लिखना-पढ़ना नहीं जानते। कभी-कभी पहाड़ोंपर भेड़ बकरी भी चराया करते थे। उस समय उनकी अवस्था पन्द्रह वर्षकी थी। उसके बाद वे कसाक सेनामें भर्ती हुए। अपने वीरत्व और युद्धकौशलसे वे सेनाके उच्च आफिसर हो गये। उन्होंने देखा कि फारसकी सेना अब भी पुराने तरीकेसे युद्ध करती है, आधुनिक युगके कायदे उसे मालूम नहीं। तब वे सेनाको आधुनिक प्रणालीसे युद्ध करनेकी शिक्षा देने लगे। थोड़े ही दिनोंमें उनकी सेना पूर्ण रूपसे आधुनिक युद्ध-कलामें निपुण हो गयी।

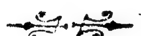
उस समय फारसकी बड़ी दुरवस्था थी। वहांके राजा विषयवासनामें सदा मस्त रहा करते थे, राजकोष खाली हो गया था, प्रजावर्गमें हाहाकार मचा हुआ था। अंगरेजोंसे रुपया कर्ज मांगा गया। अंगरेजोंने कहा,—हम तुम्हें तीन करोड़ रुपया कर्ज देंगे। पर तुम अपने देशका सेनाविभाग, शुल्कविभाग और रेलवे हमारे हाथमें दे दो।

राष्ट्रीय दलवालोंने कहा—तब फारसकी पराधीनतामें और क्या बाकी रह गया? हम बिना खाये मर जायंगे, पर अपनी

इच्छासे अंगरेजोंकी जंजीर अपने गलेमें नहीं पहनेंगे। इस राष्ट्रीय दलके नेता हुए रजा खां पहलवी। देशमें तुमुल आन्दोलन छिड़ गया। किन्तु उस समय भी राजा अपने आमोद-प्रमोदमें मस्त थे। देशके इस संकट-समयमें भी वे पेरिसमें मौज उड़ाने गये। फलस्वरूप देशमें राष्ट्र-विप्लव आरम्भ हुआ। रजा खां पहले प्रधान सेनापतिके पदपर नियुक्त हुए। उसके बाद कुछ दिनोंके लिये प्रजातन्त्र कायम हुआ। फिर कुछ दिनके बाद प्रजातन्त्रको रद्द करके नवीन फारसने रजा खांको सिंहासनपर बैठाया। आजकल रजा खां पहलवी, फारसको हर प्रकार उन्नत करनेमें लगे हुए हैं।



कोरिया



कोरिया एक छोटा-सा देश है। केवल दो करोड़ आदमी उसमें वास करते हैं। किन्तु इतने छोटेसे देशमें इतनी जागृति, उत्साह और जीवन है कि देखकर आश्चर्य होता है।

न्याय, सत्य, धर्म एवं विवेकको पैरोंतले दबाकर जापानने कोरियाको अपने अधीन किया है। पर कोरिया-निवासी जापानकी अधीनता स्वीकार नहीं करना चाहते। वे विद्रोह करते हैं और जापान उनपर अकथनीय अत्याचार करके उन्हें दबाता है। कोरियामें जापानके अत्याचारकी कहानी सुनकर शरीर कांप उठता है।

फिलिप जेसन

कोरियाकी स्वाधीनताके अग्रदूत थे फिलिप जेसन। उन्होंने छात्रोंको लेकर अत्याचारी जापान सरकारके विरुद्ध एक षड्यन्त्रकी आयोजना की किन्तु षड्यन्त्रका पता लग जानेपर वे भागकर अमेरिका चले गये। कुछ दिनके बाद फिर देश लौट आये।

देश लौट आनेपर उन्होंने एक पत्रिका प्रकाशित की एवं स्वाधीनता क्लब नामक एक क्लब स्थापित किया। इस पत्रिका और क्लबने समस्त कोरियावासियोंको उत्तेजित एवं सचेतन किया।

सिञ्चूमैनरी

जेसनके बाद पत्रिका और क्लबका भार सिञ्चूमैनरीके ऊपर पड़ा। रीने इतने जोरसे आन्दोलन आरम्भ किया कि पहले तो सरकारने भयङ्कर अत्याचार करना शुरू किया किन्तु अत्याचारसे कारियावासियोंकी उत्तेजनाको बढ़ते देखकर सरकार कुछ नरम पड़ी एवम् कोरियानिवासियोंके दावोंको पूर्ण करनेकी आशा दिलाई। पर उत्तेजनाके कुछ कम होते ही सरकारने फिर दमननीतिका आश्रय लिया। री गिरफ्तार किये गये और उन्हें प्राणदण्डकी सजा दी गई, किन्तु भूलसे उनके बदलेमें एक दूसरे आदमीको फांसी दी गई, इसलिये वे बच गये।

कोरियाका राष्ट्रीय दल निरस्त्र आन्दोलन चला रहा था पर जापानियोंके अत्याचारका जवाब देनेके लिये अब एक दलके लोगोंने एक गुप्त दलकी सृष्टि की। उस गुप्त दलका नाम हुआ, "न्याय सेना।" इस दलके लोग हथियार लेकर पहाड़ोंमें छिप जाते और मौका पाते ही जापानी कर्मचारीकी हत्या कर फिर पहाड़ोंमें छिप जाते थे। जापानी अवाक हो जाते कि बिजलीकी तरह ये कहांसे आते और कहां चले जाते हैं। बहुत चेष्टा करनेपर भी उनका पता नहीं चलता, जहांपर जापानी अत्याचार करते, वहींपर अकस्मात् न्यायसेनाका आविर्भाव होता, और जापानियोंका विनाश कर न्याय सेना चली जाती। जापानी न्याय-सेनाके नामसे कांप उठते थे।

प्रजातन्त्र घोषणा

तब जापानी लोगोंको विद्रोही होनेके संदेहमें गिरफ्तार कर अत्याचार करने लगे। समस्त कोरियामें आग भड़क उठी किन्तु कोरियन नेता किञ्चित् मात्र भी नहीं डिगे।

उन्होंने एक शुभ दिनको कोरियाकी स्वाधीनता एवं प्रजातन्त्रकी घोषणा कर दी। फलस्वरूप सब नेता गिरफ्तार किये गये। कोरियामें फौजी कानून जारी हुआ किन्तु कोरियावासी निर्भीक, अचल एवं अटल रहे, तीन महीनेके भीतर प्रायः दो लाख आदमी गिरफ्तार किये गये और प्रायः नौ हजार आदमियोंको सजा मिली। पर स्वाधीनता-आन्दोलन तिलमात्र भी कम नहीं हुआ।

वीर छात्र समाज

कोरियाके छात्र-छात्रियोंने स्वाधीनताके आन्दोलनमें जैसा वीरत्व दिखाया, संसारमें उसकी तुलना नहीं। उन्होंने स्कूल कालेजोंको छोड़कर जातीय राष्ट्रीय पताका उड़ाकर पुलिसके अत्याचारके सामने अपनी छाती खोल दी। कितने बालक-बालिकाओंने अपने प्राणोंकी आहुति दी जिसकी गिनती नहीं। कोरियाके इतिहासमें उनका चित्र सदा उज्ज्वल रहेगा।

कोरियाकी स्त्रियां

स्वाधीनताका आन्दोलन जिन्होंने कोरियामें सफल किया वहांकी स्त्रियाँ ही थीं। आन्दोलनमें भाग लेनेके अपराधमें उनपर

तरह-तरहके अत्याचार किये गये, किन्तु तो भी वीर रमणियां पीछे नहीं हटीं।

स्त्रियोंके ऊपर अत्याचार करके अनेक महारथियोंका पालन हुआ है। जापानको भी अवश्य ही उस पथका पथिक होना पड़ेगा। यद्यपि कोरिया अभी भी स्वाधीन नहीं हुआ है फिर भी उसकी मुक्तिका सूर्य्य उसके भाग्य-आकाशमें चमक रहा है।



रीफ



रीफ मरक्कोके अन्तर्गत एक छोटासा प्रदेश है। मरक्कोमें फ्रांस और स्पेनका अधिकार है। गोला-बारूदके जोरसे उन्होंने रीफमें प्रवेश किया था। प्रवेश करते ही उन्होंने रीफके व्यवसाय-वाणिज्यपर अपना एकाधिपत्य जमा लिया। रीफ कोयलेकी खानके लिये विख्यात है। स्पेनियर्डों ने वहांकी कोयलेकी खानोंको अपने अधिकारमें कर लिया। मुट्टे का कारबार भी उन्होंने अपने हाथमें कर लिया। उसकी दरको बढ़ाकर ४५) मन कर दिया। इसी एक ही शोषणके फलस्वरूप देशवासी गरीब हो गये। उसके बाद जब खाद्य द्रव्योंके दाम भी ऊंचे हो गये तब देशमें शोचनीय दुर्भिक्ष पड़ गया। दुर्भिक्षके साथ-ही-साथ विदेशी शासनके विरुद्ध विद्रोह देखा गया।

प्रथम विद्रोह

सन् १९०७ में मेलिला बन्दरमें पहले-पहल विद्रोहका सूत्रपात हुआ। मरक्कोके नवयुवक एक गुप्त समिति संगठित कर स्पेनियर्डोंको भगानेकी चेष्टा करने लगे। किन्तु संघबद्धताके अभाव-से उस बार उनकी जीत नहीं हुई। विजय न होनेपर भी देशमें एक नवजीवनका संचार हो गया। नेतागण जातिको जगानेके लिये उपयुक्त शिक्षा दीक्षा देने लगे। सब भेदभावको भुलाकर देशवासी एक हो गये।

द्वितीय विद्रोह—गाजी अब्दुल करीम

उसके बाद सन् १९१० में दूसरा विद्रोह आरम्भ हुआ। इस विद्रोहके नेता हुए वीर श्रेष्ठ गाजी अब्दुल करीम। अब्दुल धनी जमींदारके लड़के थे, पर वे मूर्ख अथवा विलासी नहीं थे। उन्होंने फ्रान्स, स्पेन और मरक्कोकी राजधानीमें जा-जाकर नाना प्रकारकी शिक्षा प्राप्त की। पादरियोंके एक युद्ध-विद्यालयमें उन्होंने युद्ध-कला सीखी। बाल्यकालसे ही उनकी आकांक्षा थी देशको मुक्त करना। पहला विद्रोह जब आरम्भ हुआ, तब उनकी अवस्था उन्नीस सालकी थी। उसी समय उनकी असाधारण कर्म-शक्तिको देखकर सबको विस्मय हुआ था।

स्पेन सरकारने अब्दुल करीमको कैदखानेमें बन्द कर रखा था। किन्तु अब्दुल एक दिन कैदखानेसे भाग कर गुप्तरूपसे रीफ चले आये। रीफ आकर वे पुनः समिति स्थापित कर सैन्य-संग्रह करने लगे। यूरोपसे अस्त्र-शस्त्र मंगाकर सैनिकोंको आधुनिक युद्ध-कलाकी शिक्षा देने लगे। उसके बाद उन्होंने उपयुक्त समय देखकर स्वाधीनता-संग्रामकी घोषणा की। स्पेन दो-दो बार रीफको दबानेके लिये गया, पर दोनों ही बार उसकी पराजय हुई। अनेक स्पेनी सैनिक रीफोंके बन्दी हो गये। स्पेनने चालीस लाख रुपया दण्ड देकर उन्हें छुड़ा लिया और स्वीकार किया, रीफ स्वाधीन है। रीफमें प्रजातन्त्रकी स्थापना हुई। उसके प्रथम सभापति हुए गाजी अब्दुल करीम।

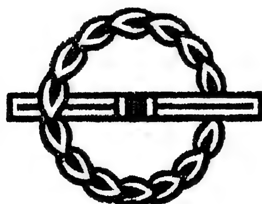
मेघाच्छन्न सूर्य

पहले कह आये हैं, मरक्कोमें फ्रान्सका भी कुछ राज्य है। रीफोंके प्रतापको देखकर फ्रान्स वालोंको भय हुआ कि यदि रीफ आज सिर ऊपर उठाकर खड़ा हो, तो वह स्पेनकी तरह फ्रांसको भी भगा देगा। यह सोचकर फ्रांसने रीफोंके विरुद्ध युद्ध-यात्रा की।

उस समय संसारके इतिहासमें स्वाधीनता-युद्धकी एक अपूर्व छवि देखी गयी। एक ओर मुट्ठीभर रीफ सैनिक थे—उनके पास न तो तोप बन्दूक थी और न जहाज और एरोप्लेन। दूसरी ओर थे लाखों स्पेनियार्ड और फ्रांसीसी सैनिक जिनके पास अगणित अस्त्र-शस्त्र और जहाज थे।

रीफ सेना पहाड़ोंमें छिप-छिपकर शत्रुओंपर आक्रमण करती थी। बहुत दिनोंतक युद्ध हुआ, पर अन्तमें रीफ अपनी रक्षा नहीं कर सके। वीरश्रेष्ठ अब्दुल करीम कैद कर लिये गये।

रीफोंके हृदयमें इस अत्याचारकी आग आज भी जल रही है अवश्य ही एक दिन वह स्वाधीन होगा।



जापान



जापान वीरत्व और स्वाधीनताकी जन्मभूमि है। जापानी स्वाधीनता और सम्मानरक्षाके लिये हँसते हुए अपने प्राणोंकी बलि दे सकते हैं। जापानमें 'हाराकिरा' नामक एक प्रथा थी। उसके अनुसार जापानी अपने हाथोंसे अपना पेट काटकर आत्म-हत्या कर लेते थे। यह कार्य इतना सम्मानजनक समझा जाता था कि प्रति वर्ष हजारों जापानी आत्महत्या कर लिया करते थे। चाहे इस प्रथासे और कुछ न हो, पर इससे स्पष्ट प्रमाणित होता है कि जापानी मृत्युसे नहीं डरते थे।

जापानके क्षत्रिय सामुराई कहलाते हैं। सामुराई ही जापान-के भाग्य-विधाता थे। सामुराइयोंके शासनमें पहले पहल जापानी सुख और चैनसे दिन काटते थे। चतुर्दश शताब्दिमें अशान्ति उपस्थित हुई।

विद्रोही नेता - नीट्टाओ सीसाद

राजा आमोद-प्रमोदमें ही अपना समय बिताते थे। राजकर्म-चारियोंमें प्रत्येक एक एक राजा बन बैठा। सभी अत्याचार करनेमें पटु थे किन्तु प्रजा दुःख-सुखकी ओर किसीका ध्यान नहीं था। तब कितने ही वीरोंने विद्रोहका झण्डा खड़ा किया। उनके नेता हुए—वीर नीट्टाओ सीसाद। नीट्टाओ सीसादने प्रतिज्ञा की

कि जब राजाके अत्याचारने प्रजाकी स्वाधीनताको दबा रखा है तो मैं इस राजाको हटाकर पुनः स्वाधीनता स्थापित करूंगा। पहले तो राजा नीट्टाओ सीसादकी बात सुनकर मुसकुराये, किंतु विद्रोहियोंका प्रताप देखकर उनकी हँसी दो दिनमें ही चली गई। उन्होंने विद्रोहियोंको दमन करनेकी चेष्टा की। राजधानी चारों ओरसे सेनाओं द्वारा सुरक्षित की गई। वीर नीट्टाओ सीसाद पहले कुछ हिचके। जल और थल दोनों ही ओरके रास्ते बन्द हैं, राजधानीमें किस तरह घुसा जाय। उन्होंने अत्यन्त निराशाके साथ अपनी तलवारको नदीके जलमें फेंक दिया। दूसरे दिन एक आश्चर्यजनक घटना घटी। नदी एक-ब-एक बड़े जोरसे बहने लगी। राजाने नदीमें जितने जहाज पहरा देनेके लिये रखे थे वे सब नदीकी धारमें बह गये। नीट्टाओ सीसाद यह मौका देखकर सदल राजधानीमें घुसकर अत्याचारी राजाका विनाश करने लगे। युद्धके बाद उनकी मृत्यु हो गई। वीर नीट्टाओ सीसादने अपनी जन्मव्यापी साधनासे जापानके राज-नैतिक आन्दोलनकी गतिको फेर दिया।

नूतन जापान

जापान इतने दिनोंतक निद्रावस्थामें था। जब विदेशी नाना प्रकारके अस्त्र-शस्त्र जापानके दरवाजेपर गर्जन करने लगे तब जापानियोंकी निद्रा भंग हुई। कमोडर येरी योरोपीय सेना लेकर जापानमें उतरे। जापानियोंने देखा कि आधुनिक जगत्के साथ मुकाबिला करनेमें शिक्षा दीक्षा, शिल्प, वाणिज्य,

अस्त्र शस्त्र, बन्दूक, एरोप्लेन, मशीनगन आदिकी आवश्यकता है तब जापानियोंने उसी ओर ध्यान दिया। जापानी युवक विदेशोंमें जा जाकर ज्ञान-विज्ञानकी शिक्षा प्राप्त करने लगे। इस नूतन जापानके मन्त्रदाता गुरु थे तोर जोरियो। उन्होंने युवकोंके प्राणोंमें शक्तिकी ज्योति जला दी। किन्तु सामुराई इसमें बाधा देने लगे। तब तोर जोरियो उनका प्रतिवाद करके आन्दोलनको और तीव्र गतिसे चलाने लगे। वह प्रचार करने लगे कि जो राजा प्रजाकी उन्नतिमें बाधा दे, उसका जितना शीघ्र विनाश किया जाय उतना ही अच्छा है। इसका परिणाम यह हुआ कि तोर जोरियो कैद कर लिये गये। किन्तु कैदसे वे कभी डरनेवाले नहीं थे। जेलसे निकलने पर भी वे पुनः विद्रोहका प्रचार करने लगते।

तोर जोरियोंमें ऐसी शक्ति थी कि जो एक बार उनका भाषण सुनता उसके प्राणोंमें आग जल उठती। वे जेलमें जाते किन्तु जेलके अध्यक्षसे लेकर नौकर चाकर तक भी उनके साथ मतवाले हो जाते थे। जब किसी तरहसे उनका दमन नहीं हो सका तब राजाने उनके प्राणदंडकी व्यवस्था दी।

नूतन जापानके इतिहासमें वह एक स्मरणीय दिन था। सड़कके दोनों ओर असंख्य लोगोंकी भीड़ थी। बीचमें स्वदेशप्रिय विद्रोहियोंके गुरु पहरेदारोंसे घिरे मृत्युका आलिङ्गन करने जा रहे थे, किन्तु उनका तेज किञ्चितमात्र भी हत नहीं हुआ था। वे चिल्ला-चिल्लाकर देशवासियोंको राजाके विरुद्ध उत्तेजित

करने लगे, पहरेवाले उन्हें रोक नहीं सके। उसके बाद उनके रक्तसे घातकोंकी तलवार रंग गई। विद्रोहियोंके गुरु तोरजोरियो घातकोंकी तलवारके नीचे खड़े होकर भी नूतन जापानको मुक्तिकी वाणी सुना रहे थे।

इतने दिनोंतक विद्रोहकी आग धीरे-धीरे जल रही थी। अब गुरुके रक्त-स्पर्शसे और भी विकट रूपमें जलने लगी। ५१ जापानी युवकोंने संगबद्ध हो विद्रोहको घोषणा की। समस्त जापानियोंने उनकी पुकार सुनी। शासन-विद्रोहसे शक्तिहीन हो गये। तब विद्रोहियोंने धूम-धामके साथ सम्राटको सिंहासनपर बैठाया। सम्राटने अपने हाथसे नूतन जापानको गढ़नेका भार लिया। बहुतसे स्कूल खोले गये और निःशुल्क शिक्षा देनेका बन्दोबस्त किया गया। टेलिग्राफ, रेलवे आदिकी स्थापना की गई। कारखाने खोलकर अस्त्र-शस्त्र तैयार किये जाने लगे। जापानी युवक ज्ञान-विज्ञानकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये देश-विदेश भेजे गये। ऐसा कानून बनाया गया जिससे सबको युद्ध-कला सीखनी पड़े। कुछ ही वर्षों में जापान असीम शक्तिशाली हो गया।

रूस-जापान युद्ध

शीघ्र ही जापानकी शक्ति-परीक्षाका दिन उपस्थित हुआ। शक्तिमद गर्वीले रूसके साथ जापानको युद्ध करना पड़ा। पहले तो संसारकी सब जातियोंने नाकको सिकुड़ाकर कहा कि रूस भालूके साथ जापान चूहा लड़नेका साहस क्यों कर रहा है? पर जापानने सबकी भूलको दूर कर दिया। रूसको उसने बड़े

पराक्रमसे पराजित कर दिया। इस युद्धमें जापानियोंकी स्वाधीनता-कामना और वीरत्व संसारमें प्रसिद्ध हो उठा। स्त्रियां युद्ध करनेके लिये तैयार हो गईं। माताओंने अपने पुत्रोंको देशकी मान-रक्षाके लिये युद्धमें भेज दिया। एक मांके एक ही पुत्र था, उसका पुत्र युद्धमें मारा गया। जिस दिन यह खबर आई उस दिन उसकी माता आंखोंसे आंसुओंकी धारा बहाने लगी। एक आदमीने कहा, छिः तुम्हारे लड़केने देशके लिये प्राण दिये हैं। उसके लिये तुम क्यों रो रही हो? माताने कहा, मैं उसके लिये नहीं रो रही हूं। मैं तो इसलिये रो रही हूं कि मेरे और कोई पुत्र नहीं है। मेरे एक और पुत्र होता तो मैं उसे भी युद्धमें भेजती। बहनों और भाइयोंको मदद करनेके लिये तरह-तरहके शिल्प कार्यों से रुपये पैदा कर युद्धके भंडारमें दान देती। बालकोंके वीरत्वकी बात क्या बतलाऊं। उनमें यही होड़ लगी रहती थी कि देखें देशके लिये पहले कौन प्राण देता है। एक बार सेनापतिने विज्ञापन दिया कि रूसी जहाजको नष्ट करना होगा। पर इसमें मृत्यु निश्चित है। इसके लिये कई आदमियोंकी आवश्यकता है। जिसकी इच्छा हो वह आवेदन करे। इस विज्ञापनके उत्तरमें दो हजार युवकोंने आवेदन किया। युद्धक्षेत्रमें रूसी धड़ाधड़ गोले बरसा रहे थे। पर जापानियोंने अपनी जानकी कुछ भी परवाह न कर रूसी जहाजपर आक्रमण कर ही दिया। अन्तमें उनकी विजय हुई।

फिलिपाइन



क्यूबाके समान फिलिपाइन द्वीपपर भी स्पेनका अधिकार था। स्पेन फिलिपाइनपर अकथनीय अत्याचार करता था। फिलिपाइन निवासियोंने जब देखा कि स्पेनके अत्याचार एवं शोषण-नीतिसे उनका वाणिज्य-व्यवसाय नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है और वे क्रमशः गरीब होते चले जा रहे हैं तब उन्होंने स्थिर किया कि विदेशियोंको अपने देशसे भगाना होगा।

फिलिपाइन वासियोंपर स्पेन किस प्रकारका अत्याचार करता था, उसका नमूना दे रहे हैं। शासन कार्यके सर्वेसर्वा थे—स्पेनके धर्म गुरु। वे नेटिवों अर्थात् फिलिपाइनके असली बाशिन्दोंको फूटी आंखों भी देखना नहीं चाहते थे। इसीलिये वे उनपर तरह तरहके अत्याचार करते थे। वे नेटिव स्त्रियोंको भी नहीं छोड़ते थे। नेटिव विदेशियोंके साथ व्यापार नहीं कर सकते थे। अधिकारियोंकी ओरसे सदा प्राणपणसे इसी बातकी चेष्टा होती रहती कि नेटिवोंमें स्वाधीनता अथवा आत्मविश्वासके भाव जाग्रत नहीं होने पावें। आधुनिक विज्ञानको सीखकर नेटिव शक्तिशाली हो जायेंगे, इसलिये उन्हें विज्ञानकी शिक्षा देनेका कोई बन्दोबस्त नहीं किया जाता था। नेटिवोंको केवल बाइबिल और धर्म पुस्तक पढ़नेका अधिकार था।

किन्तु नेटिवोंको जो कुछ थोड़ी-बहुत शिक्षा मिली, उसीसे उनकी आंखें खुलने लगीं। उन्होंने स्पेनियर्डोंके अत्याचारोंका प्रतिवाद करना आरम्भ कर दिया। बस फिर क्या था? अधिकारी आग-बबूला हो गये। वे नेटिवोंका दमन करनेके लिये कोई कारण सोचने लगे। कारण खोजनेमें कितनी देर लगती है।

कावाइत विद्रोह

नेटिव पादरियोंने देशकी उन्नतिके लिये प्राणप्रणसे चेष्टा की थी। वे ही स्वदेश बान्धव समितिके नेता थे। इसलिये उन्होंने अपनेमेंसे एक आदमीको नेटिवोंमें भेज दिया। वह लोगोंको विद्रोह करनेके लिये उत्तेजित करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १८७२ में कावाइतमें विद्रोह दिखाई दिया। विद्रोहके नेता हुए फादर बुर्गो। तब स्पेनिश अपनी सेना लेकर कावाइतमें उपस्थित हुए। वहां जितने भी शिक्षित व्यक्ति एवं सम्भ्रान्त परिवार थे वे सब-के-सब गिरफ्तार हो लोदन द्वीपमें निर्वासित कर दिये गये। फादर बुर्गो और तीन अन्य पादरियोंको खुले स्थानमें फांसीकी सजा दी गयी।

विद्रोही समिति

नेटिवोंने जब देखा कि स्पेनिश सहज ही देशको छोड़कर नहीं जायंगे, तब वे समिति स्थापित कर आन्दोलन चलाने लगे। नाना स्थानोंमें केन्द्र स्थापितकर विद्रोही प्रचार करने लगे। स्पेनिश सन्देहमें लोगोंको गिरफ्तार करने लगे। एक ही बार १९६ नेटिवोंको षड्यन्त्रके सन्देहमें गिरफ्तार कर जमीनके नीचे

एवं घरमें कैद कर रखा गया था। उनमेंसे ५४ आदमी तो गर्मी-को बर्दाश्त न कर मर गये, बाकी १४२ आदमी गोलीसे मार दिये गये। इसके कुछ दिन बाद कितने ही देशप्रिय नेता गिर-फ्तार कर मार डाले गये। आशय यह है, कि अत्याचार करनेमें स्पेनिशोंने कुछ भी उठा नहीं रखा।

किन्तु जब विद्रोहकी आग भड़क उठती है तब अत्याचार उसको रोक नहीं सकता। तब स्वाधीनता-प्रेमी युवक तरुण फिलिपाइन समिति संगठित कर देशके कोने-कोनेमें स्वाधीनता-की वाणीका प्रचार करने लगे। इस तरुण समितिके सञ्चालक थे रिजाल पिलार, जिना और माबिनी आदि प्रमुख नेतागण।

देशभक्त रिजाल

मोस रिजालका नाम विशेष-रूपसे उल्लेखयोग्य है। विदेश से शिक्षित होकर जो सब नवयुवक विप्लवका भाव लेकर देशमें लौटे थे रिजाल उन सबमें प्रमुख थे। वे देशको जगानेकी तीव्र आकांक्षासे आस्ट्रिया, बेलजियम, जर्मनी, स्पेन, जापान आदि देशविदेशोंमें घूम-फिर कर आधुनिक विप्लवके सब कायदे कानून सीखकर आये थे। उनमें लिखने और बोलनेकी असाधारण शक्ति थी। देश आते ही उन्होंने देश-वासियोंके सामने शिक्षाका नूतन आदर्श रखा। सन् १८८६ ई०में उन्होंने एक उपन्यास लिखा। उसमें उन्होंने स्पेनिशोंके अत्याचार तथा फिलिपाइन निवासियों-की दुःख-कष्ट कहानी बड़े विशद रूपसे व्यक्त की। इसीसे रिजाल लोकप्रिय हो गये।

रिजालको विद्रोहमें सम्मिलित होते देख स्पेनिश बड़े भयभीत हुए। रिजाल विदेश चले गये। कुछ दिनके बाद फिर वे देश लौट आये।

इस बार उन्होंने फिलिपाइन लीग नामक एक नये दलकी सृष्टि की। इस दलका उद्देश्य था, पादरियोंको देशसे भगाना एवं स्पेनिश शासनकर्त्ताओंके स्वेच्छाचारको दूर करना।

तब पादरियोंने रिजालपर अभियोग लगाया। वे उन्हें प्राणदंड देनेके लिये जोर देने लगे। पर शासनकर्त्ताओंने रिजालको मिनदानोंमें निर्वासित कर दोनों पक्षको सन्तुष्ट किया। पर पादरियोंने इतना हो-हल्ला मचाया कि शासन कर्त्ताको इस्तीफा देकर स्पेन लौट जाना पड़ा। नये शासनकर्त्ता हुए ब्लांको।

काटिपुनान

रिजालको निर्वासित होते देख राष्ट्रीय दलवालोंने सोचा कि प्रकट समितिसे काम नहीं चल सकता, अब गुप्त समितिकी स्थापना होनी चाहिये। तदनुसार काटिपुनान नामक एक गुप्त समितिकी सृष्टि हुई। इस समितिके संस्थापक हुए कावाइतके एक स्कूल मास्टर। उनका नाम था एंडेस बोंनफेसिआ। इस समितिका काम एक वर्षतक खूब जोरोंसे चला। समितिके सदस्य गुप्त रूपसे अस्त्र-शस्त्र संग्रह कर युद्धके लिये तैयारी करने लगे।

एमिलो एगुइनालडो

इस समितिमें जो सब युवक सम्मिलित थे, उनमें एगुइ

नालडोका नाम विशेष रूपसे उल्लेख योग्य है। ज्वलन्त स्वदेश-प्रेमके वशीभूत हो वे इस समितिमें सम्मिलित हुए थे। एगुइ नालडो और युद्ध-विद्यामें विशारद युवक मालवाने भावी युद्धका भार ग्रहण किया।

सन् १८९६ ई०में एक देशद्रोहीकी विश्वासघातकतासे इस गुप्त समितिका षड्यंत्र प्रकट हो गया।

स्पेनिशोंने तीन सौ कार्यकर्त्ताओंको गिरफ्तार कर कैद कर लिया।

तब काटिपुनानने युद्धकी घोषणा की। एक दल सुशिक्षित सैनिकोंको लेकर एगुइ नालडोने युद्धकी घोषणा की।

वीर एगुइ नालडोने मुट्ठी भर सैनिकोंको लेकर हजार हजार स्पेनिश सैनिकोंको बेचैन कर दिया। स्पेनिश बहुत चेष्टा करने पर भी एगुइ नालडोका दमन नहीं कर सके। अन्तमें उन्होंने सन्धिका प्रस्ताव रखा। एगुइ नालडोको एक चीजका अभाव था। अर्थात् वे अर्थाभावके कारण युद्धकी सामग्री नहीं जुटा सकते थे। इस बार उन्होंने सोचा कि कांटेसे कांटा निकालना चाहिये। स्पेनिशोंका धन लेकर स्पेनिशोंको मारना होगा। इसीलिये सन् १८९७ ई०में कई लाख रुपये लेकर वे कुछ दिनके लिये हाँगकांग चले गये।

वीरपत्नी ब्राकेन

सन्धि हुई, किन्तु एक वर्ष भी पूरा नहीं हो पाया था कि स्पेनिशोंने सन्धिकी शर्तोंको तोड़कर अत्याचार करना शुरू कर

दिया। फलतः विद्रोहकी आग फिर भड़क उठी। देशभक्त रिजाल रिहा कर दिये गये। वे देश लौट आये थे। किन्तु फिर उनपर मिथ्या अभियोग लगाया गया। इस बार इन्हें प्राणदण्ड दिया गया। उस समय रजालका विवाह हालमेंही हुआ था। उनकी पत्नीका नाम था ब्राकेन। ब्राकेन आयरिश महिला थी। अपने स्वामीके प्रति इस अन्यायसे उनकी नस नसमें खून खौल उठा। वे स्वामीके अधूरे कार्यको चलाने लगीं। देशवासियोंके हृदयमें विद्रोहका बीज बोने लगीं। फिर युद्धकी तैयारी हुई। इस बार वीरपत्नी ब्राकेन विद्रोहियोंके साथ स्पेनिशोंके विरुद्ध लड़ने गयी। स्पेनिश भी पूरी तैयारीसे उनका मुकाबला करने आये।

युद्ध छिड़ गया। स्वाधीनता-प्रेमी देशभक्तोंके रक्तसे पृथ्वी लाल हो गयी। तब अमेरिका अपनी सेना लेकर आ उपस्थित हुआ। एगुइ नालडो सदलबल भी अमेरिकाके साथ मिल गये। स्पेनको उन दोनोंकी मिलित शक्तिके सामने हार माननी पड़ी।

नयी बेड़ी

किन्तु फिलिपाइन स्वाधीन नहीं हुआ। अमेरिकाने उसे अपनी मुट्ठीमें रखना चाहा। तब एगुइ नालडोने अमेरिकाके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की। महीनों युद्ध चलता रहा। अन्तमें दुर्भाग्य-वश एगुइ नालडो और मालवा शत्रुओंके हाथ पड़ गये। अमेरिका फिलिपाइनका मालिक बन बैठा।

फिलिपाइन आजतक इस नयी बेड़ीको काटनेके लिये युद्ध कर रहा है। हमारी प्रार्थना है, फिलिपाइन शीघ्र ही स्वाधीन हो।

मिश्र

भारतवर्ष एवं मिश्र दोनों देशोंमें बहुत कुछ समानता है। दोनों ही देशोंकी भूमि उर्वरा है थोड़े परिश्रमसे खाने-पीनेको मिल जाता है, इसलिये दोनों देशोंके आदमी आरामतलब और आलसी हो गये थे। उसपर दोनों ही देश विदेशियोंके अत्याचारसे पीड़ित होते आये हैं। और दोनोंही देशोंमें ऐसे महापुरुषका जन्म हुआ जो देशको जागृत कर स्वाधीनता-पथपर ले चले हैं।

मिश्र देशका इतिहास बहुत पुराना है, किन्तु उसी प्राचीनकालसे ही मिश्रके इतिहासमें वीर पुरुषोंके प्रादुर्भाव होनेका पता चलता है।

सेकेनेनरा

उस समय मिश्रमें हिकससोंका राज था। सारा मिश्र उनके अत्याचारसे कांप रहा था। जब अत्याचार असह्य हो गया तब दक्षिणी मिश्रके एक करद राजाने हिकससोंके विरुद्ध विद्रोहका झंडा खड़ा किया। उन्होंने देशवासियोंसे कहा – भाइयो, विदेशी हमारे धन, मान यहांतक कि धर्मको लेकर खेलवाड़ कर रहे हैं! क्या हम मनुष्य नहीं हैं कि चुप रहकर इस अत्याचारको सहते रहेंगे। मिश्रवासियोंने एक स्वरमें कहा—नहीं, नहीं हम लोग

कभी अत्याचार नहीं सहन करेंगे। अत्याचारी हिकससोंको देश-से मार भगायेंगे।

जब मिश्रवासी इस कदर उत्तेजित हो उठे, तब हिकससोंके अत्याचारकी मात्रा और भी बढ़ गयी।

हिकससोंके राजा आपेपने सेकेनेनराके पास एक पत्र भेजा। उस पत्रमें लिखा था—थिबेस शहरकी झीलसे सिन्धु हाथी इसी समय हटा दिये जायं। उनके शोरगुल मचानेसे हमारी नींदमें बाधा पड़ती है। जिस तरह हमारे देशमें गो माताको पूज्य एवं पवित्र मानते हैं, उसी प्रकार मिश्र देशमें सिन्धु हाथीको पवित्र मानते है। सैकड़ों मील दूरसे राजा अपेप सिन्धु-हाथियोंके चिल्लानेसे सो नहीं सकते थे, यह बिल्कुल झूठी बात थी। उसका असली उद्देश्य था—मिश्र देशवासियोंके धार्मिक कार्यमें वाधा देना।

मिश्र देशवासी राजाके इस उद्देश्यको समझकर युद्ध करने-के लिये तैयार हो गये। वीरश्रेष्ठ सेकेनेनरा उनके आगे-आगे चले। एक ओर स्वाधीनताप्रेमी तरुण मिश्रियोंका दल था और दूसरी ओर अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित निठुर हिकससकी सेना। अपूर्व दृश्य था, तरुण मिश्री, स्वाधीनताके लिये हंसते हुए मृत्यु-का आलिङ्गन कर रहे थे। वीर सेकेनेनरा एक क्षण भी विश्राम न कर सिंहकी नाईं रणक्षेत्रमें घूम रहे थे। उनके हथियारके सामने शत्रुपक्षका कोई खड़ा नहीं रह सकता था।

उसके बाद सेकेनेनरा लड़ते-लड़ते शत्रुओंके व्यूहमें घुस

गये। वे अकेले थे। उनके चारों ओर असंख्य शत्रु थे। महाभारत-के अभिमन्युकी नाईं सेकेनेनरा अकेले ही शत्रुओंसे युद्ध करने लगे। हिकससोंने देखा कि सामनेसे लड़कर इस सिंहको पराजित नहीं किया जा सकता। तब उन्होंने एक जघन्य उपायका अवलम्बन लिया। एक आदमीने धीरे-धीरे जाकर पीछेसे उन्हें मारा। सेकेनेनरा इस गुप्त आघातसे मूर्च्छित हो जमीनपर गिर पड़े। इसके बाद एक दूसरे हिकससने उनकी छातीमें छूरा घुसेड़ दिया। सेकेनेनरा मर गये। मरते समय वह कह गये—भाइयो, युद्ध करो, युद्ध करो। पराधीनताकी अपेक्षा युद्धमें मृत्यु श्रेयस्कर है। सेकेनेनराकी मृत्युसे हिकसस बहुत प्रसन्न हुए, पर मिश्री हताश नहीं हुए। सेकेनेनराकी मृत्युसे उत्तेजित हो उन्होंने नवीन शक्ति और नवीन स्फूर्तिसे युद्ध आरम्भ कर दिया। थोड़े ही समयमें हिकसस पराजित हो भाग गये। मिश्रके आकाशमें फिर स्वाधीनताका झण्डा फहराने लगा।

विद्रोही मिश्र

इसके एक हजार वर्ष बाद फारसके राजा केम्बिससने मिश्रपर अधिकार जमाया। मिश्रियोंने प्राणपणसे फारसके राजाका सामना किया। किन्तु एक देशद्रोही मिश्रीकी विश्वासघातकतासे उनकी हार हो गयी। फारसके राजाने मिश्र देशको तो जीत लिया, पर वे मिश्रियोंके मनपर विजय नहीं पा सके। जिस दिनसे उन्होंने मिश्रको जीता, उसी दिनसे मिश्रमें विद्रोहकी आग जलने लगी।

दरायुसके शासनकालके अन्तिम भागमें यह विद्रोह प्रबल हो उठा। विद्रोहियोंने फारसवालोंको देशसे भगाकर स्वाधीनता-का झंडा खड़ा कर दिया। उसके बाद एक वर्ष तक मिश्रने अपनी स्वाधीनताकी रक्षा की। दूसरे वर्ष राजा जरक्सीजने अगणित सेना लेकर फिर मिश्रपर अधिकार जमा लिया और अपने भाई एकिमेनसको मिश्रके सिंहासनपर बैठाकर चले गये। सिंहासन पर बैठते ही एकिमेनस इस प्रकार अत्याचार करने लगा कि स्वाधीनताकामी मिश्री सिर ऊपर नहीं उठा सकें। बीस वर्ष तक फारसके राजदण्डके नीचे रहकर मिश्र स्वाधीनता-लिये तपस्या करने लगा। एक दिन उसकी तपस्या सफल हुई।

वीर साधक इनरास एवं आमीरितियास स्वाधीनताके अग्नि-मय सन्देश लेकर जाग उठे। सारा मिश्र उनके साथ मिल गया।

फारसके राजाने विद्रोहको दबानेके लिये चार लाख पैदल और दो सौ जहाजोंमें भरकर समुद्री सैनिक भेजे।

मिश्री देशका नाम लेकर उन लाखों सैनिकोंके विरुद्ध युद्धमें कूद पड़े। उस दिन फारसके एक लाख सैनिक मारे गये और तीन लाख सैनिक अपनी जान लेकर भाग गये।

इस बार फारसके राजाने पांच लाख सैनिक भेजे। इस बार भी मिश्रियोंने बड़े साहसके साथ युद्ध किया। दैवात इनरास आहत हो गये। एक क्षणमें युद्धकी गति फिर गयी। मिश्र फिर फारसके अधीन हो गया। देशभक्त वीर इनरास जघन्य रूपसे मार डाले गये। इस कांडसे सारा मिश्र क्षुब्ध हो उठा।

इसके बाद फारसके राजाने एक और कूटनीतिसे काम लिया। उन्होंने इनरास और आमीरतियासके दो लड़कोंको मिश्रके सिंहासनपर बैठा दिया। सेना और शासन-व्यवस्थाको अपने ही हाथमें रखा। किन्तु मिश्री इस भुलावेमें नहीं आये। उन्होंने स्पष्ट देखा कि फारसके राजा उनका मखौल उड़ा रहे हैं।

इस बार विद्रोहकी पूरी तैयारी की गयी। नेता हुए आमीरतियास। इस बारके विद्रोहसे मिश्र सम्पूर्ण रूपसे स्वाधीन हो गया।

विद्रोही मिश्रने इतिहासके पृष्ठोंमें यह विघोषित कर दिया कि पराधीन जातिके लिये विद्रोह ही प्रथम एवं प्रधान धर्म है।

आधुनिक मिश्र

मिश्रकी आधुनिक दुर्गतिका प्रधान कारण अंगरेजोंकी चाल है। अंगरेज बनिये हैं। व्यापारकी सुविधाके लिये स्वेजकी नहर उनके हाथमें रहनी ही चाहिये। स्वेजकी नहर मिश्रसे होकर ही बहती है, इसलिये मिश्रको दबा रखना आवश्यक है। इसी मूल नीतिके कारण अंगरेज मिश्रको अपने काबूमें रखना चाहते हैं।

अंगरेजोंकी इस दुर्नीतिका पता सेनापति अरबी पाशाको लगा। उन्होंने ही पहलेपहल देशको सावधान करते हुए कहा—भाइयो! विदेशियोंको बड़े आदरसे अपने घरमें मत बुलाओ। जब उन्हें बैठनेकी जगह मिल जायगी तब वे सोनेकी भी जगह खोजेंगे। मिश्री उनके मन्त्रसे अनुप्राणित हो विदेशियोंके विरुद्ध विद्रोहका प्रचार करने लगे।

यह देखकर अंगरेज अरबीके ऊपर अत्यन्त क्रुद्ध हुए। सन् १८८० ई० में एक यूरोपियनने एक निर्दोष मिश्रीका खून कर डाला। मिश्रियोंने भी विदेशियोंके इस अकारण अत्याचारका उपयुक्त जवाब दिया। वे भी विदेशियोंका विनाश करने लगे। फलस्वरूप पचास हजार यूरोपियन अपनी जान लेकर मिश्रसे भाग गये।

तब अंगरेज आदि विदेशी अड़चन डालने लगे उन्होंने कहा कि अरबीको देशसे निकालकर फिर मंत्री सभाका सङ्गठन करो। पर मिश्रियोंने गर्वसे जवाब दिया। अरबी मिश्रके गौरव हैं, हम उन्हें देशसे निकाल नहीं सकते।

इसपर अंगरेज बिगड़ उठे और एक बड़ी सेना लेकर युद्ध करने आये। अरबी भी युद्ध करनेके लिये तैयार बैठे थे।

आधी रात हो गयी थी। सारी सेना गहरी नींदमें सो रही थी। इसी समय अंगरेजी सेना चोरोंकी तरह दबे पांव जाकर सोयी हुई मिश्री सेनापर गोली बरसाने लगी। मिश्री यह नहीं जानते थे कि अंगरेज इस तरह कापुरुषोंकी नाईं उनपर आक्रमण करेंगे। उन्हें युद्ध करनेका अवसर नहीं मिला। अतः वे हार गये। इसी युद्धकी विजयका अंगरेज गर्व करते हैं। किन्तु गर्व न कर उन्हें लज्जित होना चाहिये। उस दिन यदि मिश्री सजग होते तो किसी तरह भी उनकी हार नहीं होती। मिश्री सैनिकोंका अंगरेज मुकाबला नहीं कर सकते। इसका ज्वलन्त प्रमाण माधी विद्रोह है। माधीको दमन करने जानेपर अंगरेजोंको सुदानमें बड़ी बुरी

तरह हारना पड़ा। इस तरह वे हारे कि बार-बार अवसर मिलने पर भी उन्होंने सुदान जीतनेका साहस नहीं किया। अस्तु।

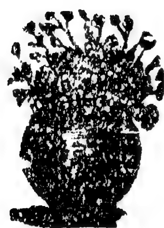
अरबी पाशा लङ्का निर्वासित कर दिये गये। अंगरेजोंने कहा—हम लोग शीघ्र ही मिश्रको छोड़कर चले जा रहे हैं। किन्तु जानेके बदले वे मिश्रमें अड़कर जम गये। अंगरेजी सेना मिश्रकी कर्ताधर्ता थी। मिश्रके शासनमें अंगरेजोंका हाथ था। मिश्रके व्यवसाय-वाणिज्य तथा बड़ी-बड़ी नौकरियोंपर अंगरेजोंका एकाधिपत्य था। मिश्र निवासी अंगरेजोंकी इस नीतिसे ऊब कर त्राहि-त्राहि करने लगे, तब

जगलुल पाशा

स्वाधीनताकी संदेश ले कार्यक्षेत्रमें उतरे। मिश्रके तरुण समाजने जगलुल पाशाका साथ दिया। सारे मिश्रमें हलचल मच गयी। तब अंगरेजोंने जगलुलको देशसे निकाल दिया। उसके बाद तरुणसमाजने विद्रोहका झण्डा ऊंचा किया। टेलिग्राफके तार काट डाले गये। बहुतसे अंगरेज पकड़कर रोक रखे गये। दो अंगरेजोंका खून भी कर डाला गया। मिश्रके पुलिस कर्मचारियोंको विद्रोह दमन करनेके लिये कहा गया। उन्होंने साफ-साफ उत्तर दिया - हम देशके विरुद्ध नहीं लड़ सकते। तब अंगरेजोंने भय खाकर जगलुलको देशमें बुला लिया। फिर आन्दोलन जोरोंसे चलने लगा।

तब अंगरेजोंने एक और चाल चली। जिस तरह हमारे देशमें एक साइमन कमीशन आया था, उसी तरह अंगरेजोंने मिश्रमें

भी एक मिलनर कमीशन भेजा। मिलनर कमीशन मिश्रमें आया; किन्तु दुःखका विषय है, किसीने उससे बात भी नहीं की। कमीशनके सदस्य भग्न हृदय हो इंगलैंड लौट गये। इससे स्पष्ट जाना जा सकता है कि जगलुलने मिश्रको किस तरह तैयार कर रखा था। मिश्रमें आज भी आन्दोलन चल रहा है। जगलुलकी आत्मा दिन-पर-दिन मिश्रको स्वाधीनताकी ओर लिये जा रही है।



चीन



स्वदेश प्रेमी सु-ऊ

हजार दो हजार वर्ष पहलेकी बात है। उस समय चीनमें हूण बड़ा उपद्रव मचाते थे। झुण्ड-के-झुण्ड हूण घोड़ोंपर सवार आंधीकी तरह आते और चीनके गांवोंको लूट पाटकर चल देते। चीनके राजाने शान्ति स्थापित करनेके लिये हूणोंके पास दूत भेजा। पर हूणोंने सन्धि करना तो दूर रहा, दूतोंको कैद कर लिया। तब चीनके राजाने भी कितने ही हूण दूतोंको कैद कर लिया। इस तरह ईंटका जवाब पत्थरसे पानेपर हूणोंने चीनके दूतोंको छोड़ दिया। चीनके राजाने भी हूणोंके दूतोंको मुक्त कर दिया। जब दूत वहांसे वापस लौट आये तो तब हूणोंके पास स्वदेश-प्रेमी सु—ऊ गये।

हूण अपने दूतोंके वापस आनेपर और भी उग्र हो गये। उन्होंने सु-ऊसे कहा—तुम हम लोगोंके साथ हो जाओ, थोड़े ही दिनमें तुम बड़े आदमी हो जाओगे।

सु-ऊने घृणाके साथ उत्तर दिया—देशका रक्त शोषण कर मैं बड़ा आदमी होना नहीं चाहता। देशकी सेवा कर मैं चिरकाल तक गरीब ही रहना चाहता हूं।

तब हूणोंने सु-ऊको कैद करके उनपर तरह-तरहके अत्याचार

करना शुरू कर दिया। किन्तु सु-ऊ अचल और अटल रहे। वे प्राण देकर भी देशके विरुद्ध नहीं जाना चाहते थे। जब हूण किसी तरह भी सु-ऊको काबूमें नहीं कर सके तब उन्होंने उन्हें कैद कर लिया। उसके बाद चीनके राजाके पास खबर भेज दी कि सु ऊ मार डाले गये।

सु-ऊको उत्तरी देशमें भेंड़ चरानेका काम दिया गया। वह रोज मैदानमें भेंड़ चराने जाते और वहीं देशका बात सोचा करते। चारों ओर हूणोंका कड़ा पहरा था, भागनेका कोई रास्ता नहीं था। उनकी दोनों आंखोंमें जल भर आये। हाय! यदि वह पक्षी होते तो उसी क्षण उड़कर चले जाते और देशकी गोदमें लोटने लगते।

मनमें यह बात उठते ही एक उपाय उन्हें सूझा। वे कबूतर पालने लगे। जब उन्होंने उन्हें सिखाकर तैयार कर लिया तब वे चीन राजाके पास चिट्ठी लिख-लिखकर उन कबूतरों द्वारा भेजने लगे। वह सोचते थे कि यदि एक भी कबूतर चीनके राजाके पास पहुंच जाता तो निश्चय ही वे मुक्त हो जाते।

सु-ऊ इसी प्रकार प्रत्येक मुहूर्त अपनी मुक्तिकी आशा करने लगे। किन्तु वर्षके बाद वर्ष बीत गये, चीनके राजाने सु-ऊको मुक्त करनेके लिये आदमी नहीं भेजा।

चीनके राजाके पास इतने दिनों तक एक भी कबूतर नहीं पहुंचा। वे जानते थे कि सु-ऊकी मृत्यु हो गयी।

एक दिन वह शिकार खेलनेके लिये बाहर निकले। उन्होंने देखा कि एक सुन्दर कबूतर आसमानमें उड़ता चला आ रहा है।

उन्होंने कबूतरको लक्ष्य करके तीर छोड़ा, कबूतर छटपटा कर गिर पड़ा। उसके पंखमें सु-ऊका लिखी चिट्ठी बंधी थी। चिट्ठी पढ़कर राजाने एक क्षणकी भी देर नहीं की। उन्होंने उसी समय सु-ऊको मुक्त करनेके लिये आदमी भेजे।

स्वदेश-प्रेमी सु-ऊ उन्नीस वर्षतक कैदमें रहकर फिर अपनी जन्मभूमिमें आये।

जौहर व्रत

हमारे देशकी राजपूत स्त्रियां शत्रुओंकी अधीनता न स्वीकार करनेके लिये, आगमें जलकर मर जाती थी। इसे जौहर व्रत कहते थे। चीनमें भी एक बार एक वीरने इसी प्रकार जौहर व्रत लिया था।

चीनमें जूनिङ्गफू नामक एक छोटा-सा राज्य है। वहांके लोग जैसे वीर होते हैं, वैसे ही स्वाधीनता-प्रिय भी। उस समय चीन-में मुगलों और शां सम्राटोंका अत्याचार मचा हुआ था। उनकी लोलुप दृष्टि इस छोटेसे राज्यपर पड़ी। दलबलके साथ वे जूनि-ङ्गफू दखल करने आये।

तब वहांके राजाने लोगोंको बुलाकर शत्रुओंका सामना किया। जूनिङ्गफूके आदमियोंने जी-जानसे युद्ध किया। पर संख्यामें बहुत अधिक शत्रुओंके सामने वे बहुत देरतक नहीं टिक सके। वे सब एक उपाय निकालकर शहरमें चले आये और शहर-का दरवाजा बन्द कर दिया। तब शत्रुओंने भी शहरको चारों ओरसे घेर लिया।

जूनिङ्गफूके राजाकी प्रतिज्ञा थी कि वह जीते-जी शत्रुओंके हाथमें गिरफ्तार नहीं होंगे। इसी तरह दिन-पर-दिन बीतते गये। नगर चारों ओरसे घिरा था। खाने-पीनेकी सामग्री कम हो चली। जब भूखकी ज्वाला असह्य हो गयी तब नगरनिवासी जानवरोंको मार-मारकर उनका माँस खाने लगे। उसके बाद सब जानवर भी खतम हो गये। लोग खाद्य सामग्रीके बिना पागल हो गये।

राजाने देखा अब नगरका फाटक खोले बिना रक्षा नहीं है। उन्होंने नगर-द्वार खोल दिया किन्तु अपना प्रण भंग नहीं किया। नगर द्वारके खुलते ही राजमहलमें हा हा करती हुई आग जल उठी। राजाने जौहर व्रतका अवलम्बन कर अपने सम्मानकी रक्षा की। शत्रुओंने आकर देखा, राजमहल जलकर भस्म हो गया है, शत्रुओंने भी राजाकी इस स्वाधीनता-प्रियताकी प्रशंसा की।

जाग्रत चीन-अफीम-युद्ध

सैकड़ों वर्षोंतक चीनने अपनी स्वाधीनताकी रक्षा की। उसकी स्वाधीनतामें पहले पहले बाधा पड़ी मंचुओंके राजतन्त्र कालमें। मांचू विशुद्ध चीनी नहीं थे। एक विद्रोहीका दमन करनेके लिये चीनियोंने इन्हें अपने यहां बुलाया था। वे सब विद्रोहका दमन करनेके बाद स्वयं चीनके राजा बन बैठे। मंचू राजा अत्यन्त अत्याचारी एवं निरंकुश शासक थे। उन्हींके राजतन्त्र कालमें यूरोपके बनिये चीन देशमें आये। एक तो मंचुओंका अत्याचार दूसरे विदेशी बनियोंका अत्याचार, दोनों अत्याचारोंके बीचमें पिसकर दिन-पर-दिन चीनियोंका ह्रास होने लगा। उसके बाद अङ्गरेजों और चीनियोंमें लड़ाई छिड़ गयी।

आजकल हम देख रहे हैं कि चीनी अफीमखोर हैं किन्तु एक दिन था, जब उन्होंने अफीमका नाम तक नहीं सुना था। अङ्गरेज ही पहले पहल चीनमें अफीम ले गये और चीनियोंसे यह कहकर कि अफीम बहुत अच्छी चीज है, इसके खानेसे ताकत बढ़ती है शरीर अच्छा रहता है, पाचन-शक्ति बढ़ती है आदि, वे उनके अफीम बेंचने लगे।

तब चीनके हितचिन्तकोंने देखा कि अंगरेज तो चीनी जातिको अफीम खिलाकर उसका सर्वनाश करनेका उपाय कर रहे हैं। उसी क्षण अंगरेजोंको चीनमें अफीम लाना रोक दिया गया। पर अंगरेजोंने इसकी तनिक भी परवा नहीं की। मना करनेपर भी वे २०२६१ बक्स अफीम चीनमें ले गये। तब वाध्य होकर चीनियोंने अंगरेजोंकी अफीमको जब्त कर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

अंगरेज कहीं भी अपना दोष स्वीकार क्षमा नहीं चाहते। उन्होंने चीनियोंके साथ लड़ाई छेड़ दी। दुर्भाग्यवश चीनी हार गये। उसी समयसे उनके बुरे दिन आये। अंगरेज, जर्मन, फ्रेञ्च, जापानी, रूसी सबने चीनमें आकर बहुतसे स्थानोंपर अपना अधिकार जमा लिया।

मंचू राजाओंने बिल्कुल परवा नहीं की किस प्रकार चीनकी रक्षा होगी। उन्हें अपने राज्यके लिये ही चिन्ता थी। वे विदेशियों द्वारा पीड़ित अपने ही देशवासियोंपर अत्याचार करने लगे। तब चीनकी स्वाधीनताके जन्मदाता—

वीरकेशरी सनयातसेन

का आविर्भाव हुआ। सनयातसेनने शिक्षा प्राप्त करनेके लिये विदेशोंमें जाकर देखा, संसारके सभी देश स्वाधीन हैं। पर चीन माँचुओ तथा विदेशियोंके अत्याचारसे दिन-पर-दिन अधःपतनकी ओर जा रहा है। उसी समय उनके मनमें मुक्तिकी वासना प्रबल हो उठी। उन्होंने अपनेको देशके कार्यके लिये उत्सर्ग कर दिया।

चीन लौट आकर उन्होंने स्वाधीनताका आन्दोलन आरम्भ कर दिया। तब मंचू सनको गिरफ्तार करनेकी चेष्टा करने लगे। सन उनकी आंखोंसे ओझल हो गये। वह मंचुओंकी नजर बचाकर चीनकी भूमिमें विप्लवका बीज बोने लगे। अन्तमें एक दिन उनकी साधना सफल हुई। चीनमें विद्रोहकी आग जल उठी। मंचू राजवंशका ध्वंस हुआ और चीनमें प्रजातन्त्रकी स्थापना हुई। सनने वान शिकाई नामक एक नेताको सभापति बनाया।

किन्तु वानने विश्वासघातकता कर प्रजातन्त्रको विनष्ट कर स्वेच्छाचार आरम्भ कर दिया। तब सन फिरसे विप्लवका बीज बोने लगे। इस बार चीनमें दो भाग हो गये। उत्तरी चीनने वानका पक्ष लिया और दक्षिणी चीनने सन यातसेनका साथ दिया।

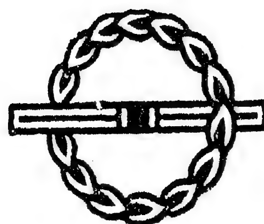
दोनों दलोंमें युद्ध

बहुत दिनोंतक उत्तरी और दक्षिणी चीनमें लड़ाई होती रही। सन जानते थे कि एक दिन दक्षिणी चीनकी विजय होगी। सन

उस विजयको देख नहीं सके। बीचमें ही वह स्वर्गवासी हो गये किन्तु सनके आदर्शका अनुसरण करते हुए दक्षिणी चीनवाले सनके छेड़े हुए युद्धको चलाते रहे। अन्तमें एक दिन दक्षिणी दलकी विजय हुई। उत्तरी दलके सरदार चाङ्गसोलिन मारे गये। दक्षिणी दलने चीनकी स्वाधीनताकी पताका उड़ा दी।

वर्तमान समयमें चीनकी राष्ट्रीय सरकारके जो प्राण हैं उनका नाम है, चांग-काइ-शेक।

चांगने देखा कि देशको पूर्णरूपसे स्वाधीन रखनेके लिये विदेशियोंपर कुछ शासन रखना होगा। इसलिये उन्होंने पहले विदेशियोंको सावधान कर दिया कि वे चीनपर गृद्ध दृष्टि नहीं रखें।



अमेरिका



कोलम्बसके अमेरिकाके आविष्कार करनेके बाद यूरोपकी अनेक जातियां अमेरिकामें उपनिवेश स्थापना करने गयीं। सबसे अधिक संख्यामें अंगरेज गये। इसलिये उनका उपनिवेश सबसे बड़ा हुआ।

अंगरेजोंके अमेरिकामें उपनिवेश स्थापित करनेका एक विशेष उद्देश्य था। वे सब उपनिवेशोंके व्यापारको हथियाना चाहते थे। इसलिये अंगरेज वाणिज्य विषयक कानून बनाकर उपनिवेशोंके व्यवसायको नियन्त्रित करने लगे। कोई भी उपनिवेश अंगरेजोंके जहाजोंके सिवा और किसी जहाजमें माल नहीं भेज सकता था। अमेरिकाको कोई ऐसी चीज तैयार नहीं करने दिया जाता था जिससे इङ्गलेण्डकी उस चीजका व्यवसाय क्षतिग्रस्त होता था। अमेरिकाका कोई आदमी लोहेका कारखाना नहीं खोल सकता था; क्योंकि इससे इङ्गलैण्डके लोहेके कारखानोंको हानि पहुंचती थी। इसी तरह अमेरिका यदि कोई अच्छा रोजगार करने जाता तो इङ्गलैण्ड उसमें बाधा देता।

इसीको लेकर इङ्गलैण्ड और अमेरिकामें पहले पहल मनोमालिन्य बढ़ा। शीघ्र ही एक दूसरे कारणसे यह मनोमालिन्य संघर्षके रूपमें परिणत हो गया।

उस समय तृतीय जार्ज इंगलैण्डके राजा थे। अमेरिकाके लिये इङ्गलैंड और फ्रांसमें सात वर्षतक लड़ाई होती रही। उस लड़ाईमें इङ्गलैंड बहुत रुपयोंका कर्जदार हो गया। इस कर्जके एक हिस्सेको अदा करनेके लिये अमेरिकाके ऊपर एक कर लगाया गया।

इससे अमेरिका क्षुब्ध हो उठा। यदि अमेरिका इंगलैंडका कर्जदार हो तो अमेरिकावाले वह ऋण चुका सकते हैं, किन्तु जिस पार्लमेंटमें उनका कोई प्रतिनिधि नहीं है वह पार्लमेंट उनपर कर किस तरह लगा सकती है ?

अंगरेजोंने अमेरिकनोंकी आपत्तिपर कुछ ध्यान नहीं दिया। इसके अतिरिक्त सन् १७६५ ई॰में स्टाम्प कानून नामक एक कानून अमेरिकाके लिये बनाया गया। उस कानूनके अनुसार अमेरिकनोंको अदालती कागज-पत्र, चिट्ठी, इन्स्योरेन्स आदिपर स्टाम्प लगाना होता और स्टाम्पोंकी बिक्रीका पैसा इङ्गलैंडके खजानेमें चला जाता।

तब अमेरिकनोंने इस कानूनका प्रतिवाद करनेके लिये वेञ्जामिन फ्रेंकलिनको अपना प्रतिनिधि बनाकर इङ्गलैंड भेजा। फ्रेंकलिनने पार्लमेंटको साफ-साफ बतला दिया कि अमेरिका इस कानूनको माननेके लिये तैयार नहीं है। पर तृतीय जार्जने अपना हठ नहीं छोड़ा, कानून जारी होना ही निश्चित हुआ। अब अमेरिकाकी इतने दिनोंकी असन्तोषाग्नि भड़क उठी।

देशके इस दुर्दिनमें भिन्न भिन्न उपनिवेश आकर सम्मिलित

हुए। प्रत्येक उपनिवेशके एक-एक प्रतिनिधिको लेकर कांग्रेसकी स्थापना की गयी। इसी प्रकार अमेरिकाकी राष्ट्रीय सभा कांग्रेसका जन्म हुआ। उसी कांग्रेस द्वारा स्टाम्प कानूनका तीव्र प्रतिवाद किया गया। पर इसका प्रतिवाद करनेपर भी १ ली नवम्बरको स्टाम्प कानून जारी कर दिया गया।

समस्त अमेरिकामें उस दिन उत्तेजना फैल गयी। गिर्जाघरोंसे शोकके घंटा बजाये जाने लगे। दूकानें बन्द हो गयीं, स्टाम्प कानूनकी प्रतिलिपिके ऊपर —'इङ्गलैंडकी मूर्खता और अमेरिकाका विध्वंस'—बड़े-बड़े अक्षरोंमें यह वाक्य लिखकर देशभरमें प्रचारित किया गया।

कोई भी स्टाम्प नहीं बेच सकता था। यदि कोई ऐसा करता तो जनता उसपर अकथनीय अत्याचार करती। जिस आफिसमें स्टाम्प रखे रहते, वहीं वे जलाकर राख कर दिये जाते।

बायकाट

इसके सिवा अमेरिकनोंने असहयोग आरम्भ कर दिया। उन्होंने निश्चय किया कि जबतक यह कानून रद्द नहीं किया जाता, तबतक हम लोग इंगलैंडकी बनी हुई किसी भी चीजका व्यवहार नहीं करेंगे। कपड़े-लत्तेके लिये उन्हें अबतक इंगलैंडका मुँह देखना पड़ता था। अब उन्होंने स्वदेशमें ही सब चीजोंको बनानेका निश्चय किया।

स्वाधीनता संघ

देशकी सेवा करनेके लिये बालकोंने स्वाधीन-सन्तान-संघ

संगठित किया। बालिकाओंने भी स्वाधीन-कन्या-संघ स्थापित किया। देश जिसमें विदेशी वस्त्रका व्यवहार न करे और स्वाधीनताके आदर्शको क्षुण्ण न होने दे इसके लिये वे जी-जानसे प्रयत्न करते थे।

अमेरिकनोंकी रुद्र मूर्त्ति देखकर इंगलैंडने कानूनको हटा लिया। पर कुछ ही दिनके बाद उसने अमेरिकनोंपर फिर एक नया कर बैठाया—ग्लास, शीशा, रंग, कागज एवं चाय कर। इसके अतिरिक्त इंगलैंडने अमेरिकामें अपनी एक सेना भी रखी। उसका खर्च भी अमेरिकनोंको ही देना पड़ता।

तब फिर जोरोंसे आन्दोलन चलने लगा। अंगरेजोंकी सेना अमेरिकामें ही थी, इसलिये बीच-बीचमें उससे भी संघर्ष होता रहा। इंगलैंडने देखा कि इन सब करोंको हटाये बिना उपाय नहीं। सब कर हटा लिये गये। केवल यही दिखानेके लिये कि इंगलैंड अमेरिकाका कर्त्ता-धर्त्ता है, चाय कर जारी रहा।

चाय करके विरुद्ध आन्दोलन

तब अमेरिकनोंने चायका बायकाट किया। सभा समिति करके यह तय किया कि जबतक चाय कर जारी रहेगा तबतक हम लोग चाय नहीं पीयेंगे और न चाय देशमें आने देंगे। एक दिन अंगरेज चायसे भरे तीन जहाज लेकर बोस्टन बन्दरगाहमें उपस्थित हुए। यह खबर सुनकर अमेरिकनोंने फेनेलहलमें एक सभा की। उस सभामें यह तय पाया कि यह चाय नष्ट कर दी जाय। कई आदमियोंको चुनकर उनपर इस कार्यका भार दिया गया।

उसी दिन रातको इन आदमियोंने रेड इंडियनकी पोशाक पहनकर चायके जहाजों पर आक्रमण कर दिया। वे ३४२ बोरे चायको पानीमें फेंककर निरापद भाग आये।

यह समाचार सुनकर अंगरेज एकदम लाल हो गये। उन्होंने कहा, जिस तरह हो अपराधियोंका पता लगाना होगा। किन्तु अंगरेजोंकी चेष्टा करनेपर भी अपराधियोंका पता नहीं लगा।

तब अंगरेजोंने सेनापति गेजको इंगलैंड बुलाया। आते ही गेज बोस्टनको घेर लिया। उन्होंने कहा—जबतक बोस्टनवासी उस फेंकी हुई चायको क्षति पूर्ण नहीं करते तबतक बोस्टन बन्दरगाहमें कोई व्यवसायी जहाज घुसने नहीं पायेगा।

बोस्टनके घेरे जानेकी खबर सुनकर सारे अमेरिकामें हलचल मच गयी। झुण्ड-के-झुण्ड लोग राष्ट्रीय सेनामें नाम लिखाकर युद्धकला सीखने लगे। प्रचुर परिमाणमें अस्त्र-शस्त्र भी एकत्र किये जाने लगे। अमेरिकाके बारह उपनिवेशोंने सम्मिलित हो अंगरेजोंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की।

कंकर्ड युद्ध

पहला युद्ध हुआ कङ्कर्ड नामक स्थानमें। इस युद्धमें अमेरिकनोंकी विजय हुई। अंगरेज बुरी तरह हार गये। दूसरा युद्ध हुआ बैंकोर हिलमें। इस युद्धमें अमेरिकनोंकी जीत न हुई पर फिर भी उन्होंने इतना वीरत्व दिखलाया कि अङ्गरेजोंने अच्छी तरह समझ लिया कि अमेरिकनोंसे पार पाना आसान नहीं है।

जार्ज वाशिंगटन

कुछ दिनके बाद कांग्रेसकी बैठक हुई। उसमें समस्त देश-वासियोंने एकमत हो जार्ज वाशिङ्गटनको प्रधान सेनापति निर्वाचित किया। सैन्य एवं अर्थ संग्रहकी पूरी व्यवस्था की गयी।

वाशिङ्गटन बड़े पराक्रमी पुरुष थे। जैसे वे वीर थे वैसे ही वे साहसी, कर्मनिष्ठ, अध्यवसायी एवं एकाग्रचित्त थे। उनके हाथोंमें पड़कर अमेरिकन सेना नूतन रूपमें गठित हुई। उनकी सेनाका कोई आदमी शराब छूता नहीं था। वाशिंगटन स्वयं उन्हें युद्धकी शिक्षा देते थे।

इन्हीं सुशिक्षित सैनिकोंको लेकर वाशिंगटनने बोस्टनपर आक्रमण किया। अंगरेजोंने बहुत दिनों तक आत्मरक्षा की। अन्तमें वे बोस्टनसे भागकर चले गये। विजय गर्वसे अमेरिकाकी छाती दूनी हो गयी।

बोस्टनमें पराजित होनेके बाद ही इंगलेण्डसे नये सेनापति आये। फिर युद्ध हुआ। दुर्भाग्यवश इस बार अमेरिकनोंकी हार हो गयी।

पर पराजित होनेपर वाशिंगटन बैठ नहीं गये। उनके लिये यही स्वाधीनताका युद्ध था। दिन रात अक्लान्त परिश्रम कर सैन्य संग्रह करने लगे।

उस समय उनके वीरत्वकी ख्याति सारे यूरोप भरमें फैल गयी थी। उस वीर पुरुषकी ओरसे युद्ध करनेके लिये दूर दूरके देशोंसे अनेक विख्यात व्यक्ति अमेरिका आकर वाशिंगटनके

दलमें भर्ती हुए। इन सब वीर पुरुषोंमें एक फ्रेंच वीर थे जिनका नाम था ला—फायेत।

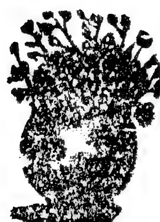
१७७८ ई० में ला-फायेतके अनुरोधसे फ्रांसने भी अमेरिका-का साथ दिया।

लड़ाई छिड़ी। अंगरेज अमेरिकनोंकी बहादुरी देखकर मन-ही-मन अत्यन्त भयभीत हुए। किन्तु मुँहसे यह बात प्रकट नहीं होने दी। वे भी मर-जीकर बहुत दिनोंतक युद्ध चलाते रहे। उसके बाद वे अमेरिकनोंके पास सन्धिके प्रस्ताव भेजने लगे।

अमेरिकनोंने साफ-साफ जवाब दिया—अमेरिकन चाहते हैं पूर्ण स्वाधीनता, सन्धि नहीं।

अंगरेज और भी कुछ दिनतक युद्ध चलाते रहे। किन्तु अन्तमें उन्हें अमेरिकाकी स्वाधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

इस प्रकार सन् १७८२ ई० में ३० नवम्बरको अमेरिकाने पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त की।



निकारे गुआ



निकारेगुआ मध्य अमेरिकाका एक छोटा-सा राज्य था। यद्यपि आकारमें वह छोटा था, पर उसका साहस और वीरत्व अदम्य था। सन् १९१२ ई० में अमेरिकाके युक्त राज्यने निकारे गुआपर अधिकार जमा लिया। निकारे गुआकी बगलसे पनामाकी नहर काटी गयी है। इसी पनामाकी नहरपर अपना प्रभुत्व कायम रखनेके लिये युक्त राज्यने निकारे गुआकी स्वाधीनताका अपहरण किया था।

स्वाधीनताका आन्दोलन

अमेरिकाके इस अत्याचारने निकारे गुआके निवासियोंको चंचल कर दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ हुआ। दो दलोंका संगठन हुआ रक्षणशील दल और उदार नैतिक दल। पहले दलके नेता हुए दियाज और दूसरे दलके मनकादा। आन्दोलन खूब जोरोंसे चला तब अमेरिकाने कूटनीतिका अवलम्बन किया। अमेरिकावालोंने कौशलसे रक्षणशील दलके नेता दियाजको घूस देकर अपने वशमें कर लिया एवं निकारेगुआके बैंक आदि आर्थिक संस्थाओंको कब्जेमें कर लिया पर इससे मनकादा पीछे नहीं हटे। वह बारह वर्षतक आन्दोलनको चलाते रहे। किन्तु निकारे

गुआका दुर्भाग्य था, अन्तमें उन्होंने भी देशके साथ विश्वास-घात किया। वह दियाजसे भी एक सीढ़ी नीचे गिर गये।

सकाशा नामके एक देशभक्तने सशस्त्र विद्रोहकी तैयारी की थी। विदेशसे हथियार मँगाये गये थे। मनकादाको सकाशाने अस्त्र आदि रखनेको दिया। इसी समय सुना गया, युक्त राष्ट्रसे शीघ्र ही सेना आ रही है। वह निकारगुआकी शान्ति रक्षा करेगी। यह खबर सुनकर मनकादाने विद्रोहके समस्त षड्यन्त्रको प्रकट कर देनेका निश्चय किया।

तब जिस वीरने देशको इस शोचनीय अपमानसे बचाया था उसका नाम था—अगस्टो कैल दिरन स्यानदिनो।

स्यानदिनो किसानके लड़के थे। सुशिक्षित थे। उनका शरीर भी बलिष्ठ था। उनका मन साहस, वीरत्व और स्वाधीनताके भावसे परिपूर्ण था। किसानी और अन्नके व्यवसायसे उन्होंने यथेष्ट धन उपार्जित किया था। इसी समय अमेरिकाकी लोलुप दृष्टि अभागे देशपर पड़ी और अन्यान्य व्यापारियोंके साथ स्यानदिनोका भी व्यवसाय नष्ट हो गया।

तब स्यानदिनो खानमें काम करने गये। उनमें ऐसी शक्ति थी कि वह जहां जाते वहींके आदमियोंको चुम्बककी तरह अपनी ओर खींच लेते। खानमें जाकर स्यानदिनो कुली मजूरोंसे लेकर उच्च कर्मचारियों तकके प्रिय पात्र बन गये।

तब मनकादाकी दृष्टि उनपर पड़ी। उन्होंने सोचा, किसी तरह स्यानदिनोको हाथमें करना चाहिये।

वह स्यानदिनोको पहचानते नहीं थे, इसीलिये उन्होंने उन्हें वशमें करनेके लिये एक कुत्सित उपायका अवलम्बन किया। एक भोज दिया गया और उसमें स्यानदिनो निमन्त्रित किये गये।

स्यानदिनो निमन्त्रण स्वीकार कर भोजमें शामिल हुए। वहाँ जाकर उनकी दृष्टि एक ओर पड़ी जहाँ बहुतसे आदमी पिशाचोंकी नाई हँस रहे थे और उनके बीचमें खड़ी एक परम सुन्दरी स्त्री भयसे थर-थर काँप रही थी। यह देखकर क्रोधके मारे स्यानदिनोका सारा शरीर जल उठा।

स्यानदिनोको देखते ही मनकादो बोल उठे—अरे भाई स्यानदिनो! आओ भाई! आओ! तुम्हारे लिये यह पंखविहीन परी ले आया हूं। तुम मेरे मित्र हो इसीलिये—

मनकादाकी बात अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि वीर स्यानदिनो एक ही उछालमें कूदकर सामने चले गये और उस रमणीको उन आदमियोंके पंजेसे मुक्त कर चिल्ला कर बोल उठे—यह स्त्री मेरे लिये निकारेगुआ है—कोई इसे न तो ले सकता और न किसीको दे सकता है।

यह कहकर स्यानदिनो उत्तरकी प्रतीक्षा न कर कुमारीको घोड़ेपर चढ़ाकर वहाँसे तीरकी तरह निकल भागे। सब कोई अवाक हो उस तेजस्वी पुरुषकी ओर देखते रह गये।

स्यानदिनो कुमारीको लेकर रातभर घोड़े पर सवार चलते रहे। सवेरे एक महिला आश्रममें आकर वहींपर उस कुमारीको रख दिया।

उसी समयसे स्यानदिनोकी यह उक्ति कि —यह कुमारी मेरे लिये निकारे गुआ है, सब लोगोंके मनमें बैठ गयी। सच ही तो है। उसी कुमारीके समान निकारे गुआ था। उसी कुमारीके ही समान निकारे गुआ भी विपन्न था। स्वदेशद्रोहियोंका दल उसी कुमारीके समान निकारे गुआको विदेशियोंके हाथमें देने जा रहा था।

उसके बाद स्वदेशद्रोही मनकादा अन्यान्य तथा कथित नेताओंने स्यानदिनोको वशमें करनेकी अनेक चेष्टायें कीं। घूस, नौकरीका प्रलोभन, भय आदि एकके बाद दूसरे फंदे डाले गये, किन्तु स्यानदिनोने सबको बड़ी घृणासे तिरस्कृत कर दिया। तब देशद्रोहियोंने एक जघन्य षड़यन्त्र रचा। उन्होंने एक गुप्त घातक द्वारा स्यानदिनोकी हत्या करनेका निश्चय किया; एक दिन स्यानदिनो एक होटलमें बैठकर खा रहे थे। अकस्मात् गुप्तघातकोंके एक दलने उनपर आक्रमण किया। वीर स्यानदिनो चौंककर अलग जा खड़े हुए। उसके बाद वह अकेले ही उन आततायियोंसे लड़ने लगे। उनमेंसे एक मर गया और बाकी सब घायल होकर भाग गये।

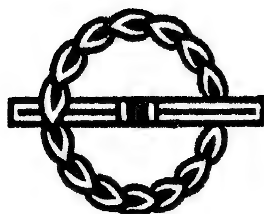
इसी वीर स्वदेशप्रेमी युवकको डाकू कहनेमें अमेरिकाके विद्वान लज्जित नहीं होते।

उसके बाद वीर स्यानदिनो विदेश चले गये। वहां जाकर उन्होंने मनकादाकी विश्वासघातकताकी बात सुनी। मनकादा सकाशाके षडयन्त्रका पता अमेरिकनोंको बतलाना चाहता था।

तब तो स्यानदिनोकी नस-नसमें विद्रोहका रक्त संचालित होने लगा। वह देश लौट आये और मनकादासे अस्त्र आदि मांगने लगे। मनकादाने अस्त्रादि देनेसे इनकार कर दिया।

तब सकाशाके दलने स्यानदिनोको कुछ अस्त्र जुटाकर दिये। उन्हीं थोड़ेसे हथियारों और थोड़ेसे वीरोंको लेकर वीर स्यानदिनोने विद्रोहका झण्डा खड़ा कर दिया। जीवन मृत्युका कोई प्रश्न उनके सामने नहीं आया। मरना होगा, यह जानकर ही उन्होंने अमेरिकाके विरुद्ध युद्ध छेड़ा था।

अमेरिकन अनेक चेष्टा करनेपर भी इस वीरको गिरफ्तार नहीं कर सके। स्यानदिनो अभी भी जीवित हैं और स्वाधीनताके युद्धमें रत हैं। हमारी ईश्वरसे प्रार्थना है कि स्यानदिनो अपने प्रयत्नमें सफल हों।



क्यूबा

पहले क्यूबा स्पेनके अधीन था। धन-सम्पत्तिके लालचसे स्पेनियर्ड क्यूबा गये। क्यूबाको अपने अधीन पाकर उन्होंने वहां भीषण रूपसे शोषण कार्य आरम्भ कर दिया। पहले तो अभागे क्यूबावासियोंने चुपचाप सब अत्याचार सहन कर लिया। उसके बाद जब अत्याचार असह्य हो गया तब वे मुक्त होनेका मार्ग ढूंढ़ने लगे।

विद्रोही क्यूबा

जब क्यूबावासियोंके मनकी स्थिति इस प्रकार हो गयी तब एक साधारण कारणसे विद्रोहका सूत्रपात हुआ। १८०२ ई०में हवाना गांव जलकर खाक हो गया। पता नहीं वह आग किस कारणसे लगी थी, पर क्यूबावासियोंने यह विश्वास कर लिया कि विदेशियोंकी अधीनतामें रहनेसे हम लोगोंको भगवान दण्ड दे रहे हैं। इसी तरह सब लोगोंके मनमें असन्तोष उत्पन्न हुआ और असन्तोषसे विद्रोहकी आग भड़की।

स्पेन सरकारने विद्रोहको दबानेके लिये एक फौजी कमीशन भेजा। कमीशनने आते ही तीन हजार आदमियोंको गिरफ्तार करके अत्यन्त निष्ठुरताके साथ दण्ड दे दिया। किन्तु इससे विद्रोही भयभीत नहीं हुए। सन् १८६८ से १८७८ तक स्पेनके

साथ वे युद्ध करते रहे। इस अवधिमें दो लाख आठ हजार स्पेनी-यर्ड सैनिक क्यूबा भेजे गये और चालीस हजार क्यूबावासी उनकी तलवारोंके शिकार हुए। दस वर्षके बाद स्पेनने क्यूबा-वासियोंके साथ एक सन्धि कर ली।

किन्तु निर्बल और सबलके बीचकी सन्धि स्थायी नहीं होती। क्यूबा और स्पेनकी सन्धिके विषयमें भी यही बात हुई। कुछ ही दिन बीतते न बीतते स्पेनने फिर अपना असली रूप धारण कर लिया।

स्कूलके कुछ छात्रोंने एक मृत स्पेन कर्मचारीकी कब्रके ऊपर दो-चार असम्मानसूचक पंक्तियां लिख दी थीं। इसी अपराधके सन्देहमें तीन छात्र गिरफ्तार करके गोलीसे मार दिये गये।

इस काण्डसे क्यूबाकी अन्तरात्मा कांप उठी, पर मसल मशहूर है कि विपद अकेले नहीं आती। सन् १८८३ ई०में क्यूबा-का प्रधान वाणिज्य द्रव्य चीनीका कारबार मन्दा पड़ गया। क्यूबा-निवासियोंके लिये आमदनीका और कोई रास्ता नहीं रह गया। इस मन्दीपर भी स्पेन सरकारने युद्ध ऋणकी पूर्त्तिके लिये क्यूबा-निवासियों पर अतिरिक्त टैक्स लगा दिया। क्यूबा-में फिर विद्रोहकी आग जल उठी।

जोशी मार्टि

ने इस बार विद्रोहकी आग जलायी। उन्होंने देशवासियोंसे कहा—देशकी छातीपर सवार हो जो देशका रक्त चूस रहे हैं उन विदेशियोंके साथ सन्धि नहीं हो सकती। हम सन्धि नहीं

चाहते। शक्तिगर्वित स्पेनको अपने हथियारोंपर विश्वास है। हम भी हथियारसे ही उनके छक्के छुड़ाना चाहते हैं। हम हथियारोंकी ही सहायतासे स्पेनवालोंको देशसे भगाकर स्वाधीन होंगे। जोशीको ऐसी ही अग्निमय वक्तृता सुनकर देश भरमें उत्तेजना फैल गयी। एक विशाल सशस्त्र सेना संगठित की गयी। उसके कमांडर हुए स्वयं जोशी मार्टि।

दुर्भाग्यवश इसी समय जोशी स्पेनियर्डों द्वारा गिरफ्तार कर मार डाले गये। नेताके अभावसे विद्रोह थम गया।

जेसस राविर

यद्यपि जोशी मार्टिकी मृत्युसे क्यूबाका विद्रोह दब गया, पर उसका भाव लोगोंके हृदयसे गया नहीं था। कुछ दिनोंके बाद स्वाधीनताका संग्राम फिर छिड़ गया। इस बार नेता हुए जेसस राविर। उनके नेतृत्वमें सन् १८६५ ई०में फिर विद्रोही दलकी सृष्टि हुई।

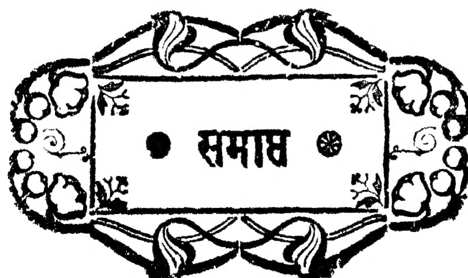
यह नया विद्रोही दल प्रकट रूपमें युद्ध नहीं करता था। वे स्पेनियर्डोंके साथ गोरीला लड़ाई लड़ते थे। वे जाकर किसी जंगलमें छिप रहते। जब स्पेनियर्ड सैनिक यह समझने लगते कि अब किसी बातका भय नहीं है तब वे गोरीलाकी तरह आकर उनपर टूट पड़ते और उन्हें छिन्न-भिन्न कर फिर जंगलमें आ छिपते। मेक्सिमो गोमेज और एण्टानिओ मेसिओ नामक दो वीर इस युद्धके सेनापति थे।

जब किसी तरह भी स्पेनियर्ड विद्रोहियोंको परास्त नहीं

कर सके, तब उन्होंने नृशंसता पूर्ण हत्याका आश्रय लिया। आबाल वृद्ध बनिता किसीका भी विचार न कर वे क्यूबावासी मात्रको गोलीसे मारने लगे। डेलसार नामक एक गांवमें दस हज़ारसे अधिक आदमी मारे गये। क्यूबाकी भूमि रक्तसे लाल हो उठी।

अमेरिकाकी उदारता

अमेरिका चुपचाप दूरसे ही क्यूबा वासियोंपर स्पेनका यह नृशंस अत्याचार देख रहा था। अन्तमें अमेरिकाके स्त्री-पुरुष क्यूबाकी सहायता करनेके लिये खड़े हो गये। फलस्वरूप अमेरिका और स्पेनमें लड़ाई छिड़ गयी। युद्धमें स्पेनकी पराजय हुई। सन् १६०२ में "क्यूबाकी पूर्ण स्वाधीनता" घोषित हुई और क्यूबाके लाखों नर-नारियोंके रक्त निर्मित पथसे जयरथ गौरवके साथ अग्रसर हुआ।



१२—चित्रमय श्रीकृष्ण

इस पुस्तकमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी लीलाओंका वर्णन चित्रोंमें किया गया है। पुस्तकमें एक तरफ कथाका सार और दूसरी तरफ उसीका चित्र दिया गया है, जिससे चित्रोंको देखकर ही सब कथा मालूम हो जाती है। पुस्तकमें ४२ चित्र हैं। सब चित्र तिनरंगे हैं। पुस्तक कई बार छप चुकी है। सुन्दर मनोहर सजिल्दका मूल्य हिन्दी ४) बंगला ४)

१३—भाव चित्रावली

चित्रकार—श्रीधीरेन्द्रनाथ गंगोपाध्याय

इस पुस्तकमें एक ही सज्जनके विविध भावोंके १०० रंगीन और सादे चित्र दिखलाये गये हैं। आप देखेंगे और आश्चर्य करेंगे। गंगोपाध्याय महाशयने अपनी इस कलासे समाज और देशकी बहुतसी कुरीतियोंपर बड़ा जबरदस्त कटाक्ष किया है। किताबके देखनेसे मनोरञ्जनके साथ साथ आपको शिक्षा भी मिलेगी। सजिल्द पुस्तकका मूल्य ४)

१४—राम बादशाहके छः हुक्मनामे

स्वामी रामतीर्थजीके छः व्याख्यानोंका संग्रह है। स्वामीजीके ओजस्वी और शिक्षाप्रद भाषणोंके बारेमें क्या कहना है जिसने अमरीका, जापान और यूरोपमें हलचल मचा दी थी। व्याख्यानोंको पढ़कर प्रत्येक भारतवासीको शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। स्वामीजीकी भिन्न भिन्न अवस्थाओंके तीन चित्र भी हैं। मूल्य १)

१५—मैं नीरोग हूं या रोगी

लेखक—प्रसिद्ध जलचिकित्सक डाक्टर लुईकूने

यदि आप स्वस्थ रहकर आनन्दसे जीवन बिताना, डाक्टरों, वैद्यों और हकीमोंके फन्देसे छुटकारा पाना, प्राकृतिक नियमानुसार रहकर सुख तथा शान्तिका उपभोग करना चाहते हैं तो इस पुस्तकको अवश्य पढ़िये। मूल्य ।)